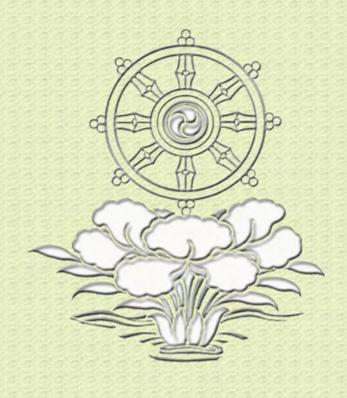
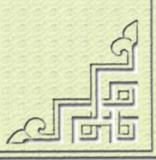


गुणालाक्षर्







र्वेत्र सेदे विषासुर एका सुसा सुना निष्पा ३ ईव् शेदे तिविद्या तीया देट लया देट अक्व ता अविश्व रादे ५ वित्र सेवि क्षेत्र निव्यत् निव्यत् निव्यत् निव्यत् । अर्थन् । अर्यन् । अर वित्रभेते कु मार पुत्रसमेन अप्याप्त प्रिक्त के अपन्त्रम्था ।... 10 ﴿ व्वासी अपी पो पार्चि अपाय मुख विश्व प्राप्त विश्व वि गहिरामा वित्रसेरानें प्रिया है सूर नविराहुण। 18

८गार क्या

१ न्वरमामम्यान्दावस्याहेन सर्गा वर्गम्याहे सुरामहन	វា.
শ্ব:মা	18
ग न्हेंबा	18
দ্ মন্ত্ৰ্ব্ৰ্	21
१ धि'यो'याश्चर'य'त्या क्षेत्र'दर्वी श'यदे क्रेत्र'दर'हे सुर क्रेत्र'या	22
ग र्देशःग्रेदिबा	22
দ্ মন্ত্ৰ্ব্ৰ্	24
দ্ মন্ত্ৰ্ত্ৰ্ত্ৰ্	26
< र्वेत्'सेवे'नङ्गरा'र्केश	28
ग न्हेंबा	28
দ্ৰ মৰ্থ্যসূত্ৰ	30
५ र्वेद्राधियमुर्केश	33
यशिषात्र। श्रेषास्यामाजी त्योकात्यामाम हेटा यापामा छेत	
दम्दादः विग	37

7
7
3
4
5
7
7
3
3
3
3

न्गार क्या

দ অপ্তর্ভ্র্ম
३ कु र्वे ५ भव श्रु र खे श्रू ५ श्रू र यदे ५ वे र या
হ্বশ্যা ব্রমুসপ্রশা
শ বৃইশ:গ্রী:ব্রা63
[จ.ฆฮ๕.2ฮิ2.ฆ]
বর্ব'না ব্র'ন্ট্রমে'নাশ্রমে'ইশ্র'নাশ্রমেনর শ্লুন্থা 67
শ ব্ইশ:ক্ট:ব্ৰা67
দ্ৰ অপ্ৰব্যব্ধা
নাৰ্ব শ্ৰেনাশ শ্ৰানা শ্ৰ
रटःख्यार्यावयाःया
বক্সুন্ধা বাশব্যন্তিন্ত্ৰন্বাধীশান্তীন্ত্ৰীনেই শ্লুন্ধা 87
१ মই্ম্নশ্ব্ধ্ব্যা
৪৪ ক্র মান্দ্রপূর্যা
ग र्देशःग्रेदिं।

न्गार :ळवा

দ্ অপ্তর্গুর্'শ্।	92
३ श्वारायष्ट्रवायाहेरा	93
ग ५६४:ग्रे:५४	93
দ্ৰ মৰন্দ্ৰ্দ্ৰ্দ্ৰ্য	94
र्गु'न इस'र्डे'र्र'क्षेग्'स्र्	115
१ इसर्हेदेर्ने र्नेन	115
१ केंग्'इन्'ग्रे'र्नेन्	121
हेश.पर्या.ज.धूंश.सप्त.स्र-यावय.रचर.क्या	125
(9) अूर'न्डू।	125
দ্ৰ মন্ত্ৰত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত	125
(१) वर् न्त्र	128
ব প্ৰথ: ব্লিব্ৰা	130
१ ग्राव्य भ्री : প্র্যাশ : শে ই্রাশ : শে রূ হ' না	130
१ रट:र्ह्से र पळ अ परे रे रट सुग्राम अ ग्वावि ग र ग	137

न्गार क्या

নত্ত্যা ঐপ্রেক্সি:ক্রমন্ত্রী	151
নত্ত্যান্তিনানা গ্রিব্যমন্ত্রা	154
नडु'गहेश'मा केंग'कुन'न्र'सुन'मा	155
ग न्हेंबा चित्र	155
ব শ্বর্থ্র্র্রা	157
বহুনাধ্যমানা দ্বনানহমা	159
ग न्हेंबा	160
ব অপ্তর্ভ্র্ম	161
নত্ত'নন্ত্ৰি'না দ্বীন্'শুন্	161
ग न्हेंबा	
ব শ্বর্থ্র্র্রা	163
বর্থ-বা বর্হ-বিধ্যা	164
ग र्देशभेर्देबा	164
দ্ অপ্তর্ভুন্না	167

न्गामःळग

नडु:५्रमाया इस:५३:नकु५:यर्नि५या	75
ग र्देशःग्रेःदेवा	75
দ্ অহন:ব্র্র্না	76
न इन्तित्व हे अत्वह्मान्यः भे व्हें अन्ति स्वतः स्तिन्य उत्ति क्षेत्रा . 17	78
वे ञ्च न १ न १ न १ न १ न १ न १ न १ न १ न १ न	78
ग र्देशभ्भेदिन्।	79
দ্ অপ্তর্ভুর্খা	30
নর্ষ্ট নক্ত্র ন্য নুদ ক্রা	31
ग र्देशभेर्नेबा	32
ARR'555'71 18	33
नडु'न्गु'न ने'ञ्चा	35
ग र्देशभेर्ने	35
ARR'555'T	39
हैं जु न न न न)1

न्गरःळग

हेर्याडेवाया वर्वाञ्चा	193
ग र्देशःग्रेन्त्।	194
দ মহন্মুস্মা	197
हेर्यहेश्या र्यायाञ्चा	201
ग र्देशःग्रेदिब	201
দ্ৰ মৰন্দ্ৰ্দ্ৰ্দ্ৰ্	202
शुया दुःनदेः या नद्या शुया या नद्या नदे । श्रुप् : यह्या : यवदः	
वर्देर'नर्गेर्'या	206
यशिष्रात्र। श्रिष्ठास्यात्राजी त्योकात्यायात्रमः हेटा ययात्रा छेतः	
दगदः बेग	206
१ र्श्व त्री प्रमेष प्रमेष मे	206
१ हो अ'ग्री'वर्षोव्य'न'ग्राश्चर'स्रवे'ङ्ग्रीम्	208
३ शुस्राह्मारान्दायत्रेयानवे न्यायीयान्दायीयो वे नश्नाया	
ন্যবাধ্য হব শ্লুম্	213

न्गामःळग

र्वेत् सेदे वय सुर यश ह्वाश ग्री यह्वा राज १५ राष्ट्रा 218
८८ हें प्राची श्री के किया मार्थी के किया मार्थी किया
ग र्देशःग्रेदेब्।
দ্ৰ মন্ত্ৰত্ত্ত্ত্ত্ৰ
বান্ট্রমানা ই্রেনেইবান্মী:ইবার্মান্মীনেইবানা
१ भेट ज्विष्यशर्भे व हे शरी पी जो प्रमुट खुया
৭ ই্ব'দেছ্বা'দী'দ্বাশ'শ্ৰী'বৃত্তী'বা
३ ই্ব'ন্ট্নানা, ইনাশ্নানি, নিট্নাজ্না
ग भेरामी क्रें वशासर्रे राम्रह्म राष्ट्र
वि वारायायह्वायाद्रायादावीयायह्वायायाः भ्रवःतुः वश्वदःया 230
ग वर जुर से पहुंग पदे छुंय प्रश्नुव पा
বাৰ্যুম'না ঐ'নীই'শ্লু'নাব্দ্ম'শ্ৰী'ক্স'নাৰ্না
ग र्देशःग्रेदिन्।
দ্ৰ মন্নদ্ৰন্ত্ৰন্ত্ৰ্য

न्गरःळग

यवीय। र्श्वरद्यायः प्रतिश्वराधियः स्वितः स्वितः स्व	. 244
ग र्देशःग्रेःदेवा	. 245
দ্ৰ অপ্নত্ত্ৰ্ত্ৰ্ত্ৰ্	. 248
ध्या नद्रनाम्नव्यत्र्रभमाशुस्रामी में दिना	. 256
ग र्देशःग्रेदिन	. 256
দ্ৰ মন্ত্ৰত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত্ত	. 258
र्याया शेरहशनमें द्रायदेर्दिन्ये रावहें द्रायाया के विदेशें राष्ट्री	
ব্রীশ্যনপূচ্য	. 262
नर्वाम र्यायुयाची यया कैंगा वर्यानरे हिर ही हो च्या	•
र्वेर-तु-वाशुय-र्-र्न्ते-वा	. 262
नकुन्ना भे विन शुक्ष दुवे दे नवे हैं नक प्रकार के वा वी देव	स.
देग'रादे:इयःश्रुॅट'न	. 264
वरायासुपविदेश्चित्रभारेगापदेश्चयार्श्चेराम।	. 268
<u>र्गु'न हे अ'दह्ना'गे 'ह्नाअ'ग्रे'दह्ना'म </u>	. 269

न्गारःळग

१ हे अप्दर्गामी ह्याअपी प्रिंग्या	269
ग र्हेंशःभ्रेः र्नेब्	270
দ্ মন্ত্ৰত্ৰ্য্	272
१ हेश.पह्यायी.स्याश.गी.पह्या रहेला	273
ব প্রধ্ন বিশ্ব না	275
नडुःन। हे स्ट्रम् तह्ना मायश श्रुते तह्ना रहेता	276
ग न्हें अ'ग्रे'नें ब्	278
ব প্রধ্ন বিশ্ব না	280
र्ने व.मी.पर्या.क्षेत्र.सर्ने स.च क्षेत्र.स	282
मुश्रासरावन्द्रासायशस्याम्। स्रूराव्युराक्ष्यावन्द्रायाः।	283
ग र्देशभेर्देब्	283
ব প্রধ্ন প্রথ	283
मुश्रासराम्वरासायशास्त्रीः सामाराष्ट्रराद्युराकुषाम्वराम।	289
१ श्रीट्रास्त्रवराय्ट्रेव्यक्ष्या	289

न्गार क्या

ग र्देशःग्रेदित्।	290
দ শ্বর্থ্যা	291
१ इस-२ हो : श्रें ग्राथ वर्डे द : र्कु व्य न १८ : या	296
श्चेरपदेवरढ्या	296
वरःयाश्रेशःग्रीःवह्याःकुषाःवशः इसः नृत्रीःयारः वह्याः यश्नरः	າ 298
इत्.ग्री.वर.योश्रश्चार.वर्ष्या.चलर.स्रा	299
वडुःविवेवाया हेरायह्वाः इस्रायन्विरायः वेदेः भ्रेर्यः वह्वाः या	301
ग र्देशभीर्देब	302
দ অহন:ব্রুব্'না	302
नडुःगहेशःमा धिःगेदेःवह्याःमःश्चेदेःन्वेशःमा	306
ग र्देशभीर्देब	307
দ্ৰ অহন্তেত্ৰ্ত্ৰ্ত্ৰ	308
नडु'न शुअ'म। हन अ'यह्ना'मी'न बुट'नहअअ'मदे'न्में अ'	4.
८८:२मे:४र्डे	310

त्र मृत्याय श्रुत्र स्वत् श्रूत्र स्वत् स

शेर-श्रूद्र-द्रसर-व्रह्स-द्रमुद्रस्य-वर्शेद्र-द्रस्य-ग्रीश

รุ่มเลี้มเลิงเหลี่มเมเลี้มเลเราที่มเลเรา ผู้รุ่มเลิงเมราร์เล็นเลี้ม รุ่าสู่เลเรา marjamson618@gmail.com २०० । यारमः उत्तर्ने प्राचित्र श्रीतः प्रदेश प्रस्ता विष्या श्रीतः विषयः विषयः

र्वेत्रिते विषासुरायमा सुमा सुमा सुमा सुमा

२०। प्रिंग तहें व स्वर स्वर मार्डे प्राये प्रयोग प्राये स्वर मार्थ प्राये प्रयोग प्राये प्रयोग प्रयोग प्राये प्रयोग प्रयोग प्रयोग प्रयोग मार प्रयोग प्रयोग मार प्रयो

श्चान्य विश्वान्य विश्वान्य विश्वान्य श्चित्र विश्वान्य विश्वान्य

र्ने न्रि: भून न्दर अधुव सदे थी मेदि मा बुग्या।

यादः यो। अद्येतः स्वाः अर्के वेः सुदः प्यद्याः यादः यो। अद्येतः स्वाः अक्षेत्रः सुदः स्वाः अक्षेत्रः सुदः स्वाः अक्षेत्रः सुद्यः सुद्याः अद्याः अद्यः अद्याः अद्या

न्द्रिते न्यानुत्य न्यते हिं न्यान्य स्थान विष्य स्थान न्याने स्थान स्थान स्थान न्याने स्थान स्

ने श्चन र्ख्यायने मायह्या पर्दे न प्रदेश क्वें या अया श्वयायने मायह्या पर्दे न प्रदेश

क्षेत्र'सेट्'र्ट्न्र'त्र'त्र'त्रेर'त्रेत्र्य्य'त्रर'सेट्न्य्य नहःर्सेट्र'क्कु'सर्केट्र'र्ट्न्य'नर'सर्हेट्या

न्दःस्। शुक्षःह्याकाः अह्दायाः से स्त्रीयः देवः से दे से ते से ते

१ र्नेन्धियाःयाश्वरःवर्जे होन्द्रमें श्रायदेः क्रेत्

त्याची त्याची साम स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स्थान

भ्रुं अः यह न्द्रिक्ष व्यवस्थ विष्ण विश्व अः स्वे न्द्रिक्ष विष्ण विश्व विश्व

१ विवासी कुष्पार पुष्पार पार्थ था

र्ने न्याप्यान्य न इस्यान्य ने न्या के या हो न्याया स्वान कुं या ही । खुरः अर्दे अपिरः वः कें रेरः द्वरः कुषः कुः धे वोवे व वदः धरः वर्गे दः धः धूरः वा नेवे के र्सेव सेवे अर्के गायम र र्सेट न र व पुरा सुट गार्थे गान्य न र व र यक्ताम्रान्यस्तुः भी मो क्षेत्रानु निष्य निष्याम निष्य मा शुर्या व नार्षे ना स्वा के र त्या श्रा कु सावर्षे द प्रश्ना श्री वना र र र हि द ग्री र प्रके । नर-र्नेग्रथःत्र्यः सूर-र्येग ने न्यार्श्वर-नर्यन् श्री राय्येग्यः न्यार्थः म्य श्रेश्वरम्यम् अविश्व नुप्तिः तुर्धे प्रर्शे व्याप्ति वाष्य हिन् कुष्म राष्ट्रिय गे र्रें न हु रहें शुन न सा से शुन है सा सा स्वा केंद्र से सा स वि सद कर है या भे बुन हे अ श्रॅम नड व की नगद नम्म नुम अर्थे । । ने व अ से हिये अर्थे । श्रेश्वान्त्र व्याप्त विश्वानी श्रिक्ष विश्वानी वरान्स्वाप्यान्य द्वापिरात्यायार्वे स्वाप्तायात्रे स्वाप्ताया स्वाप्ताया स्वाप्ताया स्वाप्ताया स्वाप्ताया स्वाप नमयाश्चेतानेनाने तासा केता वेता मान्या प्रक्रमा श्चेता में प्राप्त स्वाप्त स्त

३ वित्रिक्षेते प्राप्ति प्राप्ति प्राप्ति । प्राप्ति प्राप्ति । प

र्श्व क्षेत्र र्शे नाय क्षेत्र क्षेत्

यप्रयायायया कुरम्रान्येयायात्र्या कुरम्रान्येयायात्र्येयायायायायाया ममा र्वेद्वासी अंति स्वर्धासी स्वर्धी स्वरंधी स्वर्धी स्वरंधी स्वर्धी स्वर्धी स्वर्धी स्वरंधी स्वर्धी स्वरंधी स्वरंध षरःन्याः प्रश्ने नेन्नि स्यावियाः नेन् छे या प्रवे सून्नेन् प्येव हो । विया निवेद्दी विवादिविवायीया क्रियास्त्र दिशेषास्य अस्य क्रियास्य स् वर्त्रोयानार्केशासकेंगा डेशासह्दारार्धेवे सक्तान्त्रम् नार्वेशायादर्ग्नाशा यदे श्रेंवा धें न्या निवाता वरे राधर शे इ द्वसारा सह इ द शे ग्वा ह नवर में दे क्रेंन नमें द शु शेवे अळद धेद माया तुर्या ळ न थ्व थेंन ने। शुअ-इ-प्रति-इ-प्रदे अह्ग-ह-तु-ग-र-ह्दे इ-प-पक्त-प्रायशग्रुद-ह नवर सेंदे तु गार ह दर सेंदे भूनर हे खू नर्दे विश शुन न स्थानवर मे शुक्षा दुः नवे विशेषा न न सूक्षा पवे र से कि से मान में न प्राप्त स्वा ग्राक्ष स्वार र्रे विरामार्स्स्य नर्रे दार्रा सक्त दुर्गार्थ । विराने रार्ने । वाराष्ट्ररः र्वेद्राक्षे:८८:ब्रु:क्षे:वेर्य:वर्षेत्य:वर्षेत्र:गाःसक्षेत्र:द्रदर:देर:यट:वेद्र:वेर्य: वर्त्ते न दे न मार्थे के दे।

< वेत्रधेशःकुःग्रानःत्रशःश्रुत्रःशःशहतः

दे 'व शः र्चे व श्रे क्वा प्राच्या प्राच्या व स्व स्ट्रें क्वा क्वा के स्व स्ट्रें क्वा के स्ट्रें क्वा क्वा के स्व स्ट्रें क्वा क्वा के स्ट्रें के स्ट्

वश्याचारियाश्चर्याश्चर्यात्रायश्चर्यात्यात्र्यात्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्या

र्ने न्यान्याम्ये न्या के या त्री न्याया सून क्या या स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित ग्र-र्-त्रहेंवानवे हे अ शु कु ग्र-कुवाने श्रव्याय वा निव्या वा वा निव्या राषान् भेर हो ने या द्वार है निया स्थानिया से दायो हैं न देश है न त्या रा वयार्वे नर्तर्त्युवे नस्व नर्वे या इसया क्षरा नरा नस्वया । प्रापि क्रिंग्नो न न दुवे अर्दे प्यट क्ष्य देट न सून्या वेय प्रमुद्दे । दिन हेर र्देग्राश्वरागर्वेव वृते प्राय र्हेव प्राय गर्देश गरी मेर विप्राय से र विप्राय से र विप्राय से र विप्राय से प्र शुअःह्रम्यार्थः द्रमेषः न्त्रस्यर्था धिमः रेम्यराशुसः नकुः रुमा दुः सः नविःषः बुर्यावेयायंत्रे भी में र्वेरावरायर्विते। यर्रे कुळेरारेयाययाययाग्ररा लेगारेग्रार्ग्य दुर्गा दुः इति विश्वरासे विदुर्ग्य सास्य स्थान कु खूर्या दे विश्वरायः विगार्गे सूसार्थे । श्रुग्तिः सूर सूत र्श्वेत से विसायि दिने हिरान विगात विवाधी क्रु ग्राम् १५ विवास १५ साधिया मेग्रास १५ १५ इत्या विवार्ष सार्धि ५ प्रमा नन्द्रभूटर्टेग

५ वित्र भेषे सून प्रेंत मी अर्द्ध वा प्राप्त मा

र्वेद्राधिरःश्चित्रं श्चीः अळद् त्या थे ने गाम थे ने द्वा थे नाय ने ह्वा थे ने नाय ने ह्वा थे नाय ने ह्वा थे ने नाय ने ह्वा थे नाय ने ह्वा थे ने नाय ने ह्वा थे ने नाय ने ह्वा थे नाय ने ह्वा थे नाय ने नाय नाय ने नाय नाय ने नाय ने नाय ने नाय ने नाय ने नाय नाय ने नाय नाय ने नाय ने नाय ने नाय नाय नाय नाय नाय न

य्रश्रॅंबरळ्यात्वीट्ट्ट्ट्ट्रा नेयाच्चरःश्रॅंबर्ट्या ट्र्ट्ट्र्याच्चरःश्रंबर्जी य्र्याच्याच्याच्याःश्रंबर्जी याच्याच्याःश्रंबर्जीः व्याच्याच्याःश्रंबर्जीः व्याच्याःश्रंबर्जीः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्जीः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याचःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंबर्णेः व्याच्याःश्रंवर्णेः व्याच्याःश्रंवर्णेः व्याच्याःश्रंवर्णेः व्याच्याःश्रंवर्णेः व्याच्याःश्रंवर्णेः व्याच्याःश्रंवर्णेः व्याच्याःश्रंवर्णेः व्याच्याः व्य

र्विट सिष्याम्य मान्य ने से मिन्याम्य निरम्भा

वेशक्षे नेत्रम्य वित्रक्षे नेत्रक्षे स्वर्थक्षे स्वर्धक्षे स्वर्थक्षे स्वर्थक्षे स्वर्थक्षे स्वर्धक्षे स्वर्धक्षे स्वर्थक्षे स्वर्धक्षे स्वर्धक्षे स्वर्धक्षे स्वर्धक्षे स्वर्धक्षे स्वर्यक्षे स्वरत्यक्षे स्वर्यक्षे स्वर्यक्षे स्वर्यक्षे स्वर्यक्षे स्वर्यक्षे

चश्रवायि द्वाया क्षेत्र क्

८ र्वित्रियेत् कुष्प्राप्त्र प्रम्यायेत्र अप्याप्त्र प्रम्याप्त्र प्रम्याप्त्र प्रम्य प्रम्य

र्चन्।(४३३)र्चन्थ्यः मुःगरः ५:ळशः यरः यन्। देःश्वरः वः मुःवगः योः श्वरः दर्धनः घटः यटः सुः यः श्वेः योः द्वाः यमुः हेरः द्वाः ये राघटः अवः वशः योः ध्यः यमु ५:देः मुःगरः ५:ळशः यः यशः योः यविशः यश्वेशः यः दंशः स्वाः विशः योः योः योः

य व्यासिक्षेत्रस्थान्यस्यस्य स्थित्रस्य स्यास्य स्थित्रस्य स्थिति स्यास्य स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्यासि स्थिति स्यासि स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्यासि स्यासि स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्यासि स्यासि स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्यासि स्थिति स्यासि स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्थिति स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्थिति स्थिति स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यासि स्यास

दे'त्रशङ्क्षित'द्रित'थे'त्रित'य'र्घेत'श्रेश'ग्रोशेर'त्री'यर्घेत'यर्दि नठश'नगृदद्देत'ळे'नदे'ळेद'न्द्रित'त्रुश'यंत्रे'यदे'यूर्

त्रवाश्वायात्रवाश्वाश्वायात्र्या वित्रक्षा वित्रक्षेत्रक्

वनरा नेरा नहेरा है । के सेर निया र्श्वेत्रयम्यान्यान्यते सुरायोगान्यम् श्चाळ'र 'धे 'यो दे 'हे 'ह्य 'न्या वर्त्ते निवे सारी मा सुन मा से वा नदे न्यायाया धेद ग्री कु सर्वे वा रेग्'यः र्ह्सें खें कु ख्रु वर्षेर्। र्श्चेत्रायमान्यान्यते कु.चुःभेटा। शुःळं ५ 'धे 'मे दे 'में ५ 'म् न त्या या। वर्त्ते नवे न्तुय में हमा सेया नर हो ना রনম:প্রান্ট্রমাগ্রী:অঅনা ক্রুমা नक्ष्मरा ने राधें द 'हद' से 'हें या 'न्या श्च-ळन्योदेव्यक्ष्यः श्चित्रा नन्ग नेंद्र ग्रे क्रें क्रें केंद्र के ला। अ. खुर्यायादर प्राच्यायाया यह वाया कु ग्रामः खुवान् दे विवास खेवा थॅव न्व नावे सथि नो थेव।

यास्यार्विटानु कुन्याधिवा र्ने ५ : भुवा ५ तु सा सु । वर्ते । नः भी द्या कुषार्वेशप्रवादार्श्वेवासह्याप्रेवा। मुयाश्चित्र केंशानवित्र श्चिताया कुषानिसान्तुःसह्नः द्वितायनदसाय। श्चाळदाधीयो श्वेत्याचाधीव॥ गुद्राया कुषायर हो दाया धेदा। व्यायायाय प्रमाया संस्कृत्या यदे स्था। वेश व्याप्त्र नगर देव हेश शु द्व पर द्व श शी ने नशर्ने ५ र वि र लेंग पर श्वरी ना परे नश्वर नहें शर नश्चन श क्षर्भी कुर्ने प्रमा पावन पर्भाभ सेन सें के दे में म सर्भे न स नर्गेर्या श्रुवःरशःग्रीवेगशःग्रीःसर्रेः क्रूर्वेः श्रुः श्रुः ग्रिवा द्योः न्याव्यः यर्ने त्यार्शेवाश्वापते कु न्यो इस्रश्वाण्य वान्त्र न्या स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र यविश्वास्तुः न्याक्ष्यास्त्रीयवायायास्त्रुयाक्षयायय। कुष्याराक्ष्यास्यास्त्रीरा नर्दन्यः भ्रेशयनः र्वा सर्रे से प्रोत्यकेवा श्वेता प्रायदे केशय हैं। नगरमें। गर्वगर्हेर्द्धा सेन्यी ग्राह्म केन्या हिन्तु गी हु लेस य सुद रुस व्याविषा प्रश्नादित् वाश्रवा न विषा न उश्चान सुन्य न वश्च स्था विष्य ।

नदे नर र्जेंब रेश वर्ज्य दें।

﴿ र्वेद्राधेशाधीयो नवेंद्रश्रामाया कुयार्वेशान्याया क्रेंद्रासहनाया

देवे के श्वें न देव के शे शब्दें न त्या के त्

र्वित्र स्वाप्त स्वाप

वेशन्त्रन्त्रात्ते ने वित्रे के ने निर्दे के निष्ठ के निष्ठ ने निर्दे के निष्ठ निष्ठ ने निर्दे निष्ठ निष्

द्यं क्षेत्र क्षेत्र

क्वें चे र्कें सार्थ या निवें सह न विन् नुरा क्र्या.रचिर्याल्या.स्ययात्रात्रात्रात्रात्रात्रा कुः धेवाः वृः न दुः नयः यः दे॥ र्वेद्राधिवाशुस्र दुरावाह्रदायायवा। रट.श्रापश्रायंत्रे हेश.क्रेशः ह्यें ख.क्रा वस्रवाणें व न्त्र प्रसम्भाग्य निर्देश किया रुषाराष्ट्रार्वायायाचे साम्रीता धुवासवदाविनार्वे न् ग्री मुवावस्य वर्षे मा श्रे अप्रश्ना स्रोत्रश्चित्र संभित्र ८ सुन मारोयानदे ह्यून से पोन्। हे कुषार्ने हे ह्वेदे खुषान् नत्नशा मैंग्राश्चित्रचेते वित्तरार्ध्या सेत्। र्नेन्।वानाउदारावेः क्षेत्रस्य साया। र वित से नगद देव से केदस्य

बेशन् भूत् श्चर्यात्र श्वर्यात्र श्वर्यात् श्वर्यत् श्वर्यात् श्वर्यत् श्वर्यत्यत् श्वर्यत् श्वर्यत्यत् श्वर्यत्यत् श्वर्यत् श्वर्यत्यत् श्वर्यत्यत् श्

बेद्रःधरःशुरःहैं॥

वित्रिक्षेत्रेयात्र्यक्ष्र्र्ये

विवासी सर्धे विद्यास्य सर्वे सर्वे स्वयं ने देव स्वयं से स्वयं है स र्मेर्प्यमण नेवेर्भ्रमनेर्प्यमण्डम नेवेर्भ्रमम्बर्ग नेवेर्भ्रमण्डेर्भ सु:अ्रमा यदे:इस्रम:द्ग्रांट:क्रॅं:चक्कु:ध्रुवा:रे:चल्वामा देवे:श्रम:वर्शेट: वस्रशः मुखार्चे देवे स्र्यामुखार्चे द्वावा देवे स्र्याहः सम्रीव मुखासळवा देवे श्रम्हें हे नग् नेया वदेय द्या युव स्मान्य स्वर्भ हो ची गुव द्या वहें मुँ अ.ग्री.विचयायापीरियोया देयार्ट्रें र.भ्रियार्चेदे र्चेट्र.चेह्र्ट्याययायया गाम्बद्धिन्द्रिन्द्र्यत्न्त्र्भूषा देवे श्रुष्णन्द्र्यत्निव्ह्र्या वदे मेंद्रिया य्यायायाम् यायळवाचीयायवियायाचीरार्याराची हिरार्येव र्यायाञ्चीया नेते.श्रशःक्रियःचःनेशःस्य। नेते.श्रशःन्येवःक्रेवःच्ययःश्रा वनेते.श्रुःकेः क्रॅन्-वःगॅन्-अःग्रन्थःयःवर्द्धनःग्रद्धशःधनःक्रुनःन्धेदःकेदःन्नः। र्वेट्ट्यारः हेट्ट्यें व्राचीः वीत्र्या बुट्ट व्रवेषः नुः वाव्टा श्रुः के श्रूनः वा <u>ॿॖॎ॓ॴॷॸॴढ़ॴॸज़ॱॸॖॗॖॖॗॸॱऄॗॱॻऻॴॸॱॷॻऻॴक़ॕॴऄॗॱज़ॕॸॱॸॗग़ॸॱॾॕॱॾॆॱ</u> गन्वाग्रम् न्त्रां वर्षे व्यान बुद्द न्त्रें व्यान स्थारा से नायम मुनःभः वेशः गुःनरः ग्रामशः वेटा मुखः द्वरः खः नः र्से व वटः मुः सर्वेदेः दुशः

शुःष्परःक्रुतः से ताम्रमः क्रुताभुः सके दारे या वावायायाया उत्रेर्भे वायायायायाया

गिरेशमा र्वेदासेशमें प्रमाद्वास्त्रमार्वेशकुषा

१ न्व्रम्यायाययः न्दर्यः हेत्यर्यो यर्ने वायः हे स्ट्रमः याह्रमः याद्यायः स्ट्रमः

ग नर्रेशःग्रेःनेत्

हानाहानि क्षेत्रियामाया अवदायाणीया इसमार्चन क्षेत्राचीमायाचीन होता अविं नर-दर्गेरशन्यन् रिन्वार्देर-नश्केर-नश्कानीः।वर-वेद-वाक्षेत्र-न स्तिन्। ठःकः हः न्दः लः वः वः स्रे न्या नासरः न् नसूतः स्रा हेरः न्या न्दा र्नेर्धिनानी अन्यश्रायेन्य शुर्येन्य सुर सुर गूर्ये दे र्सेन हु तुन्य सप्टर यक्षयः श्रें रःतः श्रें वायः न् श्रुट्यः धेवाः वीः श्रुः वः नश्रुवः तुः येनः यथः वः । धिवा वार्यया होत् श्री सबर सुर द्रायायया होत् सुस दुर वर्षेया हे द्राया <u> या.र.य.स.ष.क्रे.क्र्र्यत्द्या.क्रीया.र.र.य.य.स.ष.स.क्रे.ह्रस.पट्या</u>. नड्य दःशः श्रेष्पदः वहुमामहिशा दःयः श्रःश्रेषमे उदः मश्रुमा पःदःयः सः क्रें पर्देग्र रहत निवे क्र स्थान्त्र मान्य पान्य प्यान्य राज्य स्थान ळ'इ'स'व'ब'ष'भु'फ्'क्षेषे भेदे'मेर्डे में हे भू। मान्नस्य सहे भेदाह मडेशमदिखे में खा मामाक महादाव विकास महामा कर ही की महामा कर ही की महामा कर ही की महामा कर ही की महामा महामा महामा महिल्ला महिला महिल गामाप्तरहाहाकुप्तरायायायायायादाहायाकुरे स्रोत्येषीयो यहातुमा गामायाया रायासा है। सदी पी नित्ता रायासा है। धी नी ग्रावा ही। सामासुसा गामाना बार्से या धेना र्से रा ग्री सानि वि कार्न से या धेना र्से रा ग्री मुं या धेना से रा वि सा वि सं से र राधियाः र्ह्ने या ग्री प्राचित्रा विकाश्चायाः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्वयाः स्वयः स्वय अ.यु.याट.लट.श्र.युट्-इट-स्ट-श.यहें व.रायु.ली.यो.युड्। या.य.क्रे.यसुव्य. हेव यानु या नाया हो न कि रागुव कु कु निये थी यो या है या माना स स कु ह स इ.स.स.इ.इ.हे.र.अगू.२४.५५०। स.स.क.क.क.क.स.स.स.क.क.स.स.स.क.

B.च.श.श.श.श.के.ल.चेंचेब्य.चरंची या.घ.च.ट.ब.ट.श.स.च.श्र.ट.क्रे.ट. नन्ग्रान्ड्यांडेग सासासासासास्रास्रास्रास्रायान्य्यायान्याद्या बु-दु-तु-तु-दु-हे-स-नहनारा-नड्-नहिर्मा मी-त्। त्र्येट-तु। इ-दु-हे-हेट-द वि.क्षेर.क्षेट.च.चाश्रेश विचश.की ल.चेंचेश र.चेंचेश.हे.क्र्यांच.चीटेंच. सूर्यहें अपायाशुमा सर्वे सेट्यूट्यूट्येट्ये थे यो याडेवा डेअप्ट्य माल्य प्यत्। न्युरुष माले प्राप्त न्यु प्रिन्। न्यु प्रमा न्यु माल्य प्रमा न्यु माल्य प्रमा न्यु माले प्रमा न्यु <u> ५८:क्र</u>ेव:क्रे:धे:वो:५८। अ:वे:अ:५८:व|अव्य:क्रेट:क्ष्रवा:अ:वेर:५त्व्:वे:य:५८। बुर्दरम्बद्दरश्चीर्द्रभेदेरथेरबेर्च्याचेर्त्वरखेरथेरबेरबेश्चरवाद्दर्भ ह्वाकर वह्याः भ्रम्य शर्शः या श्रयः नः व्यूनः विर्धे संविद्यो । यो विर्वे विश्वा अःश्वरावात्राम् द्राचित्राची श्री वित्र वि र्शेनाश्चार्यः श्रुत्र्यीः इस्रान्वना कः कंटा निवासरान्त्रे सारान्यायाः श्री

प अन्यत्युर्या

मुयार्वराय्यार्थयास्य दार्ययाः नार्ययाः वार्ययाः मुद्रायाः स्यार्थयाः स्व यास्त्रम्भार्षे प्रकृत्र्र्त्यं द्वात्रम्भ्याश्चित्राहेर्त् प्रकेषार्थे । विश्वाचेर् वर्दे त्या हे अरशु र रामा रावे रहुवा श्री अर नहमा अर वर्षे वर शे र्वे रहा रा ळेव र्ये त्य तु रात्र वृत्ता ये त्य प्राप्त त्य त्य स्था र्ये त्य राये प्राप्त स्था त्य स्य स्था त्य स वर्त्रे न्वें रायदे श्वाराष्ट्र के दार्य न विवाद् से न या दे न न रायद्वापर र्विट मी अ र्वेट धिना ही दश्यान्त्र त्यायन तु शत्य श्वार्य ख्या दि । र्शेग्रायान्य वर्षाया वर्याया वर्षाया वर्षाया वर्या वराया वर्षाया वर्षाया वर्षाया वर्याया वर्याया वर्याया वर्याया वर्य ग्रीशनर्देशक्षिण्याम् मुख्यत्याप्तर्वा के प्यरादर्वे दाकु से दासूर्या स्था लट.क्वित्र.रचश्राच्यात्राच्या श.चैतु.ल.चुतु.स.सूर्व्यूच्या यदे भ्रम्मन्य श्रा वा धीना अदे धी नो धीन दें न दर्ग उ ह न निहेश र धीना र्सेश ग्री:तु:गहिराय:नवग:रा-८८। अ:८८:थ:र्स्टराय:हें त:रावे:धी:गोर:नवग: मः इस्र स्थान् स्यान् स्थान् स्यान् स्थान् स्थान्य स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान् स्थान्य रः क्षुः वः नित्राकः के देवाकः नित्राकः के वा सकः अवे धो वो वो वा नित्रान नित्रान धेवाया याधेवायाने वाशुस्याम् प्यान्यम् वाश्वासे नेवासायस्य स्यास्य ८८। द.लुचालाकाकाम्यू २४५ व्याच्या १८८१ व्याच्या १८५१ व्याच्या १८५४ व्याच

त्र्वा न्या वित्र क्ष्म न्या क्षेत्र क्षेत्र

र्श्वेर्श्वर्थाः क्षेत्राः अव्याः क्षेत्रः व्याः व्यः व्याः व्याः

१ धि'मो'ग्राश्चर'न्ज्या श्चेंद'न्में श'रादे में द'न्ने स्थूर' हेन्'र्था

ग नर्रेशःग्रीःनेत्

नर्जे सहर भ्रान्य में र की भ्राप्त स्वाद स यहर्मित्र क्षेत्रम्बित्र श्रीया हिन्याम्बयः हिन् श्रीवार्यया हिन्दे विमा ब्राह्म व्याप्त व्यापत व र्नेत-त्रवर्षे-ग्रुश-पर-ह-हें-त्र-पर्षे-वेर। त्याक्षेत्रशाग्रुश-प्रशाहिक वेर। ने त्रश्र र्श्वेन नर्भेन क्री शक्षे ने दे भून य न सुन पा सहन प्रश्न वर व्हर वेश वःलेगाः र्रेवः दर्गे अः यः श्रुवा अः यः न्या देः चित्रं दः दें द्र अः वे अः य अः यः द्र दा बर्देर्वियाययाबद्दा हावेयाययाहद्दा हे कावेयाययाक्या इस्र में दिल्लीया कि क्रिया देश स्तर में स्तर में स्तर से स्तर से स्तर से स्तर से स यशिषार्या स्रिट्रिवा स्राच्या शिषा यस्त्र विषा स्रित्र प्राच्या स् र्रे विवाषायान्य भ्यापेवा नभ्य स्वायस्य स्वे विक्तुत्र सेवायास्य नर्गेत् पेत् 711

यदास्तर्या व दि दे सु द्वा सु

प अन्यत्युत्या

ने न के मार्ट्स मार्थित मार्थित कुरि मार्थित स्वि मार्थित स्वि मार्थित स्वि मार्थित स्वि मार्थित स्व मार्थित स्व

लेगनन्द्राक्ष्यं क्रुग्रं क्रिग्रं क्रिग्य क्रिग्रं क्रि

ही अर्ग्यो प्ययो पर प्यान् र्य से प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रिय प्रान्त प्रान प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त प्रान्त

चि छ जोन्। शुर्या स्वित्र स्व

गांवाजार गांवाजा॥ गांवाजा॥

प अवदः न्युनः या

प्राचित्राचीश्र ईत्रक्षेश्रणे ने निर्वे स्वर्धेश्रणे ने निर्वे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्धे स्वर्धे स्वर्ये स्वर्ये स्वर्ये स्वर्थ

विकित्रे भी में विकास स्मान्त्र के निया का कित्रे में विकास स्माने के निया के

न्त्रियं के अध्यान्त्रिया में अधि के अधि क्षेत्र में निष्या में स्वार्थ के स्वर्थ के स्वर्य के

यस्र नर्गेर्प्य प्रमाय निष्य मार न्या

विश्वान्यस्य वश्यात्रेष्ण्यावश्यात्रस्य स्थान्य स्थान

षायाः भित्रः भी नित्र स्वायम् स्वतः स्वा क्षेत्रः स्व क्य स्व क्षेत्रः स्व क्षेत्रः स्व क्षेत्रः स्व क्षेत्रः स्व क्षेत्र

र्चित्र श्रे न प्रमानित्र वित्र प्रमानित्र प्रमानित्य प्रमानित्र प्रमानित्य प्रमानित्य प्रमानित्र प्रमानित्य प्रमानित्य प्रमानित्य प्रमानित्य प्रमानित्य

विवासिय सम्मानिका म प्रिंश ग्री 'र्ने वा

यात्र ने त्या श्वानी ।

साम त्रिक्ष मान्य नि स्त्री स्त्र मान्य स्त्र स

प अन्दर्भुर्भा

विश्वाचीश्र श्रुश्चान्द्रम्यश्चित्वत्वाचीः विवृद्धः विश्वाचित्वत्वः विश्वाचित्वत्वः विश्वाचित्वत्वः विश्वाचित्वत्वः विश्वाचित्वः विश्वाचितः विश्वाचित्वः विश्वाचित्वः विश्वाचितः विश्वाचित्वः विश्वाचितः विश्वाचित्वः विश्वाचः विश्वा

हुनानर्दितेषुगार्राहित्राचित्रभ्रवशहेष्यात्रित्राच्या । विश्वाद्या । वृग्यार्राहित्यार्थः क्षेत्रस्तिः भ्रवशहे हित्र इत्यानक्षुद्रश्यायश्चात्रम् । विश्वाद्याः स्वित्याः स्वित्याः स्वित्याः स्वित्याः स्वित्याः स्वित्याः स्व

देश्यः प्यान्त विवाशेषात्र वि

णराविष्ठवाचीया देख्याविष्यां मुख्यालुरादेयान्यां व्याप्तात्वे व्यापत्वे व्यापत्

विश्वास्त्राची मिल्ट मि

स्रामिक्य द्योगायात्रस्र प्रति हिंदि स्रोति स्रोति

५ विव शेदे न शुरु र सिंग

ने स्वर् में निर्मा क्ष्म क्ष

याः प्रमान्य प्रमान्

- १ वः अर्हेना नर्गे दः या
- १ ध्रमार्स्ट्रेट्स्ट्रेन्स्ट्रिन्स्
- ३ म्इःश्रुटः मेरिः सर्
- < वयात्र कुराविमायदे अर्दे।</p>
- ধ্ নতু:বাউবা:বিঅ:ক্রী:বার্নমা
- ६ र्नेतः विन्या शास्त्र
- य द्रेय.वियाश.ही.सा
- র্ম মার্ক্রিয়া
- ६ न्नरःनश्चरःवर्षेरःवर्।
- १० कें.या.क्याया.ग्री.क्रुट्रा
- ११ भेर् निवेदार्दे र तुरे मा बुर भा

१२ श्रेट्से केंद्र में शे न वियान

१३ दें र ने र इस नर्गे र

१ मइ:हेंन्यवः शुः सुन्

१५ धी'मी' दुमा सदि सर्दे।

१६ द्यः केंग्रायद्द्रग्रा

१२ श्हुःसे गाये सर्हे।

१५ कु'तुर'श्रुंकेंग्राराये अर्रे।

१६ सूर न रेंव परि सरें।

२० सळंत्र न मुः इ न मु न न

२१ अळं त रन पेरिया शुरन स्वराय रे अर्रे हे रहे र पारे पार्चे।

यदी त्यश्चित्र वेत्र स्वायात्र स्था वित्र प्रायायात्र स्था वित्र प्रायायायात्र स्था वित्र प्रायायायाय्य स्था वित्र प्रायायायाय्य स्था वित्र प्रायायाय्य स्था वित्र प्रायाय स्था वित्र स्था स्था वित्र स्था वित्य स्था वित्र स्था वित्र स्था वित्र स्था वित्र स्था वित्र स्था वित

गाल्व प्यान्त स्थान स्य

ब्रश्यक्ष्मित्ते त्त्रिया क्षेत्र व्याप्त क्षेत्र त्या क

र्वारानिक्तानित्ति । व्याप्ति व्याप्य व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति व्याप्ति

क्षेत्र-वित्तिः त्राक्षित्र-विद्यक्ष्यः व्याप्त्र-विद्यक्ष्यः व्याप्तिः विद्यक्ष्यः विद्यक्ष्यः विद्यक्ष्यः विद्यक्षयः विद्यविद्यक्षयः विद्यक्षयः विद्यविद्यक्यविद्य

त्याँ न्याने क्षान्याने क्षान्य स्थाने क्षाने क्

यायःविया ययायःविया

धरत्युर्चर्यस्यास्याः सबदेःयान्यस्याः नर्योद्धाः प्राच्यानस्य

नवि'न। शु'रेग'प'र्र'र्नेर्'ग्रे'नर्गवि अ'ग्रार'सर्वि'नदे' नश्रुव'नर्डे अ'यग्राय

ग नश्र्व त्युर्च भी श्वर्ते वा प्रते श्वे क्वर वा न्या प्रते प्रते प्रते प्रते प्रते प्रते श्वर विषय विषय विषय

रवः तः न्ते न्याव्याः विष्याः न्याः विषयः न्याः विषयः विषयः

त्रान्ड्ययानिः न्यान् । स्वान्त्रान्तिः वित्तान्तिः स्वाने । स्वान्तिः स्वाने । स्वान्त्र्याः स्वान्तिः स्वाने । स्वान्त्र्याः स्वान्तिः स्वाने । स्वान्त्र्याः स्वान्तिः स्वाने । स्वान्त्र्याः स्वान्तिः स्वाने । स्वान्तिः स्वाने । स्वान्तिः स्वाने । स्वान्तिः स्वाने । स्व

श्चारि श्चिमा स्वर्ग स्वर्ग प्रति । स्वर्ग स्वर्ग प्रति । स्वर्ग स्वरंग स्

रे.चूर्यह्रव्याः क्रि.संस्थाः याञ्चता स्थाः स्य

वेश नेश लें प्रति क्ष्या मार्ट क्षि के स्वार प्रति क्षित्र प्रति क्षित्र प्रति क्षित्र प्रति क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्

क्षेत्र्रं सहंद्रायां शुं प्रेत्रायां श्री व्याप्त स्वाप्त स्

क्रमाने नहें न निमाने निमाने के यर व्यायाधीय दे। । देवे धेर श्वार्से दे कु ग्राम छे प्रदे ह या यह यय या या धरःक्वें अःया क्वें या वेया चें विया यो अष्येया अष्येया अष्य इत्र व्याप्त स्थूर हैं। वेशन्ता शुर्के रेन्न्न र्मु क्षा क्षेत्र के न्या के स्थान क्षेत्र स्थान क्षेत्र स्थान स्था ग्रीश ग्रामा भ्रुदे ग्वात्र के नार्त्र हु नार्ता गाया भरेत नहें ना आसूर गें। P·यःश्रेंग्रायःयःळे अः भ्रदःळग्रयःयः ददः ग्रेंग्रेग्रः हेंग्रः छ्दः यदेः श्रेंतः गहेरः सः सहर् प्रश्रः श्चितिः सर्हरः सं ने शः परः ने देः कैं ग्रशः व उदः परेः र्शेश्वानश्चरात्रे नसूत्र नर्शेया क्षेत्र निष्णेया क्षेत्र निष त्रे भाषाःश्रीवाशासदेः कः यवाः सहनः श्रूटः है। विश्वासिकाः सः श्रीः है शासहनः यर'यवेर'य'क्षु'है। र्वेर'यावर्रायर'र्ह्हें य'य'वेया'वेर्यायह्यर्यावेर्या येग्रथं कःगान्त्ये दःसरः नवेदःदे॥

म्याश्चिर्याय विद्याय प्राप्त विद्याय विद्याय प्राप्त विद्याय विद्याय

ख्यायायेवाश्वास्त्रः स्वायायेश्वास्त्रः स्वायः स्वयायेश्वास्त्रः स्वायायेश्वास्त्रः स्वयायेश्वास्त्रः स्वयः स्वयः

तुःश्रॅं तः रेतः रेतं किये प्रश्ने प्

यान्यान्यान्यान्य विष्ट्रात्त्र विष्ट्र विष्ट

कुल-द्वद्धः वर्षः देवा चेत्रः वर्षः वर्षः

न्नान्द्रम्स्रस्य दे स्यदः नेदिः केन्।

प्रमुद्द त्र क्षेत्र क्षे

यात्र भारत्वेत् स्वायाः विश्वेत् स्वायाः स्वायाः विश्वेत् स्वायाः स्वायाः विश्वेत् स्वायाः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वायः स्वायः स्वायः स्वायः स्वयः स्वयः

यात्रश्राच्यात्राहेष्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्यात्राह्य स्रम्

देश्वर्तेद्वास्त्राम्याययस्य विश्वर्त्त्राम्याययः विश्वर्त्त्राम्याययः विश्वर्त्त्राम्य विश्वर्त्ते विश्वर्त्त्राम्य विश्वर्त्ते विश्वर्ते विश्वर्त्ते विश्वर्ते विश्वर्त्ते विश्वर्त्ते विश्वर्ते विश्वर्त्ते विश्वर्त्ते विश्वर्ते विश्वर्त्ते विश्वर्त्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्त्ते विश्वर्ते विश्वरत्ते विश्वर्ते विश्वरत्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वरत्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वयत्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वर्ते विश्वयत्ते विश्वयत्ते विश्वयत्

না প্রুমানারাপ্রমানারা

यदी सहदारा में जि भी में हैं हो हो त्या सकता ही खें ता यह ता के जी के भी जि के भी जी के लिए के लिए

द्रात्त्रेयः नदे से द्रात्ते व्याप्ते से स्थान के स्थान

८ धे.चो.चय्यचा.घचश्र.चेश्वा.घ.चटे.खेचा.घ.द्वा.घाडा. दखेला

श्चित्राची स्वास्त्र स्वस

वर्षामानियाधिवर्दे॥

म्बित्रायाः स्वान्तः भ्रीत्रायाः स्वान्तः स्वान

थ्रःया अळवःर्नेवःश्चेःश्लयशा या प्रेंशःचेवा

सुः पानः भूनः त्रा व्राणानः व्यापानः विष्यापानः व्यापानः विष्यापानः व्यापानः व्यापानः विष्यापानः विष्यापानः विष्यापानः विष्यापानः विष्यापानः व्यापानः विष्यापानः विषयः विष्यापानः विष्यापानः विष्यापानः विष्यापानः विष्यापानः विष्याप

ने स्वराधित्रीत्र विश्व विश्व क्षेत्र क्षेत्र स्वराधित्र क्षेत्र स्वराधित्र क्षेत्र स्वराधित्र क्षेत्र स्वराधित क्षेत्र स्वराधित स्वराधित

ग्राम्य व्याप्त्र मुद्रास्य के म्राम्य मित्र मित्र

वेशमः दश्

ठेगा र्वेश दे त्यश क्रेंग पर्वे।

विश्वायत्वात्रम्यः म्यान्यः विश्वाय्यः विश्वायः विश्वायः

ने अन्तर ने मा वेश मर्देश

श्चेर्यम्भ्र पर्देश ग्री सेट पर्देग्य स्थाया स्मिन द्वेष्ट में शेश्यास्त्रप्रिश्चास्त्रिः यात्र् हुः यात्रेशायर्तेत्रपाः सुः तुः ते रहेत्यायारेतिः शेतः वीश्वानम्बाश्वान्त्रा वेंत्रिश्वास्त्राम्बाश्वान्त्राम्बाश्वान्यः विष्ट्राम्बाश्वान्त्रः विष्ट्राम्बाश्वान्त्रः विष् न्रहेन् नुदेर्ने नुद्रस्य श्रुव्यादेर श्रेष्ठित्र विषया विषय विषया विषय विषया यह्र मद्र न्या भेगा न्या भी क्रिंव से प्रमुत्त वे नक्ष्र नर्रे राग्री हो न प्रस रायान्त्रीयायवे क्षेत्र्याया यात्राया यात्राया प्रत्या कुः इसः इः इराया सहितः यदे शे दुवे वया सुर क्षेत्र वे मराया नहेन यदे तिर्यान क्षेत्र यदे हैं न्या नम्बारायान्या वावनायानाम्यान्यान्या व्यानास्यान्या न्रे देवार्श्वेराना ८८। यस.स्.८८.जुरु.च८स.जस.य२प्रमास.स्यास.८८। यटस.२४. ब्रैंट्यःशुःरेगाःग्वयःग्रेःवळद्वाद्वःकेरःदरःवःवयःव इदःवस्रुदः नर्रेशःग्रथरः हें अः ग्रीः अळदः यः श्रुदः दगः ग्रीः छें गः ग्रुदः दरः वर्त्रेयः नदेः सेरः वर्देग्रसः सुं सं सुं से सं ते वा प्यें द्राया वर्दे र सुस सु राया के ते वर्षे गदिः ग्रद्या थीः श्चेष्ट्र व व श्चेदः यह ग्रावायः यदि । विवासियः स्वादि।

प अवदः न्युनः या

१ कु:गर:वेशः र्वेगशः र्वेन

मु ग्रामः विश्वासः देशः क्षेत्रा म्यूनः नुः स्रोदः स्रोदः स्रोदेः स्रोदः स्रोदः स्रोदः स्रोदः स्रोदः स्रोदः स्

श्री अपने स्थान विद्यान के स्थान के स्

ही अग्छी आवश्यास्य शे हि नाइं ना स्वा है अग्छी अदार नहें अग्य व्य है क्र न्य है अग्य है ना स्व व्य है क्र न्य न्य है क्र न्य क्र न्य है क्र न्य क्र न्य क

वेशःगुनःसरःवर्देरःदे॥

न् निवित्र नु मार्च का क्षेत्र म्हा निवार क्षेत्र मेह निवित्र नु मार्च मार्च का क्षेत्र मेह निवार के का कि का कि

विश्वास्त्रीय्वस

कुलान्वन्ध्यतिः हैशान्नम् विवाधि श्राण्यायाश्या नेन्याया निर्मायद्वा हेत् स्ट्रिं स्वाधि स्व

यदा मुःशेरःवेशःश्चारःशेरःधेतेःकः दशः चह्याश्चारःधेदःदा अःरः दयाःधेः वशःकेः चतेःश्चेः देयाशःयः मुःदयाः ददाः अःरः द्यारःधें वशः केः चतेः

दें त्र न द्रश्नेन भून ग्रीश कु ग्रम् लेश वर्षेन संदे खुवा विस्रा रे वा अन्दिनार्यान्यवित्रप्रयाद्वेत्रप्रद्वित्रप्रवित्रप्रवित्रप्रवित्रम् या ब्रुवा खूसान् वर्हे न पर ग्रुहे। स ग्रामायन म स्रिवा के से क्रुवे स्रुप्त स्रिवा के स र्रे दिनन रादे सुँग्रायायान्य स्थार्थे द्वारा स्था हुदे । धुया वे या समाग्रायायाया नेविः श्रेशः नेवः तुः न्दः न्त्रीवः तुः विश्वः या विश्वेष्ठः या न्द्रशः श्रुरः कवाः यवि । नेरासाबना कुःवनानीः श्वें वाक्षीः नहरानी वाजिना निवाहा हैवानुः र्शेन्यश्वरावे दूं नार्शे श्रेयाचे यापान कृष्में राकु वित्रापने प्या श्रेड्वदेः ख्रयादे कु ग्राम् जुर र्सुग्रया अ ग्री कर ग्राहे ग्रया सदे ख्रया है ज्रामा स विगाणित प्यमा हो ज्ञामी सेम हो प्यासून प्रति रहे वा ही सार्शिन प्रति । न्वीनशन्दर्ध्वरम्वे मुन्नर्ग्ये भुष्य श्रेष्य श्रेष्य श्रेष्य भे द्वेते खुय हे रेवर् द्वा रेवर इं वेश ग्रुप्तर दृश्य हैं अ श्रीर श्रुदेश श्रुद्द र्गु ग्रुप्य स्टर्म

श्ची स्र श्चे स्वा श्चा वाव स्र श्चे स्त्र स्त्र श्चे स्त्र स्त्

भ्रमान्त्री युत्रस्ते स्वर्णान्य स्वर्णान्य

१ শুমান্ত নমি শ্লুনপ্র শান্ত শান্ত

भूव-र्नेव-म्। कुः सळ्व-गुव-वसः सळ्ट्र सः प्रेट-स्। विसः भूव-र्नेव-म्।

धियो खु धे गू भे महिशा

विश्वास्य स्त्री । विश्वास्य स्त्री । विश्वास्य स्त्री स्वर्यास्य स्त्री स्त्री । विश्वास्य स्त्री । विश्वस

सेर्ग्नेव्याप्यर्थें थे क्षेत्रम्य क्षेत्र क्

प अन्दर्भुर्भ

नन्द्रख्यादेग्यामाडेम शुक्षाद्वानवेद्रत्युक्ष्यंद्रामवेसकेंद्रानहेंद्र

न्दः ईस्यः सरः न्यः नडवः ने स्वायः वह वाः स्वायः वावः वावः वह वाः विदः स्वायः विद्यः स्वायः विदः स्वायः विद्यः स्वायः स्वयः स्ययः स्वयः स

व्यथाः स्त्रीयाः स्त्रीयाः प्रकृताः स्त्रीयाः प्रकृताः स्त्रीयाः प्रकृताः स्त्रीयाः प्रकृताः स्त्रीयाः प्रकृताः

वेश्यते मद्दान्य महिश्य में त्ये स्वर्धित महित्य स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर

नर्डे अन्देश ग्री अन्व न्व न्व न्त न्त है । या न्यू अ। श्री मान क्षेत्र नर्डे अर्डे अर्थ अर्थ न्य है अर्थ माने स्थान क्षेत्र न्य न्यू माने स्थान क्षेत्र न्य न्यू माने स्थान क्षेत्र न्य स्थान स्थान क्षेत्र न्य स्थान स्थान

मान्वन'प्पटा नश्रुव'त्युर'र्बिट्'ग्रे'श्रुश'ड्'नदे'सह्मा है'श्रुर'न्ने अ'देट'व्यूर'हिंद्'ग्रे'श्रुश'ड्'नदे'सहमा मन्द्रिक्'देश्रुर'हें मार्थ'युर'हेमा।

ब्रह्माःश्री अर्थः मिटायाम् हेश्याद्यः मिटायादेशः विष्यायाः विषयः विषयः

दे श्री मा श्री भारत है या भारत

विश्वालित्त्रात्ते प्राप्ति स्थाले व्याले स्थाले स

श्चेर्स्य इ.६८ इ.४.८ वर क्या २८ चया यह हमा व इट वी वया गर्डेर्-अ:श्रुर-पर-ळेंग्रश-वठर्-श्रुअ:दुत्यःश्रुअ:दुःईअ:पेर्-परे:क:द्रशः शुंशा दुः नः वे शः न न न शांशा सरः न ग्राया तः ते । तिरशः न राष्ट्र स्व स्व राष्ट्र स्व राष्ट्र स्व राष्ट्र स्व नन्द्रस्त्र्र्त्युर्न्तर्व्यूर्ने। नगद्रद्रन्त्रभ्रत्वर्क्र्याण्ये वें गिदे ग्रम्थ ग्रीय नसूत नर्देय ग्री सर्द्ध न न न म्या से ति न तुः सर नदेः मुर्रे । ने प्यर उंडू में भेदे नुर कुन से सस द्यदे ट्रेंस य है . लु न द्विन न्सॅन्नन्यदर्भेदेःचन्नेशामहेन्नन्धेन रहेता सुराधाया वर्षेत्र से सुर श्चराण्ची प्रत्यास्त्रेयाब्द स्वास्य स वनार्कें र्वे द्वान खुवा विस्र मासुवान दे में में दे न सूर् न मान कुर दुःन वस्त्रायायास्युत्रम् वीर्यायायास्या क्षेत्रान्येत्रम् न्यायास्या कुरानकूर्यानकुः ध्रानद्वा निरासर्गे ग्राया की राधित सुयानकु ना के र्हे हे गर्हे न वियायायाय्ये ते न तु या वियाये स्थाय वियाये ।

धिःमो ध्युःधे गाः भे मिहे शा

वेशप्राप्त्र भा

ठेगा र्ने रा ने 'यर हें मा पर्वे।

विश्वास्त्राच्याः व्यास्त्राच्याः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राचः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राचः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राचः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राचः विश्वास्त्राचः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्राच्याः विश्वास्त्

ने निवेद से दाविदे निर्देश मान्य प्राप्त मान्य

वेशस्तेः म्रान्याविषाः इत्याया स्थ्रवाः है । या स्थाः प्रस्ताः विष्याः स्थ्रवाः स्थ्रवः विष्याः स्थ्रवः विष्यः स्थ्रवः स्थ्यः स्थ्रवः स्थ्यः स्थ्रवः स्थ्यः स्थ्रवः स्थ्यः स्यः स्थ्यः स्थयः स्थ्यः स्थ्यः स्थ्यः स्थयः स्थ्यः स्थयः स्

हैं नर्श्वन्या अभारत्वन्य विषय्य विषयः व

श्रेर्योत्राधे नेश्राह्मश्राह्मया ही श्रुश्रायहोत्या है। इत्यदे

८८.स्.चाशुत्रायाः ख्रायाः चुना । डेकायायेः में ८.स्यादेया मशुत्रायायञ्चायाः चुना ।

विश्वास्तिः महाना गाठियाः महाना महिना महाना गाठियाः महान गाठियाः महाना गाठियाः महान गाठियाः महान गाठियाः महाना गाठियाः महाना गाठियाः महाना गाठियाः महान गाठियाः महान गाठियाः महाना गाठियाः महाना गाठियाः महाना गाठि

त्र्राण्य क्ष्यात्र क्ष्यं स्वत्य क्ष्य क्य क्ष्य क्ष

३ कु:र्नेन् भवःश्वरःश्वरःश्वरःश्वरः स्वीर्भानःश्वरः स्वीर्भानः

श्चिन्द्रविद्वार्था।
श्चिन्द्रविद्वार्था।
श्चिन्द्रविद्वार्था श्चिम्प्रविद्वार्था।
श्चिन्द्रविद्वार्था श्चिम्प्रविद्वार्था श्चिन्द्रविद्वार्था श्चिन्द्वार्था श्चित्वार्था श्चिन्द्वार्था श्चित्वार्था श्चित्वार्या श्चित्वार्था श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्या श्चित्वार्वार्या श्चित्वार्या श

विंदा अधिरहे अख्या हैं द्राया स्था हैं द्राया स्था है ते क्षेत्र हैं का स्था है के स्था है स्था है के स्था है

यदिन्त्रीं अन्तर्यो अन्तिन्यर्थे या अन्तर्यो अन्

देशवास्त्राम् हास्त्रीयार्वे दास्त्राम् द्वारा स्वरास्त्राम् स्वरास्त्राम् स्वरास्त्राम् स्वरास्त्राम् स्वरास् नन्गारुगानी सुः अन्याय्याय इययायि हैं ग्राया हें न सुः ग्रिंत वहुं अः ग्रे अदः भवः श्रु र नर्गे द प्रश्रासर्वेदा र्वे द पात्र प्रोतः देश पा इस्र श्रि ग्रे न्तुरः धरः भ्रदः भवः श्रुरः ठवः सदः दुः धेनः दिने छे । वेषाः छे । वेषः धेनः छे । नडन्से विश्वरित्ते सेरायाये दूरना इससार्वे रसास बुन्सी के तसा क्षुरा क्रिंयानारानी कायदर ह्यादयाने रात्र या या या या यह राय है या ना विना नर्वायानिः सार्व्ययान्यान्यित्यदेत्यासुन्वस्त्र नर्वेयाः हैसानदेन्त्र रटारटायाटायर्देराग्रीशास्त्रदान्त्रम् स्थान्यायाय्ये दास्री स्थान्या स्थान्या धे प्रस्मी हे अवश्वायाय प्रवाद प्री श्रीय पे प्रमान विवा पुर्यू र प्रयाद र्वा शराक्ष्यार्भ श्रुक्त के रे ग्राम्स्स्स्स्स्य श्रुवा शर्याचार विस्क्री शङ्गित विस् য়ৢ৴৻ৢয়ৗ৾৻৻৻য়য়য়য়য়ৣঢ়ৼৗৢৢঀ৾ঀয়য়ঢ়য়৻য়য়৾য়য়য়য়য় वर्ग्यायदी निवेदार्गे नियः मुद्री

त्रुम् । त्रुम् । स्रुम् । स्

स्वाः प्रिः त्याः त्याः वित्रः त्याः त्याः वित्रः त्याः वित्रः त्याः वित्रः त्याः वित्रः त्याः वित्रः वित्

स्री म्यान्न म्यान्न म्यान्न म्यान्न स्थान्त स्थान स्थान्न स्थान्न स्थान्न स्थान्न स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्

तम् त्युम् स्या श्रेष्य प्रति क्यु स्वर्ष्य न मे दि स्वर्ष न स्वर्ष स्वर्प स्वर्ष स्वर्य स्वर्य स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्य स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्ष स्वर्य स्वर्ष स्वर्य स्वर्य स्वर्ष स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ष स्वर्य स्वय स्वयं स्वर्य स्वर्य स्वयं स्वर्य स्वयं स्वयं स्वयं स्वयं स्वर

नि'सबद'र्ध्र्र'ग

न्रान्त्रीत्त्रम् यद्भात्त्रम्यात्यायायात्रम्यात्रक्षान्त्री नश्रुतः न्रम्भात्त्रम्या यद्भात्त्रम्यायायात्रम्यात्रक्षान्त्री नश्रुतः द्वान्तर्द्वान्त्रित्वान्त्रिक्ष्यात्विन्त्रिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्यान्तिक्ष्या

 याम्यः संस्थितः त्या प्राप्ति स्वीया स्वीया स्वीया स्वीयः स्वीया स्वीयः स्वीयः

सर्केन् निह्नेन्द्र हिंसा स्वाया निर्धाय स्वाया के स्वया के स्वाया के स्वया के स्वाया के स्वया के स्वाया के स्वाया के स्वाया के स्वया के स्वया

नर्वाम वित्री:र्व्याम्यान्याः देशम्बर्धाः

धःमेःख्रःयःमुःधःमहेश। ख्रःधःम्ययःग्रेट्छःस्यम्यः मुःधःसुसःसुसःमुः

ग नर्रेशःग्रीःर्नेबा

ण्या अन्तर्भ्याक्षेत्र्यक्षेत्रक्यक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक

भ्रम्थाश्वास्त्र भ्रम्थाश्वास्त्र स्वास्त्र स

स्तिन्त्र प्रक्षित्र प्रक्षित् प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प्रक्षित्र प

इर-र्ने श्चेर-५८-गुग-४-५८-॥ वर्क्ट्र-५८-श्च-५८-श्चेर-११

ने प्यर पी मो ने राय पर्देन कुय की की राये की ने दे की मून देंन या ये गरा

या गाःष्ट्रः तुर्रः स्रेरः तुरः यहेत् होतः स्रेनः स्रेनः स्रेरः तुरः स्रेनः स्रोनः स्रेनः स्रोनः स्रेनः स्रोनः स्रोनः स्रोनः स्रेनः स्रोनः स्

यवन्यम् अधिनः हो। गायाध्यम् हे नाम्यः प्रमानि विद्यान्यः विद्यान्

पि समयः न स्ट्रान्य

र्यट्याकं.ल.स.क.सपु.पर्यूयोशी

लेश्रासंदे निहास कर् स्ट्रेन् स्थापन स्ट्रिन् निवास स्ट्रिन् स्थापन स्थापन स्ट्रिन् स्थापन स्ट्रिन् स्थापन स्ट्रिन् स्थापन स्ट्रिन् स्थापन स्ट्रिन् स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप

ची प्रविद्या के प्रत्ये के प्रत्

यद्यान्य स्थान्य स्था

ने न्या व्य बिन से स्प्रमुन वो यो या श्रा सु स् राष्ट्री सु से या प्रवेश या ब्रह्म ल्रि-क्र्-र्-लाल्या-रचिर्याकी याया श्रील्रि-राज्या याया ग्रीन् याया श्री नव्यान्याचियाः ग्राम्यो द्या । अय्येयाः यास्यः होनः यासः सुः नव्याः यासे विनः धेया वी द्वरायावया वित्रायश्रासी प्रत्यूट प्रसादे त्याद वी सारा खूया वे कि प्रेंत डे'वा येग्रश्रुर्छे'धे'गे'यार्श्रेग्'ठव'द्र र्श्रेग्'सेट्'ग्रें स्थाग्विग'र्धेट्' नशःश्रीमा उत्राची भी मो भी तरके निवाद अपना स्था श्रीमा सामा निवाद निवाद । संविषाधित दर्गेश दे प्यदा गांसाय (कु होस) वेसास या द्वाद्या आ हुद ल्यायायात्रा युःदूः(यावेःद्ध्याय)वेयायवेःधेयायतुःयवियायपुःसेरः व्यायायाद्या अ.हे.(वेयाय)वेयायायाक्षे.ब्रदाव्यायायाद्या गुङ्गाया (ग्र-ग्रास)वेशपायाधुः बुद्दाव्यायापाद्दा क्रिं(दें क्रांच)वेशपायार्द्वः र्रेट (विष्यु श्रास्त्र विष्यु विषयु नेरावाक्षेरामो निष्ठम है वाक्षारेरान्या हु वाका सुराव्या सर्वेद्यन्त्रम्यः श्रेंना दुव्ययः खुवा के साम त्या साम ह्या श्रेंना से न हे सा मदी ग्रेप्ट्र (बेट्रम) न्म यह (मिंशकीया) डेशम क्षु मुदे ग्रेप्य न्व्य दिन्दा सत्यन् श्वर्मा अवत्यन् विष्या अवत्यन् विषयः । देन्या यो अवत्यन् विष्या अवत्यन् विषयः । देन्या यो अवत्यन् विषयः । विषयः

र्देन् शुक्ष हुन्म श्वेन पह्ना भेट्र प्राक्ष द्वा श्वेट्र शुक्ष हुन्। बेश प्राक्ष श्वेट्र प्राक्ष द्वा श्वेट्र श्वे

 শম্

दे खास्त्राचे निव निव स्

वेशःश्वाशःहेःक्ष्रःत्र्योषःद्धयःद्यान्त्र्यःह्यःत्र्यःहः वार्वेरःहेः प्रयः यायःवहुः वरः सहदःहै॥

ग्वित्यायः अर्थ्ययः ने द्रायः त्रित्यः व्याप्तः अर्थः व्याप्तः अर्थः व्याप्तः अर्थः व्याप्तः अर्थः व्याप्तः व्यापतः व्याप्तः व्यापतः व

ने पार्चिमा सम्प्रमे निर्मेन प्रमानिका चु मिर्म स्वाप्तिका स्वाप्

ष्यक्षेत्रसाधीःधीःवीत्रःवर्हेत्।

डेश'र्रा

श्रॅग् मुंद प्यद प्यम पी मे न नुद्या

वेशन्द्रा

त्वर्यायविर्यायाः स्वर्णायां व्यय्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायाः विर्यायविर्यायाः विर्यायाः विर्यायः विर्यायः

ने सूर्व ह्रेंन न्यें व वेंद्र हेंद्र हेंद्र हेंद्र हो वा को निवासी है। हें येग्राश्चुरम्भे भी भी ने भी न भार में न से दे स्मूर्मे में न न से सामे में में से सामे सामे सामे सामे सामे सामे য়য়য়৾৽ঽঢ়৻য়য়৽ঀয়৻য়ড়ৢঢ়য়৻য়ৢ৽ঀ৾য়৾৽য়৽য়ৢয়৽য়৽ঢ়ঢ়৽ঢ়৾য়য়৾ঢ়য়৾৽য়৾য়৽ वस्याहेत्यर्वे वर्षे वर् ग्विन्।न्राह्मायरकेशकेराह्मान्या भेरास्त्रमाहेशावह्यानदुःर्ने। ग्राट-सुद्रास्य (ब्रुग्यस्य स्रोट-द्रिट-देव-ग्राव्यक्षाः व्यक्षिक्षः स्रोट-स्रोट-ह्रस वाववाः सहर्पः प्राप्ता धेवाः वर्तुः रे रे ववसः वसुवाहे व से र वासुसः से से र शेष्ट्रे निवेक्ते निव्यास्त्रे निविष्या मित्र सळव'ने'नविवे क्वें'व्यानेंन'ग्रे'णे'यो म र्श्वेया'ठव र्श्वेया'ये न'ग्रे'ह्यायावया' स्यह्तराधिवार्ते। दिष्पराधिवाते। नराकेनायार्श्वनामीषावेशान्हित नयात्रा न्यायाचेत्रसुयाद्वाययात्रात्रात्रः कःहाकुत्रस्यायाकः सावायारः यान्यामान्यामान्याम् नरुन्नरमिश्रासञ्चिश्वरणदर्देवायः विनापान्या ने निवायः नरास्तेवाः नवनाम्यस्थितः स्टामु नः से स्व मुन्यस्य र्श्वनाष्ट्रव स्व तुरम् सुरायः वेशः व्यापान्ता नगमा वह्या नवना नयवाक्षानुवस्य हेवासेटान्स्या क्टर्ना उत् क्षी अवर्नि स्क्रिया निव्या स्थाने या शुस्र निर्देश शास्त्र सेटर्ने क्रेंत्र. द्युन पायाळें त्र पाया त्रुन्त्र नुन्य प्रत्याया त्री स्थापालना यह दाया नर्गेश नरः के गायः श्रेंगान्दाय निया ने सामें द्वारा में प्राप्त के सामें दिया स्वर्धित है।

न्दरमन्यन्यन्यन्व ठेमायाष्ट्रातुःयान्य केवा सेन् कें विदेश रेविदेश रेवे:वरःवरुषावर्डेदःद्या (दरःदरुषावरःसदःस्वःद्वा) वर्वे:दरःवाहेरुः ८८.योश्रेश.८८.योश्रेश.(८८८श.य४.स८४.य८यो)ग्री.य४.येश.योर्डे८.श. नेशम्बर्यस्य देवत्र हेव सेट वाश्वस्य शेन् होन से होन् हेट न सूवान्वाद वर्षः तःश्रेंग'८८:श्रे[.]ष्ट्रत'सदे'धे'गे'खश्च,श्च'नर'शुर'सदे'ग्वत'दि'ख' श्चग'स' धेव कें। निवे श्रेम केंन् श्रेष्ण धेया वे धे यो यावव श्रे श्रेया तृ वह्या या सेन यद्रामी'ग्'व्यथ'गुःद्वर श्रेर्याक्षेत्र स्रोत्यथ'त्र्वर्याची'ग्रथ'स्रित्ये द्रमा र्शित्राचीयात्राचित्रायात्रियात्रात्रात्राची सीट्राची श्रीयात्रा विचा सेट्र मश्याम्ययः होत् म्याश्यादा स्वाप्ययः देवः भ्राप्ययः वर्षः स्वर्यः वरः वाशुस्रावादासुदातुः श्रुरादवीं साराध्यसार्वेवास्यराश्रुरावसावादीदावी देवा न्दः श्रुन्यः वर्षेत्। वरः न् वरुवाः प्रश्चे वः वादः न्दः धरः स्वारः प्रश्चे सर्द्धरमःनिरःदर्गेमःमान्वरःमःदुरः वदःरद्धमः धरः द्वेतः कुःसेदा देशःवः गर्षेत्रःग्रीःनेशःर्गःर्गःर्गःग्रुःगुदेःधेःगेःषःरेःगश्यःग्रेरःग्रीःसनरःश्रुरः नथा नापशःग्रीः वनशः नदः सः सः नुतेः नाशयः ग्रेनः हेरः न्त्राः वें । अः यः नहेतः केर रमा यस मासकें तर पंषीत हैं। विसामने मात्र प्रसाम परी की सामर গ্রনী

 ष्णयः विदेष्ट्रम्य विद्याय स्त्रोत्यः यात्रम्यः विद्यायः विद्यायः

यान्त्रणा विन्श्याः नेयाः भी व्याप्तः विन्यः क्षेत्रः व्याप्तः विन्यः व

मिर्यायस्यायायास्य स्वयंत्र्रीश्रा

नहेनायायानु नुना उदाया सूरा।

ब्रेशःहॅगःश्रं हुं नवे न्वाधियान हुं हुं व साह्यस्य स्वाधित स

च्हुं यह महिराया निक्षण के माणे के मा

म्बद्धाः स्थाः स्

ने त्याख्राची महिसामा श्रुमा

वेशःश्वांशःग्रीःश्वेनशःशःशेन्यवाशःश्वः न्याःग्रीः नहःस्यः न्याःश्वेनःश्वः न्याःश्वः न्याः न

ने 'श्रम्म व र्चन 'श्री' न श्रम्म 'श्रा श्री में व श्री हैं न स्वा श्री में व श्री में

गुःषे सुम्रा दुर मुर्म न उर्द रादेश लेश त्रा राम्य द्वी मासु न दुना राजा द धेवा देव गुर पक्षेते प्रदेश सूर साया न पर प्रेमा मी मा त्रम सार ही नसा वर्रान्दरा वैदायासन्ने सेदाग्रहार् दरानदे थी मो महिम हे सामरासूदा गठन गवन सम्भेग कुरनन प्रतेसान र्या स्वासेर समा न्राचाक्षुःतुःसँग्राययासदेःवह्गायानेत्रातुरानदेःकुःसळंत्ःग्रीसः वान्तः धेत्। हिन् सर्न् स्थाधेवा वी दिवा पुः नः धेवा निवास नः सः धेवा नर्वे अ'वे अ'वे र'न अ'वे। अ'अपव 'ने अ'अर्थे व' कु व' खे 'पी वा' वी 'न ही न अ' ८८। मूर्अ.मी.प्रेप्त.लुचाचा बिचारा २८। चारुष.चा बष.स.लुचा.ची.चा बिचारा. <u> ५ व्री नर्भः मार्थुः भावस्यः सार् ५ ५५५ ५५५ । व्री न् ४ ५५५ । व्री न</u> सर्वेट्याम्बर्यान्य न्युकायाय दे द्याया नुस्त्र न्यास्त्र न्या स्वर् नदे कु न्ना धे मे र हो र त दे श्रूम र्ने म हों द र दे के द र र हो र र र हो डयायर सेन दे॥

गू त्ये सुय हु वय पर्दे। गू त्ये सुय हु वय पर्दे।

वेशरावे में भूतराय के श्रुमान में श्रुमान के स्वार्थ के स्वर्ध के स्वार्थ के स्वार्य के स्वार्थ के

यम्यायाध्यम्य विषयः स्त्रीत् । विषयः स्

यावदःस्यायः द्यायाः या

धिःमो ध्यु धिः गाः चि महि या

वेशमाशुरश्रमामाम् विमा ने प्ये मोदे में विद्यान है न से नात्र लेव सदे हिर बेरा दें वा ह्वेव द्वा स्वा ह्वा हिन द्वा हिन हों में निर्मा हिन हों ने स्व ८८। वहवर्स्टेंबरग्रेश्वरभ्रेंबरमदेखेरगेर्नेसेक्शस्टेंबरस्टेंबर्गे वार्यायाहेरास्यादासुदाधितास्य विष्या विष्या विषया विषया विषया विषया ने कें अरुवा नग्रम्यावायाया है अर्थे वार मुरस्य प्रेव प्रम्या नग्रम्य याधिवायानात्विया यायाया होतायाधिवायते हिमा तत्राची या वाया हे यो। गुःर्सेग्रथः न हिरुषः न विषयः ग्रामः धेवः या द्वेषः न विषयः या स्वापः स्वापः स्वापः स्वापः स्वापः स्वापः स्वाप यार्था होत् शुरु हु त्यर्था याद प्येद पार्श्वेर्था नेवा ह्यार्था हुन याहिर्या या स ग्रुन'त्र न्युरुर्भ'ग्रम्थय'ग्रिभ'ग्री'ग्रवि'स्र श्रुद'र्थे न प्रम्य ह्रम्थ'रे'रे' न्हें न भेत्र मन्त्र में निर्देश मुनन्तर ने के अरुदा भेरो भेतरमर मण न्वरमामयान्यस्त्राक्षम्यायदेधीयोधित्रपदिष्टिम् विनःभ्रे नेवायन् अप्तर्भारावे भे प्षेत्र त्वा भे प्षेत्र समाध्याम्य । या से सः प्रद्यापाषुः हुर-५, अः श्रूटशः मदेः देव : केव : धेव : देव : देव : के : धेव : पश हिव : मदे : हिरा वर्षिर वाश्वरास्त्री।

लटामङेग अलीमाम्बर्धा होटार्मिन्न स्वर्धा मार्थेन स्वर्धित स्वर्येष्य स्वर्धित स्वर्धित स्वर्येष्य स्वर्धित स्

त्रुद्दश्चीम् देर्ष्या इत्याक्षा विद्यान्य वि

गुःषे सुस हुः इस मर्दे।

वेशग्रासयाचेत्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्र म्राम्यानवत्यास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रास्त्रा

रटास्यायायावयाःमा

वर्देरधे में देर्ग्रेमिवे धेव या न्त्रे व खू खेर्न्यम् वे महिष्र्र्री ने मिहेश शुः महाराष्ट्रेश प्रदेश क्रुं अळव दी। श्रें में दि स्नूह ग्रें महिराया <u>२५८२ म्याया में यादेश शुरेश है। दः र्रेट ख्या में यादी दार्य थे।</u> ग्रथयःचदेःग्रन्थःदेःन्ध्रयःन्तः। धेःगेःस्टःस्टःगेःश्चेःग्रद्याययःस्यः <u> न्यायाश्वर्यासुस्रास्टर्यदे स्हृयामीश्वरद्येत्रायदे यान्द्रश्वरे याश्वरामेन्</u> या नेसाग्रायाह्वापाद्रायाद्रीह्वापायाद्रेसासुम्बाद्रसादेसायाद्रीसुरायासुसा सेवानवे मुहसारेसाइरा म्बदानत्त्रत्त्रत्ते ने नत्त्रम् मारास्टासा धेव मदे ग्वव प्वव प्रत्र प्रिंत व प्यर से इसस छी नदे से वा प्र सूर र् शे.रुट्यम्बर्द्यम्भः स्वर्धे म्यारम् देम्द्रा व्ययवार्वेद्वम्यूर्यः वस्रास्य व्याद्या वर्षा वरवर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्षा वर्ष <u>५८:श्चेत्रःश्चेष्याश्चःशेःपोःदेः५५५८ । ५५०० |</u> यशर्रे विवाधारिके विवाधम्य निवास्तर निवास निव मर्म्यन्त्रम् त्रे स्थान्यू निवेश्याद्याद्याद्याद्यात्यात्र । कुलाने स्थान्या स्थान्या द्र्यः क्रिं व. ब्री. ला. वी. क्रिट्र च. स्मार्थः श्री. वी. वी. ब्री. च्रां वी. क्रियः स्टर् हो या. र्धेन्यने त्यान्वे रायान्य कु सक्त के पेन्य के ना विषय कुरा गेदेःगणमासुःगेन्तुःवर्रेः द्वीं मान्ये स्वः कि (गे) वर्रे क्षुः तुः द्रा <u>न्बर्साक्षे रेराने भ्रम्सारा सुर्ग म्या वित्रावित्रावित्र प्रदेश नर्गे सामार्थे स</u> ती (है)व्दे क्षुनु धेद वा वेद से शर्मे द धेवा वेवा सरावा सरावा वेदे भूतशःशुः&्यःदे:८८:अशुदःधर:८ग्रुटशःक्षे:शुटःठदःयःगे:ग्:धे:गेदेः ग्रुन्द्रमायवास्य स्थ्रिन्द्र स्थित स्थित स्थित । स्थित स्थान स्था देशकिरा वेद्रश्चित्वहरूष्ट्रियाची म्यूयर वेवा द्वर वेवा द्वर श्चिम तुःनॱदेॱसेॱवर्गुनःसथःधेॱवोदेःग्न•्वसःत्ॱवरुदःवर्देग्वशःदर्गेशःसरःनर्वेशः यन्येर्न्न मी प्रने स्वानु स्वानि मान्य प्रान्य प्रमेत्र प्रमानी स्वानी स्वानी स्वानी स्वानी स्वानी स्वानी स्व लेगायामी गु हिर लेंगा उदास्ति से र र गुरा रे स्वर र हें द ही पही सूररायम् गुरायार्शेरानदे मेन ग्रीयानसून पानी प्राची सर्वी खुनायाया <u> दशःग्रम् धुदःर्मम् रचः देवाःवः ववा ग्रम् वी विद्यः स्टूम्यः मे क्रुद्यः वश्रम्यः सुर</u> सुरायासमार्द्रमाया नर्गेयायान्वर है । यह से न प्रमाया स्था । नरे र

वा येग्राश्रुरमीःश्रेर्भात्रात्वर्थानात्वरात्रा १८ वर्षेश्रामेङ्ग्रायासेङ् नन्दा र्डेन्स्व लेशसंदे थे मे नेंन्थिय थेव भया य ने शर्वे र कुव वर्चभ्रमाग्रीमार्सेन्यमाने न्या वर्षिया वर्षे या वर्षे या प्रमाणिया वर्षे वर् तुःयः नृतुः हिन् देश बेर न्वें शक्तुःयः हिन् ग्री हेश यह्या र धिया हुः नम्यायायाय्यान्यः हिंदः वेयापाय्याय्याय्याय्याय्याः नयः वर्षे । वर्षः वर्षे । वर्षः वर्षे । वर्षः वर्षे । वर्ष वे.श्राष्ट्र-१८८ हिन्से लेसायवे स्नवसार्शने से से में रामें राम्याग्या गार्थे गा वी सिट पित पार ने यात्र विवा हिंगा दे । ने विवास व सराधरादे रहसा श्री शास्त्र मिश्रासरा श्राया दे द्वायी यावदासार्थी वरा वॅद्राग्चे :धे :वो क्वेद्रावदे :वी :व्या श्वेद्र :व्या या दित्र :वा वेद्रा :वा वेद्रा :वा वेद्रा :वा वेद्रा :वा यदरशःग्रेःश्चेरवशर्मे नःश्चेरश्चेरायेव प्रवेश्वयःग्रेश्चरयान ग्रेट्यां शेश्चेर ग्निकानुदेश्रेग्।दन्रमागृहेमायाके।कुराधेन्।सेन्।नुर्हेन्।प्रान्दाद्रान्यः। शेययःश्री

भ्रामितः भ्रूनः द्वाराम् अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे त्वाराम् अत्यक्ष्यः भ्रूनः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्ष्यः म्रे अत्यक्षः म्ये अत्यक्षः म्रे अत्यक्षः म्ये अत्यक्षः म्ये अत्यक्षः म्ये अत्यक्षः म्ये अत्यक्षः म

यास्त्रान्ता ने निर्वादे न

वक्तर्या वार्यया होत्र व्यवस्था विश्व विष्य विश्व विष्य विश्व विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष्य विष

दे.ज. हे श. पहेंचा. पडे. लेट्री दे.जश. के. हेंच. रेजर. पहेंचा। इ. प्रश्ना के. हेंच. रेजर. पहेंचा।

भ्रम् स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स

या हेशतह्यायी'धी'यो'यडु:ब्रुट्शप्येत पुरानुःश्र्वि हेशयादायत्र शे यह्या'य'श्रेरा वि'र्वि'त्र'धेत्र'धेत्र'धेयो'यडु:बेश'यर्गेत्र्त्रभाय्यायी'श्रु'ते यर जुर्वे । श्रःश्रेश ने'यशह्राप्यह्या'यडु:बेश'यर्गेत्रत्रभाय्यश्रीःश्रु'ते न्यास्यते नेत्रं धेत्र'धेत्र'यर याश्रुट्श हे। याद्राष्ट्रर प्रशेष प्राप्त शेष्ट्र प्राप्त प्राप्त प्राप्त स्था

२ क्रिशासराम्बरामा

ग्र-रुवर वह्या सेव श्रुम प्रवर सेवा

ग न्रेंशःग्रीःनेत्

न्में अरमर ने अर बुन माधे द दें।

यानश्चनः स्वर्ते । ब्रिन्न वरुषान् स्वर्त्ते स्वर्ते स्वर्त्ते स्वर्ते स्वर्त्ते स्वर्ते स्वर्त्ते स्वर्त्ते स्वर्त्ते स्वर्त्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्ते स्वर्त्ते स्वर्त्ते स्वर्त्ते स्वर्ते स्वर्ते

यश्चा होत्र स्था हो त्या की प्राप्त की प्रा

र्या हेश प्रति । इति । इति । स्वार स्वार प्रति । स्वार प्

हेशयह्वानइत्यशक्ष्याक्ष्य वहुवान् न्यान् वहुवान् वहुवान् वहुवान् वहुवान् वहुवान् वहुवान् वहुवान् वहुवान् वहुवान व

कूलायदे सुन्तु अन्तु द्वा विकार से विकार निकार निकार

नदे वन्या विन् पर्र प्रयायायाय विन पुर नहे नर न्यायाय स्त्री

प अवदः न्धुनः भा

श्रेष्ट्वाराचन्त्रपदिः भ्रवशादिर्माश्रावशादावि देव दिरावश्रवः त्रीःष्युःषेःकुरःनःषेद्रद्यःद्वयःहेदःग्रीःग्रःनःशेःदह्याःमशःग्रिनःमदेःग्रीरः र्रे । विश्वान विद्यायाय विद्या विद्या विद्या मुद्रा विद्या मित्र विद्या यासवयहेत्रसे १ वहुवा समाध्यासमावया वर्दे दाता सेवा गा स्वार्केश खेत्रच्या ॲग्नाया ॲयायर्ट्स्स्ययाग्ची: प्रग्नर्याते में में में त्रयार्केया उवा हिन्यासवयहेवायह्यासी सुन्यम्या हिन्यने न्यस्व ही खू वे मुद्दान प्रेत्र प्रदे भी वे अ वसद्य प्रायाय स्टि सूर ग्राद्य दिवे वर्देर्याने साधित। नश्चन्या ने स्वत्या हिर्मा स्वत्या हेवान्याराधराक्षे वर्षेनाम्यावादिरान्यस्वास्यावी सुरानायादे से वर्षेना डेशमाधित बेम्ता देख्यते खुः धेया यो सर्वे त हो द विवस गुः देशया म ॻऻॶॖॺॱय़ॱॺॗॖॖॖॖ ॸॱॸढ़ॆॱक़ॕॕॻऻॺॱय़ॱढ़ढ़ॱॻॖऀॱॶॱऄढ़ॱय़ॱय़ॺॱॸ॓ॱय़ॱक़ॗॖॸॱॸढ़ॆॱऄॸॱ र्वेन:देव:सेन:दें॥

३ शुम्रारामध्रम् प्याप्त स्वाप्त्र हिमा या नुस्य ग्री में बा

माल्क् प्यत्। शुंश्राश्चान्य स्तिन् स्ति । नश्चन स्थान्य माल्च स्तिन् स्तिन् स्तिन्। लेश प्रता । स्रेन श्चित्र स्थान्य स्थान् लेशपहें त्र प्राचित्र प्र

प्र अवदः न्धुनः भ

से 'द्रमो 'त्रु' सार्वे र 'तु 'चसूर 'यहे र मी सासह 'पाये 'थी 'मो ये 'द्रमा से य समुद्राया विया पर्वे अपिय विदास विदास मित्र स्वा विदास मित्र मित्र सामित्र मित्र सामित्र सामित सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित्र सामित सामित्र स यर हो एषा वस्वाय वहें दे हो दे प्रते स्नुवय खुवा वर्षे र सु से स गिहेशासासूराळेंदासराशुरासासामशासळेंगाशी हारेवारें छेदे प्रमेया केवा वेशनस्वारायदेशी हुते शुस्राह्यारायसे यान्य स्वापी द्रा ग्विमाश्ची प्रवेद प्राधिव विश्व स्टामी विव र्सिम् श्वाप्य विव मी शाय हेवा प्रवेर नन्द्रभार्धिदार्दे ।देषदाद्धयाद्देशहर्द्रमन्द्रभाषीदावेदा देश सहर प्रदे प्रमाश्चित्र की 'भी वोदे प्रमाद मात्र साथ खुर बर प्रमाद साधि के दि न्वेरिःसरःदेशःसदेःकुतःबेरःखशा धरा वान्दःवानेरःवानेरःवरःवाशेशः सर.स्.पश्यात्याःसूर्यःस्यःस्यत्यःस्यःस्यःस्यःस्यःस्यः वर्रोयः केत्रः ग्री: नमें नाई न: न् सेन: ग्रानः कें नामित स्वान्य स्वान्य केन सामित्र

यद्रीत्र-श्रिन्ते - क्र्याम् विश्वास्त्र ख्रिन्ति श्रिक्ष क्रिक्ष क्षेत्र ख्रिन्ति स्थाने स्याने स्थाने स्

खुर:इरश्राय:पदिर:वास्त्रमर:हे:कुर:पद्यी:वार्ट्स धर्मार्थेवः ळद्र:प्य:श्रास्त्रव्य:द्येश्वास्त्रेत्र:स्रास्त्रम्य क्षेत्र:स्रास्त्रम्य क्षेत्र:स्रास्त्रम्य क्षेत्र:स्रास्त्रम्य क्षेत्र:स्रास्त्रम्य क्षेत्र:स्रास्त्रम्य क्षेत्र:स्रास्त्रम्य क्षेत्र:स्राम्य क्षेत्र:स्राम्

ने प्यापने प्रमुक्ष स्वाप्त स

यान्यत्यान् द्वेचान्त्रेच्यान्त्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्यान्यान्त्यान्त्रेच्यान्त्रेच्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्त्यान्त्रेच

रुरक्षे वेद्विर्याण्ये स्रूप्याप्रस्य प्राप्त स्थाप्त स्थापत स्यापत स्थापत स्यापत स्थापत स विवायहोद्राद्वीं अय्यक्षाक्षी । देवे हो स्पाद्याप्त सूक्षायि हे अवका ग्राद्या इना ल क्रें र कु ते केना सर क्ष्रा ते क्ष्य मिते कु ल लक्ष ना निव सा तर्या धराग्वराहे। द्येरावा क्ष्राक्षेत्रही । वर्षरावे वर्षेत्रही । वर्णवरा नश्रूयार्ने । विशादमा नश्रूवाणमा नर्भेमारेमा हैया हैया हैया हैया विवा हा गुनःहा रेवःहःस्वासःस्रवःष्यसःसःष्यदःदि ।देःद्वाःयःदःइवार्देरः चदेः खुषः ग्रीशः क्षेताः श्रदः इस्रशः ग्रदः वश्चुरः वशः केताः सूर्याः वीवः पुवः पुवः व ग्रम्भे। कुःयावायाने नश्चुमानवे नम्मान्या देवाग्रमाया र्देव परा भ्रव रहेगा या भ्रव रहेगा अहिव रहेर या अहिव रहेरा रें या रहेर या र्रेष'बेटा गुव'हु'य'गुव'रु'र्शेग्राश्चुर'रुक्ष्य्रेर'र्ग्राश्चा दे'क्ष्युद्धे वें । श्रे प्राे (बुर्य केंद्र पार्क्ष पार्विस्य मेंद्र केंद्र श्रे या श्रे प्राे प्रश्रे प्रां प्रां प्रा इस्रम् शुं नेव हिला नेव हिला नेव हिला गुव हिला गुव है से ग्रम् शुं हो साव सा बुशन्यान्त्रन्त्रः प्यन्ते रहेश क्रीशः क्रुया में सि केन्द्री हेन्द्र हिन सेवाशः यःरेग्रभःदग्रेःग्रःसन्त्रभःसरःचल्याःधेरःसमःस्। विभःदर्गेरमःस।

नेश्वान्द्रमान्ध्रुशायते श्रुवान्ध्रीत्वाः श्रुवान्ध्रीत्राः निध्राम् भ्रुवान्द्रमान्ध्रिशः स्वान्यस्य स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्यः स्वान्ध्रियः स्वान्यः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्यः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्यः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्यः स्वान्ध्यः स्वान्ध्यः स्वान्ध्रियः स्वान्ध्यः स्वान्ध्रयः स्वत्यः स्वान्ध्यः स्वान्ध्यः स्वान्ध्यः स्वान्ध्यः स्वान्ध्यः स्वान

द्र्यां अप्ते। अप्त्र्यां ये अप्त्र्यां व्यां यां व्यां यां व्यां यां व्यां

ने त्थ्र स्थान तह वा विष्ठ अर्दे स्व त्या स्व त्या स्थान वो सक्ष स्थान स्थान विष्ठ स्थान स्थान विष्ठ स्थान स्थान

पि.योटेटश.अष्ट्र्यंत्रायोटेटश.योट्र्यं.श.वो

 च्व-क्री-निय-निह्न-निव्या-भेन्-प्रान्तिमा नेव-प्रक्रिया-भेन्-प्रम् स्वय-भेन्-प्रान्तिमा-भेन-प्रक्रिय-भेन-प्रम् स्वय-भेन-प्रान्तिमा-भेन-प्रक्रिय-भेन-प्रम् स्वय-भेन-प्रान्तिमा-भेन-प्रक्रिय-भेन-प्रम् स्वय-भेन-प्रान्तिमा-भेन-प्रक्रिय-प्रक्र

वाववरण्या अवश्यास्त्रीरह्मा विश्वास्त्री वार्ष्वा होता वार्ष्वा वार्ष्वा होता वार्ष्वा होता वार्ष्वा होता वार्ष्वा होता वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा होता वार्ष्वा होता वार्ष्वा वार्या वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्या वार्ष्वा वार्या वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्ष्वा वार्

र्स.धु.प्रदेश.र्यराचिष्य.यश्चेया.हुरा।

वेश्वर्तः महत्त्वाविष्ठाः प्रस्ति विष्ठाः विष

र्से ता क्षेत्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त

वेशन्द्रा

इना य ना शुर्थ है न न न स्वन न स्वा

विश्वास्त्रे भूत्र श्री श्रेष्ट्र त्योयात्य हेश्व हिंग विष्य विश्व श्रेष्ट्र वा श्

वह्रमानायायाधीमाल्मायायादी सुन्नानये विदेश देते हात् प्रमान्य सुर्वे यात्र वर्त्तेरार्टे। विष्ठानाविकाग्री अवस्थार वहुवा अव्वाकासन्दरका दि अवदः इस्रम् हे सुर्गायदे विद्यार्य विद्यार्य विद्यार्थ । विद्यार्थे विद ८८। श्रेट्यावियारयो अधर अट्ट्रास्थ यह्यायो से अया इस्र अट् वह्रमान्दरमञ्ज्ञात्वायाययाञ्चात्रमानियः विवासिये वदः मार्थे याद्रमा वर्रीराग्रारासुरान् वर्षास्य वर्षा से साम्यान स्वीत्राय वे सा ५८। देवायवाचेर्चेर्चेर्द्यान्द्रियानुर्द्याच्यान्यान्त्रा नवग'रा'र्रा क्रेश'तु'रवेर'गे'क्रेनश'श्री क्रेनश ग्रुनश नग्रनश' श्रीमाश्राचात्राधारायहुमारशस्त्रुराचात्राच्यात्राहु।स्यावनाधीरायादि। श्री पुरायदाय हुन श्रुन्य राज्य श्री यदाय स्था अदा यह ना स्था निष् यम् क्रि. म्या त्रे स्वा हे या घटा तयम्या या उत् नवमा या धेता वे या श्राचित हे । र्केट सेंट द्या

यहिमा उत्र से भ्रे अ तु स्तर्धि । यह प्राय विमा हे अ यह मा मा दि । यह मा अ

र्से.ज.भ्रेश.यी.रयायीर.याश्रमा

र्शेना ग्रीश्वर प्रस्ति । स्वाप्ति । स्वाप्

स्त्रित्त के अन्ता विश्व के अन्ति विश्व के अन्ति के अन्त

भ्रीया भ्रीयासुरान्त्रास्त्रायस्था

श्र्वाश्चा निव्दायायायश्चार्थाः श्र्वेत्त्र निव्दायायायः स्थार्थाः स्थार्थाः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्यार्थः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्थः स्थाः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थाः स्थार्थः स्थार्यः स्थार्यः स्थार्यः स्थ

सक्त मंत्री विषयान्त्री मान्न संत्री स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वापत स्वापत

चैदः बैदः से अः ग्राद्या वाव्य अः के स्वाद्या वाय्या अः श्री व्याद्य वाय्या वाय्य व्याद्य वाय्या व्याद्य वाय्य व्याद्य वाय्य व्याद्य वाय्य व्याद्य वाय्य व्याद्य व्या

यदा है। द्वी सुः संस्था सुद्वे दे रात्र हुव से दे रात्र यदा यदा सुवा र्रे त

न्सॅन्जी:गल्रान्सेन्:ग्रान्धीय:प्राप्येना:यहन:पःर्ने:ह्रयय:ग्री:र्यःर्नेयः गर्डराद्रमार्थारे मारादे सेरामे तसारे स्नामाण्य सम्बेगाद्र सार्श्वे पर्देगा र्वेग'सर'ग्रुस'नेट'ग्रे'स'क्स'ग्रेस'नहग'न्धन'स'ग्रुस'सर'नेदे'हेस'सु' रेस्रानवित्रायन्य विवार्षः रेस्रा विस्रान भरारी । विस्तराया सर्वेतः भेसा स्रम्भिम्याम्याद्यस्री यावयायाचीम्यायाधीम्यास्यास्या ८८.यादेश.सद.कूट.यी.कर.यश्चराश्चरात्रासद.ह्या.ज्.व्.य.सूं.व.सूं.व.सूं.वेश. रवःग्रीःद्वाःधेवाःवसूर्याः देःधेवःयरःगुवःवः व्यवार्याः वेदःग्रुवःव। क्विवः <u> न्रॅब्रःकःवःकेंशःग्रेःशेनःगोदेःन्रॅशःश्लेंबःशेनःकेव्यक्तन्गुन्ग्रेःव्यःक्वः</u> ग्रड्टर्व्याः श्रुण्या हे सेट्योवस्य देवास्य प्रदेशेट्यो दे रच हुट्यासुस यदे क्रूं न ग्री कर र्जे व यदे यावयाया धेवायया न या है या सहन पदे न वा धेवा धेना नसूर्या प्रते स्वते । यह न उत्ती । यो यो सर में न में द प्रतर हैं स यानवारे हिर्णेयाग्यर र् द्वे पर्याया व्याचिया व्याचिया व्याचित्र या स्थान वः धरा ने माव धेव हे। यव ग्री अन्तर्ज्ञिमा हु से र पदे न से र सर्जें व स्विन मुःसरावाधराने विवायने सून्

र्शायित्रायित्रायायाण्ये से सायदाम् सर्वेदे ते ते हेरायाश्वराया (श्वे

र्थे. (८८) वार्चे वार्धे शार्चे वार्थे प्राची वार्थे प्राच हे अव्यार्थि है अवकु से दुवा सेंदावा से साववाकु सर्वेदे वेदि है अवकु दा न्त्रानःक्षे (४४१) बरःक्रियः स्वयःग्रीः सेरः न्तः वितःक्रियः विः स्यानः उतः न्ग्रां विद्यां विद्या यदग्रायायाये द्या शुः हैं सेदावी देयाया कु सेंदा भवा शुराउवा शी थी वी नर्मेश्वरादानुष्ट्रात्रहुत्वरायरात् नर्गोत्रायदे तदाः अ । कनः श्रेत्रः ग्रीः ह्वेत्रः से केत्रसं नगदय गर्हेग्र संदे व्यय रहा ही रुषा वेश हरा था। हैंव र्रे सव्यः शुः वन्ययः द्रा ह्या वियः द्रा शुः ह्येतः नगदः वार्ने गयः यः र्डेगार्रे ह्वेंद्र नर्द्र नवेर थ्रं मेंटा वेश सहस्र राष्ट्री गार्देग्य प्रतः वर्ष लूर.क्रर.ज.र्जेथ.शुंश.गुं.क्षंतारं.लर.वर्या.श.श्रेर.चर.येश.त.स्शश. ८८। गे'ग्'सेर'र्यम'र्यम्थर्येनसेर्येन में प्रमान्हेर हे स्रानुदे प्रते सूर्य उत् र्हे त्यासनाम् अपने सायदे निवित्र सूरा स्रे वित्र के निवित्र के निवास के नि नक्कुःशुअःदुःध्रवानीःहेशःदशःतुरःनदेःवादःदवाःयःश्रवाशःहेःशेरःवोशः क्वें पर्देग्र गुरु प्राचित्रा क्षेत्र प्रश्र के लेश वया के स्वेद ग्राम वुरा हे सुरा ग्री:पर्र:भागवस्य:ब्रिं।

र्रे देर्द्र र्रे अर्थे व्यवस्थित्र विश्व विश्व

वुट नवे नु अधीव सं निव कु ना अय में।।

ग्वम् प्यत्। नर्व र्शे वि र्शे त्यं त्र के त्रे त्या वि स्व प्यत्ये त्याव त्या वि व्या प्र वि प्र वि र्शे वि र्शे त्या वि प्र वि र्शे वि र्शे

यदेनःश्चेः तुश्वः प्यद्वाः चित्रः श्वेः चित्रः श्वेः चित्रः श्वेः स्वरः स्वरः

মনমার্ট্রামার্মার্মার্মার্

श्राच्या स्थान स्

ॲ अ्ड्रेजि ह पहु

र्भायावि सम्बद्धार्म् या हेत् वहीत संदे र्रेत्। N. व्रच्याया सम्यया श्रेयया उदार्थेट्या ग्री सर्वेद्या श्राभवतःस्थाचारशःश्चानास्थान्याः क्रिया यःश्चित्रः प्रवितः प्रवितः प्रश्रियः प्रश्रियः प्रश्रियः प्रश्रियः शःसवदः विद्यादे द्ये र वर्षे दः वर्षे दः वर्षे प्रश्रा शःसमयःसेन्यते न्यो । यद्यान्य मान्या यांचेयारा निया यांचेयारा निया स्यापारा स्टी याहिरा सायांचेयारा। यात्रेया रहेया यात्रेया रहेया ख्या यदी याहे राज्य यात्रेया। हैंग'न्धेंन'अद्देन'न्द्रमार'वबन'हेंगश'सर'वशुर्गा हैंग'न्धेंन्'अहेंन्न्र'न्न्ज्वन्'हेंग्र'न्न्र'वश्ना ষ্বম্য অ'মাদ্রম'র ক্রিঅ'র্নির স্বন্ধারের বার্ন্তর্ম।

वन या अविश्व तु सुया निवे वन वर्षे न वर्षे मा चुर्यायाः ह्वायाः शुः नर्गो दावाः विश्वायः विश्वायः विश्वा चुश्रामःह्याः हुः नर्गे दः दः है । ह्याः वयुन।। वनानासुर्याभी प्यतायनायन्य सम्पर्दे न यवानास्य अर्थीः व्यवन्यवान्यवान्य स्टर्नि वेग्रास्त्रिय्यम् स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र स्त्रास्त्र स्त्र येगार्ची येगार्ची सास्रवत्र से दायेगा गशुरुशः शें गशुरः दें गशुरः नरः वशुरः दें विशा गशुरर्ने गशुरर्ने गशुर नर दशुर रे विशा ग्रद्भारुव पार्रा ग्राम्य र उवारा मार् শ্রদ:ডব্'ম'দ্দ:শ্রদ:ডব্'ম'য়'দ্দা मिट्यास्त्रीत्राक्ष्याक्ष्यास्त्रीयायास्यास्त्री हिर से द हिर कुद क्षा विकार के वा हि क्षा इट र्नेदे ट्या यो अ इट अ द शु : अट र र शा इट रेवि दग्या मी श इट व शु प्यट रहा। क्र्या. इस्र अ. क्र्या अ. श्राच उट्टा या से च ही राजि द्या क्षेत्राम्बर्धाः क्षेत्राम्बर्धाः स्वर्षा र्यः कें ग्रायः रा कें ग्रायः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः प्राप्तः

र्भः क्षेत्रा स्थः क्षेत्रा श्रन्दा में निर्मा शेष्ट्रिग्राश्योष्ट्रिग्यो दित्र वर्त्र प्रित्। शेष्ट्रियाः शेष्ट्रियाः वित्रियः प्रम्यः स्त्रा रेग्रथः दरः रेग्राः थः में कुः वः दरः व्येत्। रैवान्दररेवात्यःवे कुष्टन्सेद्या ने नविव कुषाह्याश विनादर कुषाह्या विना र्बेट्-क्याशः र्बेट्-क्याः श्रुयाशः निवेट्-श्रियाशा दे-दर-दे-वर्-स-सम्बद्धार्थाः संभी। नमेर्न्स् नहें न रहे या यह या अर्कें दादया है या है स्था ग्वत्यपरम्या अधी अर्वे स्वर्धि। र्शे से र स हो स है र से उद प्रमुद निया द्येर्व्स्ट्रिस्स्रम्याण्ट्ये प्रविद्र्श्रिमा श्रीमाया। मु नकु नग निर्मा हो द निर्मा भी ना हिंद्या। धि'मोदे'र्वेर-श्रॅं नश्यः द्वेर-र्वेर-नदे मात्रा र्थेव से दाया राम्य से वा पाया से वा से का सी वा पाया से वा पाया स वर्त्रेवासेन् क्षुप्तासे सेत् सुप्तास्त्रम् इ। नणवः वेरः द्ये न भगमा अद्गत्रमा कें वा वि धि'गोदे'नम्'न्यार्डस'धर'से भेस'मदी।

ग्राबुद्र स्याया गुव सिंद्येव द्राय द्राय द्राय स्या यावराष्ट्रमः साम्यागुरासित्र सी त्युमः विया। मुयः रंगः केतः र्ये अः अर्दे स्थे मुतः यशः गशुरशा ग्वित प्यट स्व सदे से सम्मे राष्ट्री सूट है। र्भः द्वो : चग्र र हु दः ग्रुव : श्रु र । स्रो र । स्रो श्रास्त्रवरमार्द्धन्याप्त्रावद्दिःग्रीं शुःविमाधित्। N'बर'नश्रुव'नर्डे N'यर्न'यर्श'रे'त्रु'वे भा। रास्ट्रेट तुर श्रीरा स्वीता रास्टर वर्ता में। यायदेरार्श्वार्श्वरावेतावायात्राहरू शक्षेट्र सह शरावे कुत शुर् सावश हसश शी। र्यास्त्रवर्षेत्रप्रम्यस्त्रप्रेत्युग्रम्थः श्रुट्रियः भेग। षासळर हेर्से यग्रा राते सुसारिं । कुन्दरक्षिंग्यययस्रिं संख्याद्रस्य धॅव निव के स्व के र नु र ने व के व अर्द्ध र भा। नश्रव पहें व छिन हें न श्रु कें से म शुर हे ग ठेशपान्ता

ग्वित्रव्हु से संस्थास्य सहित्रिये स्वाप्य वहुग्यी विशेषात्र स्था श्रुवे ८ रे रे द्धया निवेदाय विदाय वित्र निर्देश निर्देश महामान सम्मान स्थान स र्शेनामान्त्रन्थेन्याः भूत्रम्भूत्या । भेनाना ब्रामान्त्रेमानान्याने । विन्तः के है। न्याधिया नेयाय इसया ग्रीया सर्वेट ना उसा ग्रीया ने वा पर साम दिन वुर्यानाधिताया नेते धिरान् प्राची पहुणाना स्याया याया याया पहुणा यः इस्र अः प्रें अः यः क्षे व्य अः अः अवदः अः वर्षु अः यः श्रें वा अः वह् अः यदेः <u> न्वरशन्द्राचे अदे हे शसु ववर नदे हें व की नद हें न सामव में स्यशः</u> ग्रीसायेग्रासरमाह्रदायायन वेदाग्री सुग्रासन वेदाग्रसाद हेसाय ग्राम यर संस्कृत्या नर्हेर्पा सहेरा संस्कृत नर्हेर्पा नर्हेर्पा स्वर्ण संस्कृत स्वर्ण संस्कृत য়ড়৾৾*ব*৾৽ৡ৾৾৾৾৾৾৴৻ড়৾৾৾৴৴৸ৼ৸ৼ৾য়৸য়৻য়৾৽ৠৣ৾৽ৠৣ৾৽য়য়৻য়ৠৼ৻ৼয়৾৽ৼ৾য়৽য় केवे नड श शु वर्गु र नवे खें द हद खें द सर सर्वे र विदा मावद द द दे है यशक्रियानदेक्ष्यानद्वित्तवदेक्षेत्र। क्रियाची निर्देशितम्बर्दे स्थयः ग्री ख्राम्य निव प्रह्मा प्रम् गुर्दे । विय मासुर्य प्रम्यय वि रेगा मान्य ग्री दियात्र अधिव राषे या बुर याव्या अविया यदे या शुर विश्व भे । यदे रा केवायायायायद्वयायम् स्ट्राम् नुम्यायायायायायाया

भृतुते के नहेग्रा अया वर्षे व्याप्त स्वाप्त स

स्याक्षात्रह्यां यो विद्यां यो त्रह्यां खुव्यां ये क्ष्यां विद्यां यो विद्या

विश्वास्थार्थे त्याचा प्रत्या स्वास्था विश्वास्था विश्वास्था स्वास्था स्वास्य स्वास्था स्वास

ल्या विश्वान्त्रः भ्रम् । विश्वान्त्रः । विश्वान्तः । विश्वानः ।

यान्यत्त्रकृत्राच्यां विकासित्त्व विकासित्त विकासित्त्व विकासित्त्व विकासित्य

या श्रिन्यत्वाह्र अप्तह्रवाह्र अप्तह्रवाह्य अप्तह्रवाह्र अप्तह्र अप्तह्र अप्तह्र अप्तह्र अप्तह्र अप्तह्रवाह्र अप्तह्र अप्तह्य अप्

यक्ष्ट्र-सःश्रुत्यःन्वहःश्र्र्याः स्ट्रित्यः स्टित्यः स्ट्रित्यः स्ट्रित्यः

हेश जुः न है गा खेट शुंश हु क्टर न ते किंग्र ग न हिर्माय न ते र श्रुव र न न ने किं व श क्लें न श्रुव श्रुव न न श्रुव र न श्रुव र न न श्रुव र न श्रु

न्गु'न। इस'न्डे'न्न'क्षेण'स्न्। १ इस'न्डेदे'र्गे'न्न।

क्रिंगम्हण्यहार् हिंगाची क्रिंह क्रिंगहो नाव्यहार स्थान स्थान क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्रिंग क्रिंह क्रिंग क्

येश्वेयायाय्येर्वे व्यास्तित्याय्येर्यं वेश्वास्त्रेर्यं यात्राचीत्र्यं श्री व्यास्त्रेर्यं वेशः श्री व्यास्त्रेर्यं वेशः श्री व्यास्त्रेर्यं वेशः श्री व्यास्त्रेर्यं वेशः श्री व्यास्त्रेर्यं श्री व्यास्त्रेर्यं वेशः श्री व्यास्त्रेर्यं विष्यः श्री विष्यः श्री विष्यः विष्यः श्री विष्यः

कः निश्च स्वास्त्र स्वास्

धरा वावसान्त्र नश्चर्त्व शहे स्थाने स्थान है त्या है त्या है त्या है त्या है त्या है स्थान है स्था स्थान है स्थान स्थान है स्थान है स्थान स्थान स्थान है स्थान है स्

लर्। च्रवसःचुदेःश्चा वेशःह्रिन्चेन्ग्चे रचाने त्याच्रसःचुदेःद्रस्यः

स्विरः इवा हि त्विरः यदे श्चा क्ष न्यः देव स्वरः श्चे नः यदे त्वा व्या स्वरः यदे स्वर

श्चेरप्रद्यातुः श्चेरावी अदेः अत्रार्यायायायार्ये से इस्रया सुरात्त्र वक्क के लु व्येन सम्वास्त्र सामान्ता न क्षार्य होते । वित्र न स्वास श्चेत्रानः श्वेत्तान्यः वक्काः भ्वेताः वित्रायम् वित्रायमः वित्रायमः वित्रायमः वित्रायमः वित्रायमः वित्रायमः वि श्रेरःवी वरःदरा श्रेरःदरः क्षेवा वी वरःदरा क्षेवा दरः क्षेवा वी वरः श्रेरः र्शेर-सन्दर्भागरायहोत्रपिते देवात् स्टार्स्य मी स्नूत्वात्रस्य स्था सेवा यदे इस न्त्रे निर्देश सम्देश विन विन है निया सम्देश सुदे क निया ने दे ने स धरार्धेर् द्वेष्या देवे धेरार्वेर् ग्री भ्रूर् वह त्यवर होर् वहेवार् राया र्देव भी क्रि. इस प्रश्ने के क्रि. यह वाकारा रहें सामाधिव प्रमाप भ्रदाया वाकाय में सा र्वेत रा विवाधित है। दरेर ता अर रेवा हिंद यार ६ यी धेता स्वारायार यथ पर्यो हित देव द्वा है स्थाप याद व थे खेत हित स्वापाद व राष्ट्र नम्या वियासयायार्यसम्बर्धस्य रेस्या देवागुनग्रेन्नो बेरानादे हिंदा ग्रीयाक्षे नेया वेयादे न ग्रेंद्रायदे प्राम्नद्रायदे उत्रायायदा इयादि ।

गाःस्टः भुग्राशः ग्रीशः र्वेदः व्येदः सः निवः दे।

नेश्वास्त्रिक्षिश्वास्त्र निष्ठात्र नन्द्रायदेशः युवाया मल्दावस्व वर्षे अधि द्वर पु स्य नन्द्रायाष्ट्रम्सुयाह्रम्यायाणीः नहेत्। सुद्रयादी योग्यासु म्सु मानीः नहार्से द्राप्तिः गल्राधेताम्यात् देराधेराउधानहेंदायार्थेग्यासात्रीत्रयाद्वीतकुरा <u> ५२ दे दे त्य महिना कैना महिन्य कैना सद कैना मेन पद्री नगरित्र है स्</u> गडिगारुः थेंद्रावादा वेंद्रावास्य वेंद्रावास्य वेंद्रावास्य वेंद्रावास्य वेंद्रावास्य वेंद्रावास्य वेंद्रावास्य न्वीर्यात्र्यात्र्यान्त्रे नकुन्न्याव्याय्यायाय्येवार्वे । ने स्वात्यायाय्येवार्वे । ने स्वात्यायाय्येवार्ये येग्राश्चुर्द्दर्नेद्र्यी द्वार्द्वी द्वित्र्या सर्द्ध्द्या द्वार्य्य स्वार्थ्य स्वर्था स्वर्था स्वर्था स्वर्थ वरायर प्रमासे सेस्रा है। येग्रा सुराद्वरात्रा सुरार्दे व्या इसार् हेदे समय उत्ते केंगार्गे । इस न्हे सेन मंत्रे सेन में। । वेश इस नहे स हित यदे अन्य अने वा से प्रति है से प्रति है से प्रति स्थाप के मार्थ से प्रति स्थाप है से प्रति से स्थाप है से स् मी व्राप्त में स्थान में प्राप्त में प्राप्त में स्थान में प्राप्त में स्थान स्यान स्थान स ग्वम्। हुः भ्रे: रुटः हैं। । देः प्यटः ग्रथ्यः यरः यन् द्वा येग्रथः श्रुरः य। तुर्यः यदे अन्देन मुन्य तथा इस न्हे न्द्र सेविया है वा है वा है वह है नहें व धेव नश्राष्ट्रिया यार प्राप्ती क्या पठ पर्ती विया परि सर्वे या सुराया मर्था इत्रिवेशकेवाद्यारवर्त्त्युवाया वेदासूर्धीत्रस्यावेशस्य

वेशमावना मुः सेन प्राधिन हैं। निवे ही म सुस रु नवे हस नही निर्मे प्रस वर्धेशवश्राधितः कुरावी देवाश व्याप्त देवाश्राप्त ह्वाश वहुवा वी श्रेंब हे स्ट्रेन नसूत पाइसमा ते इसान हो निर्मेत स्त्रान हो से दार स्यान हेन पा व्यत्वेदियान्त्रीं स्वारं हे हिंद्र सेवेन्द्र में द्रसारा सासे होना प्रेया होन्या શુસ્રાફ્રગ્રસ:ગ્રી:ગાલ્દ:ત્ર:હંદ:ત્રર:તર્ગેદ:ત્ર:બેગ:ર્સેંગ્રસ:સદ:ત્રર:વશુર: विद्य भ्री:रन्यायाद्मस्यार्थेयान्यस्य भ्रीयायह्यायायाद्वीयार्थान्यान्याया <u> नर्वे त्रात्र्यायमेया मेन्या स्त्रात्रा स्वर्था मेया स्वर्धान्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्धान्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्याः स्वर्धान्याः स्वर्याः स्वर्या</u> धेवान्दरन्वाः भेवः हे या ग्रुष्याः श्रीवायाया वात्रवायायाया धेवः है। ।दे नेयात्र ते सुयाह्याया ग्री यात्र प्यते 'र्वे प्रश्ने प्राप्त हे स्ट्रेन प्रये हाता धेव सन्दर्भ द्या धेया इसस्य वे दे याहे स्र ग्री बुर वर्गे व्य धेव संदे देस ययर पर्देर वर प्रमुर र्रे । यार भूर भेर मुर हे भ्रेर या इस र हे र्रे यायहें वाद्वीं श्रामं है हिवाशायह्वां वी विद्यु हो। इस्राम् हे प्राम्ये श्राम् न्देशक्षान्द्रा अर्ड्सन्द्रा देश्यम् न्हें न्यावेशया इस्राया श्रीयाया या माना निर्देश ह्या या पहिंचा यो । भूत्रशास्त्राधारा भेरायाने नित्रामान्त्रामान्त्रामान्यामान्त्रामान्यामान्त्रामान्यामान्त्रामान्यामान्त्रामान्य क्रम्भान्द्राभेटास्या सुद्रास्त्रे हिन्य सम्मेन्त्रे विकाम्स्यास्य स्

निव-ह-येग्य अर्थे॥

नेश्वान्त्रस्थान्त्रीत्त्वश् श्रुश्चान्त्रस्थान्त्रीत्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्थान्त्रस्यान्यस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस्यान्त्रस

व्याः विक्रां के वाद्याः के प्रत्ये विक्रां के विक्रां

द्यान् ने नि क्ष्यान में नि त्या क्ष्या वि त्या क्ष्या वि त्या क्ष्या क

ने प्यतः तक्कित् प्रति अत्र अश्व गुन हिर्मेत् प्रायः भे द्वि । विश्व पत्र वित्र प्रति पश्चित् । विश्व पत्र वित्र पश्चित । वित्र पत्र वित्र प्रति पश्चित । वित्र पत्र वित्र प्रति । वित्र पत्र वित्र

१ केंगाः स्र राग्रेः में रिवा

श्रेरःक्षेत्राःग्रेत्राःग्रयः नुःसदेः र्वेत्राःस्रवदः तरःग्रस्यः हेः देग्रयः ग्रीः

म्बर्भाश्चराण्ये श्वारी श्वार

स्ता है संस्वर हे संस्वर निर्माण है संस्वर निर्माण स्था है संस्वर के स

धर। अन्यायक्षित्राचर्द्यायक्षित्राचर्द्रेत्राचित्रभ्रद्रात्रेक्ष्याः अन्यायः अन्यायः

स्वार्श्वे राव्यावार्यते र्हेन्द्वाविक्षेत्र स्वार्य स्वार्थे राव्याय स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्य

سح۱

याययः यटः र्क्षेयायः यथः द्वायः श्रुः द्वायः श्रुः द्वायः श्रुः द्वायः श्रुः द्वायः श्रुः द्वायः श्रुः द्वायः ययायः ययप्तरः यात्रयः श्रीः द्वायः श्रृं दः वश्चे द्वायः वेयायः ययप्तः यात्रयः स्वीयः स्व

न्धिन्धिःन्यादः ह्रेवः श्वरः नवेः न्यः न्याः न

वेश्वराष्ट्रात्ते क्षेत्राया व्यवस्त्र क्षेत्र । व्यवस्त्र विश्वराष्ट्र विश्वराष्ट्

क्यान् वे प्रम्मान्य प्रमान्य प्रमान्य

हेशतह्यात्यःह्रिंशसंदेश्वर्गाववर्ग्नरः उवा (१) श्वरः तशु

हेशयह्नानिष्णेने नड्ने संनिष्णेने नड्ने संनिष्णेने स्थाने स्थाने

प अन्यत्र गुर्भ

श्चर्यस्थिरेनेन्द्रा यर्देवरग्रीति स्वाप्यवस्थारीने सेवास्थ्या दु

चतः निर्देश नश्रू त्र त्रा चुर निर्देश कु अळ द्र त्या अवश्या विष्ठ व श्रू श्रू त्र विष्ठ त्या व श्रू त्य व श्

यद्या अत्या के स्वत्य विश्व स्वत्य स

धरणे ग्रेश्वा ग्रा है द्वा श्री विश्वा के विश

 द्वाश्रासद्धत्यार्थित्याययाः केराग्रीशायवेराग्रा इसार्शित्रार्थित्यायः स्वाध्यायः स्वाध

ध्राण्णे त्यो या त्या न त्या न त्या न त्या क्षेत्र कष्ट क्षेत्र क्षेत

(१) यः र्नेन्।

हेशतह्याधीयो नडुः इस्रश्यम्।

न्याध्यात्रेश्वर्यं न्य द्वास्य न्य न्य स्था न्य स्य स्था न्य स्थ

हेशयह्वावीयोग्यान् नड्याँ न्यान् स्थाय्या से न्यान्य स्थाय्या से न्यान्य स्थाय्या से न्यान्य स्थाय्य स्थाय स्थाय

स्वास्थाः के न्या स्वादे के स्वाद्ये के स

कें ते : म्याम्य : प्राप्त : स्वाप्त : स्वाप्

नश्चेर्य। यहेर्या नहेर्या महेर्यात्राचिया स्ट्रिंग् श्चेर्या वेयायाः स्ट्रिंग्याया नश्चेर्या।

यार्ने त्राची प्रमेर्ग्या स्वर्धाय स्वर्याय स्वर्धाय स्वर्याय स्वर्धाय स्वर्याय स्व

ने निवेद न् निर्देश स्त्री निवेद स्त्री स्त्री निवेद स्त्री स्त्

गुव'य'न्वाय'विशेश'य'न्न। श्रेवा'य'य'यहेवाश'वन्व'य'थेव'न्व'

गुरुष्यः न्वावः वाहेश्यः सन्दा शेरः वोष्यः श्रुवाः वर्त्वः संधिदः निवः है।
गुरुष्यः न्वावः वाहेश्यः सन्दा न्यवः सरः वर्रेः विवे वः धिदः निवः है।
ने सुश्चे न्वाहेश्यः सरः विवा सः विष्य स्थान् स्थाः हत्यः वर्त्वः सः धिदः निवः है।
है।

र्हे नरम्बन्धम्बन्धः नेत्रम्बन्धः न्यान्यः न्यान्यः न्यान्यः

नन्द्र मः धेदः देंदः है।

र्ने न्यरम् ब्रम्थायङ्ग्वर होत्रम् क्ष्यायः प्रम्थायः यासे सः यहुम् । यत्वरमः धेवर्ने वर्षे ।

बिरायाकुपदोवापिक्रायाद्या मध्ययात्रीं मर्गे साम्बुद्धाः विद्याक्षेत्रः मिन्ने साम्बुद्धाः मिन्ने साम्बुद्धाः मिन्ने साम्बुद्धाः स्वितः साम्बुद्धाः स्वितः साम्बुद्धाः स्वितः साम्बुद्धाः स्वितः साम्बुद्धाः स्वितः साम्बुद्धाः सामब्द्धाः सामबद्धाः सामबद्धाः

स्वयः मुः विश्विषः यिष्ठेशः यः प्राप्तः सर्वेष्ठं । स

सत्वाव मुन्निश्य प्राप्त कुल्य ब्राय प्राप्त प्राप्त के प्राप्त क

लिया वियामायदी नर्गे दावयाय होया नुया सकें वा वाश्वयाय श्रीनया शुः विया वियामायदी नर्गे दावयाय होया नुया नुया सकें वा वाश्वयाय श्रीनया शुः न् छे त्रह् ना खुला ना हैं में निर्म् अप्या है त्या ने स्था निर्म है त्या निर्म है निर्म निर्म है निर्म निर्म है निर्म निर्म है निर्म निर

प्यत्रभः तुम् वस्य मा स्थान्य स्थान्य

हिट्र स्टर्ड अन्य स्याद्ये स्वर्धि विद्या स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स

व्याक्ष्या व्याक्ष्या

ग्वन्यस्य भेर्तिः सर्वे स्वान्त्र्वे।

श्री स्वान्त्रस्य भेर्यस्य विभाग्यः विभाग्यः स्वान्त्रस्य स्वान्त्रस्

ग्रेन्द्रभेत्रात्र्योत्पात्रम् ने हिन्द्रभेद्रभेत्रम् नि स्वर्धः ने देश्यः स्वर्धः ने दि स्वर्धः ने वि स्वर्धः नि स्वर्धः ने वि स्वर्धः ने वि स्वर्धः नि स्वर्धः ने वि स्वर्धः नि स्वर्धः ने वि स्वर्

र्देग्रासंदेखसः दुः त्वाराः स्वा

यार्ने द्राची द्रिया विवाय प्राप्त प्राप्त क्षेत्र हा द्रिया प्राप्त हिन्द क्षेत्र हिन्द हि

श्चित्रः सर्क्षेत्रा निष्णा स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्य

श्चित्राश्चात्राश्ची विश्वायम् । विश्वायम्यम् । विश्वायम् । विश्व

यः शुःने रः नवीं अः यः ठेः ठुः रः नह्याः यदेः याद्र अः श्री

श्री त्रा वर्ष प्राचित्र प्राचित्र

यटा विश्वानित्राम् स्ट्री श्री स्ट्री स्ट्र

णटाशे हिर ह्वाश्व पहुंचा वी द्राप्त है। देश प्राप्त हिंदि है स्वार्थ प्राप्त है। देश प्राप्त हिंदि है। देश प्राप्त है

इस्य न् त्रे प्राप्त स्वाद्य प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्षेत्र

षरःशेरुशकें भ्रवशःग्रेर्वेर्वेर्वेर्वेर्वेर्वेर्वेर्वेत्र्वरः यिष्ठेश शुक्ते अर्थेया वळम्। वर्ष्ठ म्यान्य वर्षे अर्थ यिष्ठ स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स्थान्य स नन्दरन्जुःग्रेग्रायदेःश्वराधेताया श्वरतेःश्वरान्त्रः तार्देवेः सर्देः या वळर्ना भूग्रा के न्या के या विशाय है या है या हे या पदी भूर है या या इस्रशः क्री क्वें दिन प्रतेषाये प्रतिवा ति क्षेत्र स्वित मने दुर्धेन मित्र क्रिन् दुर्भेन दुर्भेन अल्य निया के यान्य सर्दिन डेशः ज्ञेशःसः प्यरः देः दरः वहर्षे । वळ रः वि.सु. त्रुशः विद्वार्थः हेशः स्रु सूर्वः दवाः ये विद्यान विषय वास्यय सुर् या विद्या से सार्वे वाया विया प्रिय विद्या से यहर्मानिम्युराया वर्षेत्रप्रेन्यान्या गुन्यानिम्युर्भिक्षायस्य पिते रुषः शुः शे प्रकंश पाने सुन में पानगा है शःग्रहः ने शः प्रशः पदि रुपाने । महेन्त्रा श्वारा सक्रासानवा मदे हुँ त्र र् कें र न में र स कवा

१ रट:र्ह्स्र प्रत्रं अपि प्रत्रं प्रत्

यशन्दर्ने अरकेद्रयातु अरम् शुअरम्विर्दे स्टाईद्रार्धेद्र द्वी अर

स्वा) विकास वित्र विकास वित्र विकास विकास

देशक्ष्यश्राश्चानविद्धं त्यात्रम्य श्री श्री हित्र विष्या स्त्रम्य स्त्रम्य

देन्त्वेद्वर्त्याः व्या चेद्वर्त्याः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विषयः विषयः विषयः विष्यः विषयः विषय

ग्रु:नवे:धुव:बेगागिवेर:न ब्रूट:दश्रा ने:व्य:ग्रु:न:ग्रुश:प:रु॥ न्रि:नेर:श्रृद:प:बेश:न्टा

 कः श्रुयः श्रीका निकान स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त्र स्वाप्त स्वाप्त्र स्वाप्त स्वा

(यर्चेत्रस्)रेटा सः रूजः धेः ब्रुचः (यद्विश्वः यं) यद्विशः वर्षाः विद्यः वर्षाः विवायः वर्षाः वर्षा

चर्यत्त्रम्) प्राचित्रम् अत्वर्तः क्रियः क्रियः प्राचित्रम् । व्यव्यः प्राचित्रम् । व्यव्यः प्राचित्रम् । व्यव्यः व्यव्यः व्यव्यः । व्यव्यः व्यव्यः व्यव्यः । व्यव्यः व्यव्यः व्यव्यः । व्यवः । व्यव्यः । व्यः । व्यव्यः । व्यः । व्यः

भ्रास्याञ्चात्रम्। त्रायापयाग्रात्रायाष्ट्रम्। हेरायादे हिन्। त्रायाया दरा शेरुश गुरुषद्वाय वेशरायशशुः गुः नद्देशशुः नवगः रा यिष्ठेशायशायाराविशाञ्चरावराग्चावे वा वर्षायो वश्यार्केरायूराया क्षेत्रा *য়ৢ*৾৾৾য়ৢ৾৽য়৾৽য়৾৾৾ৼ৽য়ৼ৽য়ৼ৽য়৾৽য়য়ৼ৽য়ৢ৽য়য়য়৽য়৽ৼ৾য়৽য়ৣৼ৽য়৽ৼ৾৽ৡৼ৽ र्वत्र्रिक्षे रमेरत्र लेट्यास्याया हे.यर. भरा रय. हर्गरा सर्क्ष्या. हुःसहें स्। गुन्द हुः वेस। वेस सँग्रास ग्री एस सन्द ग्राम प्राप्त निर्माणित यदे हिर्दे विष्णमहिराय दे स्रम् हुर व दे हिर्द् शे वर्गे हे। द्येर व लूरश्रायायात्राता लूरश्रायाविय। गीयायाया गीयाताविय। दुशायहूरा यदे अन्य श्रा धें द्या दर गृव वेया या दे वार धेवाया वेया या दा वाया यात्यावेशासदेर्देवर्त्वर्धेर्यात्रा यशान्दर्धः यश्निराध्यादेर हिन्न् से प्रत्ये सूर्या । से बन्य लेश माने सूर से विषय सूर हिना पीता नशक्षेत्र क्रिन खेन खन्य श्रे र देश राधित रश्यान श्रे वन रावेश नहेंन 到

स्रिमानिक्रमास्य वालमास्राक्ष्या द्वीःस्यात्त्वा मायाक्ष्या विमान्ता धाः स्रिमानिक्रमास्य वालमास्राक्ष्या द्वीःस्यात्त्वा मायाक्ष्या विमान्ता धाः याहेश्वःसरः वावशः विद्याः विवाशः इस्ता विश्वः प्रतः वार्धेशः वार्थेशः वार्येशः वार्थेशः वार्थेशः वार्थेशः वार्येशः वार्थेशः वार्येशः वार्येशः वार्येशः वार्येशः वार्

त्रियः संस्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्

इस्र प्रश्चे मिहेश्या विषय वर्षिया वर्षिया वर्षिया वे क्षेत्र प्रति हित्र प्रति हित्र प्रति विषय वर्षिया वर्ष्या वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्ष्या वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्ष्या वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्षिया वर्ष्या वर्या वर्ष्या वर्या वर्या वर

क्यान्ते निवानि निवानि

निर्म्य विद्यान स्थान विद्यान स्थान स्थान

क्यान् ने नित्र न्या हे ते नित्र न्या विश्व नित्र न्या ने नित्र न्या विश्व नित्र न्या के त्या नित्र न्या नित्र न्या नित्र न्या नित्र न्या नित्र नित्र न्या नित्र न्या नित्र न्या नित्र न्या नित्र नित्र नित्र न्या नित्र नित्र नित्र न्या नित्र नित्र नित्र नित्र न्या नित्र नित्य नित्र नित्र नित्र नित्र नित्य नित्र नित्र नित्य नित्र नित्य नित्र नित्र नित्य नित्र नित्र

ने 'हेन' है। यश्रान्त हु जा वाहिश में जी हे वा कि पह हैं है निया प्राप्त है निया के वा कि पह हैं है निया प्राप्त हैं निया है निया प्राप्त हैं निया है। निया प्राप्त हैं निया है निया है निया है निया है। निया है निया है। निया है निया है। निया है निया है। निया है। निया है निया है। निय है। निया ह

डेश्यानम्बाश्याधित्यश्यति। श्चित्यः यात्रावश्यास्य स्वर्धः श्चित्यः वित्रः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्व यदः स्रेत्रः सदः द्वायः प्रायः वितः प्रः श्चित्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर् वर्ष्ठेत्रः सदः हर्ते।

ब्रायाचीश्वास्त्रम् वर्षा वर्षायाः वर्ष्णः वर्षायाः वर्षायः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायाः वर्षायः वर्षा

क्यान्त्रे निवानितान्त्री या के निवानितान्त्री या के निवानितान्त्री या के निवानितान्त्री विवानितान्त्री विवानितान्ति विवानितानित्री विवानितानित्री विवानितानित्री विवानितानित्री विवानितानित्री विवानितानित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्री विवानित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्री विवानित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्री विवानित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्रीतित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्री विवानित्रीतित्रीतित्रीतित्रीतित्यान

सर्हेन्-न्रेन्-भूनश्राग्री-न्र्ग्नेन्-सर्हेना-य-सुना-प्रह्मयावेश-य-विश्वाया ग्रेन्'सह्न्'स्रावद्र'सव्यास्रॅं'केशाह्रसान्ग्रे'नवि'नर्न्नन्नाया स्रावसारा पि.श्रेय दे.ज.ज्येयाश्रञ्जर.ज्रेश.श्रुंश.बीश.बीश.बीश.बीश.ज्याय.याय.त्राय.वरी डेशन्ता धुवाहिन्यम् इत्याद्यम् हेन्या होन्या <u> ५८.५चेल.चढ़.ऱ्रेच.लश्चालील.ट्रेच.क्रे२.२.च्रेच.स.च्रे.वोचवा.ह्रेश.वीट.</u> हेंग्रायराञ्चायते भ्रीत्रायी धुवाया ह्या प्रीयाव ह्या प्रायसा देशसेन्दे वेशनगवन्तर्रेवस्त्र वदन्य स्माध्यान् सुर्मा सर्केगायायत्रमदेरकेट्र्र्र्न्येव्सर्केगायाध्यापक्षयावेशस्य विवागीया श्चारे। श्वामात्यापान्यान्यान्यान्यात्र्याम् हेन्यान्यान्याः न्यश्र युष्ट्री युष्ट्रा युष्ट्रा अपी याभ्यत्मस्यस्पर्मे राजायाने वितर्वे। वेशःश्चेरः नहरः न्येग्रायायायायायाये नरःश्चे त्याश्चरः नवेर नवेरः यानर्गेन्यान्या वार्यात्र्वाणा वार्याक्ष्याणा वार्यश्चाणा वेषायर्वेगा गश्याग्री भुन्य दर्गे निता वार्ये गुन्य सङ्घार्मे विष्ण स्वायाय विषय यदियाः क्षेयाः देः दर्ग अग्राः अग्राः अग्राः या वर्षः वर्षा याः अयाः अप्राः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्षः वर्ष निःश्रमा उत्र हुर क्षेत्र म्याम्य या द्वस्य या दे । प्रविद द्वा व स्थे म्या प्रके प्र वर्से स्थू निषे से ग्राया प्राया विषयि दे निष्ठ वर्ष का स्था भी येग्रथाश्वराष्ट्री द्वराद्ये जिल्ला केरा स्ट्री विराधा स्ट्रिया प्रक्रिया स्ट्रिया स र्देव त्या श्रु र न या डे या ग्यार अर्थे र सु अर दी । वि रहें न के व से रशे ही त्युया

मेश्रास्त्रान्त्रान्त्रम् स्वात्रान्त्रम् स्वात्रम् स्वात्यम् स्वात्रम् स्वात्यस्वस्वत्यस्यस्वत्यस्वस्वत्यस्यस्वत्यस्वत्यस्वत्यस्वत्यस्वत्यस्वत्यस्वत्यस्वत

न्त्रविष्णा भवास्यस्य विष्णा क्षेत्र क्षेत्र विष्णा विषणा विष्णा विषणा विष्णा विषणा विषण

यायाने अन्य निर्मे क्षेत्र प्राप्त क्षेत्र क्

ह्ये र निर्माणक्ष्य निर्माणक्ष्य निर्माणक्ष्य निर्माणक्ष्य क्ष्य निर्माणक्ष्य क्ष्य निर्माणक्ष्य क्ष्य निर्माणक्ष्य क्ष्य निर्माणक्ष्य क्ष्य क्

देरस्य वर्ष संक्षेत्र प्रमुख्य स्थ्री व्यक्ष प्रमुख्य स्थ्री विका वर्ष स्थ्र स्थ्र

स्यान हो नित्र प्राचित्र प्राचित्र

यात्रश्याविःह्रश्रास्त्रव्याची यात्रश्यातःश्चित्रस्त्री श्रायः ह्यासेत्। यदे : तुःस्री यात्रशःस्यात्रास्त्रः तुःस्रे : द्यायाः श्चास्त्रः स्वर्धः स्त्री।

यशन्दान्तः श्री श्री स्थान्ते प्रति । स्थान्ते । स्थाने । स्याने । स्थाने । स्था

सत्याबुर्न् सम्भास्य वित्र क्षेत्र क्

यहेरान्येरावर्हेन्। वाश्यावरानेश क्रिंग्ड्राव्यावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्ययाहेन्। वाश्यावरानेश क्रिंग्ड्राव्यावर्षेन्। श्रेणावरान्ये क्रिंग्ड्राव्यावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्वेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्यंन्वेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्षेन्वेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्येन्वेन्। श्रेणावर्षेन्। श्रेणावर्येन्। श्रेणावर्यंन्वेन्। श्रेणावर्यंन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्वेन्यंन्वेन्यंनेन्वेन्। श्रेणावर्यंनेन्वेन्वेन्यंनेन्वेन्वेन्यंनेन्वेन्यंनेन्वेन्यंनेन्वेन्यंनेन्वेन्यंनेन्वेन्यंनेन्वेन्यंनेन्वेन्व

श्चर्यः विश्वर्यः विश्वयः विश्वर्ये विश्वर्यः विश्वर्यः विश्वर्यः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्वयः विश्

श्रुश रवः हुन् वित्राहुन वित्राहुन वित्राहुन है । वित्राहुन वित्र

धरः द्रम्यः नुः यद्गा धेवः यरः यद्गा र्रे : अळ रः नुः यद्गा (यदेः गाश्रुयः श्रुॅदः यथः ग्रीः यद्गाः द्रद्यो धेवः यरः यद्गा रें : अळ रः नुः यद्गा (यदेः गाश्रुयः

सः क्षेत्र प्रमान्त्र स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

ने हिन्धित सम्माश्रम्य । श्रुम्य श्रुम्य । इत्राप्त स्थित । वर्षेत्र । वर्षेत्र । वर्षेत्र । वर्षेत्र । वर्षेत्

शे हुश दे हिन हें त परे क्षेत्र श्री के ते हिन हैं ने श्री ते हिन हैं ते श्री के ते हिन हैं ते परे के ते हिन हैं ते परे के ते हिन हैं ते है ते हैं ते है ते हैं ते है ते हैं ते

यद्भः हुन व्याप्ताविः देवादिः यद्भः यद्भः यद्भः विश्वः यद्भः यद्भः विश्वः यद्भः यद्भः विश्वः यद्भः यद्भः विश्वः यद्भः यद्भः

ई:रेट:नवे:श्रुश्रावशेषात् देश देव:श्रूर:वःश्रूटः। श्रूट:श्रूर:गिरुश्रः गार्नेव:यःर्ग्यवेव:श्रूर:पवित्रः वेश वेश प्राप्त के विश्वाच वि

रु:र्से:यम्। यदेम्हारु:यम्। यदेम्हारु:यम्। यदेवार्यः स्थमः स्थमः

नडुःना क्षेःश्वःग्रीः इसः न्रो।

हेशतह्याधायो नड्डेन्या भिन्दास्त्रम्थायायदे लेशन्। भिन्दास्त्रम्थायायद्दास्त्रम् मह्रम्याद्द्रम्थाय्यद्द्रम्था नह्रम्याद्द्रम्थाय्यद्वा भ्रम्याद्रम्यायाय्यक्त्रम् भ्रम्याद्रम्यायाय्यक्त्रम्

हेशत् वा ने श्रे ने न्य क्षेत्र ने क्षेत्र

शे. हुंशः हे शः दह्यां न दुवे न्द्रः सँ नाहे शः हे ना न्द्रं श्राः श्राः नश्रुवः न्युः श्रुवः हे ना न्युः हे ना न्युः हे ना न्युः हे ना न्युः हे न्युः हे ना न्युः हे न्य

अन्यत्ति त्वेयान विश्वास्य विश्वास विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य विश्वास्य

षरःग्रीःदरःवीःश्रॅवाशःश्रेदःक्षेवाःवीःवरःदःष्पॅदःक्षदःद्रवेवःश्चःष्पेदः

क्ष्मामी क्रुव प्रस्ति व्यव प्रस्ति विश्व प्रमानिव क्षेत्र विश्व प्रस्ति विश्व प्रस्ति विश्व प्रस्ति विश्व प्रमानिव क्षेत्र विश्व प्रस्ति विश्व प्रस्ति विश्व प्रस्ति विश्व प्रस्ति विश्व प्रमानिव क्षेत्र विश्व प्रस्ति विश्व विश्व प्रस्ति विश्व विश्व प्रस्ति विश्व वि

यदा मिल्दाळे वार्थे द्वाया क्षित् क्षेत्र क्ष

न्मे न्हें न्दी

द्यास्त्रित्व्यामी याद्यासी अत्यक्ति व्याप्त्र विष्ट्र विष्ट्

नदुःगडिगाःम। होन्ःमदेःश्वा

ने किन्या के निक्र निक्र मिन्स्या। विन्या के स्वरूप

म्राह्म भ्राह्म प्राह्म । विष्मु विष्मु म्राह्म । विष्मु म्राह्म । विष्मु म्राह्म । विष्मु के प्राह्म । व

क्यान् श्रेष्या श्या श्रेष्या श्रेष्या श्रेष्या श्रेष्या श्रेष्या श्रेष्या श्रेष्या

हिन्श्चिश्वान्यम् अन्यत्वान्यम् अन्य प्रम्याः स्त्रा । यात्रवाश्वान्य स्त्रान्य स्त्रान्य स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्रा स्त्र स्त्रा स्त्र स

 इत्याहे स्वराधिता विदेशे से प्रमानिया के साम्याधिता के साम्याधित के सा

क्र्या.लुच.च्री। बाचका.ब्रीका चया.लूट.ब्रीका बुका.च.इमा.ख्रा.च्रीका.ब्रीट.च्रीट.ख्रीका.क्रीका.क्र्या.ख्रीका.क्र्या.ख्रीका.क्र्या.ख्रीका.क्र्या.ख्रीका.क्र्या.ख्रीका.क्र्या.ख्रीका.क्र्या.ख्रीका.क्र्या.ख्रीका.च्री

न इःगहेशःम। क्षेमाः मुन न्दरसूरःम।

क्र्याः भेषः योष्टेशः परः सूरः प्रमा

ग नर्रेशःग्रीःनेत्।

र्गेट्ट्रान्न्ट्रायदेष्ट्रोयः श्रुष्यश्राणायेट्ट्योः द्रान्ट्रा व्याश्रायः

नस्र्वासंदे भी माश्रुस श्री खू भी भी भी श्री सात्र साहे सादह्या महिसारा ह श्रु र नशःग्रदः पदः पदः मश्रु शः ग्रु नः पदे दे सश्रु नः पदः शे सञ्जू नः पदेः क्रुंगाक्चेंब्रगिष्ठेशार्ट्रा क्रेंट्रग्रंक्सश्राश्यात्यीं रात्री । देशासरार्ध्र रायह्रेट्र यात्रा

ग्रुग्रागुर्स्स्र अव्यव्येत्रागुर्वेग्रा

नर.लर.श्रें र.ज.च.लर.भें श्रा

में रायर अर्घ के देश ग्रार देश।

विरापास्य मुन्ते नावि नाठिनानी स्रेट्स मुन्द निर्देश के रामित्र स्ट्रिंग कैंग सहें अ धर हो र धरें।

रोर-श्रु के प्यट महित य श्रेरा।

यहंदःम्याया अस्य म्यान्य स्था

<u>षि'न १९ 'यह अ'यद 'विवा'य हुन।</u>

ठेशनाः भृत्यः ते नावि नावेना नी भेटा शे समुत्र मिते केंशन विश्वास्त्र

वेटा केवासहेशस्य होट्रस्या

वर्रे हे सुग नवर धेर तथ वर्के न इर ग्रूट न न

इंशन्यत्तर्स्ट्रिन्ने विवास्यवर वर्धेन्ने॥

गर्यागुर्यान्यान्याने व्राप्यान्यान्या

वेशमाक्ष्यं तु ते विन्यावि न्दा विन् के राज्या कु न्दा वर्षा नुष्या

र्धेव 'नव 'नम्' र्धेव 'नव 'उव 'र्शे या शक्ते या 'र्यो मिने श्रे था 'या मिने श्रे था मिने हैं न 'र्सेन 'र्सेव 'र्सेन 'र्सेन 'र्सेव 'र्सेन 'र्स

याववः त्याः चक्षुरः त्रवः श्री श्री विश्वः स्त्रे त्रां स्त्रे त्रां विश्वः स्त्रे त्रां त्रां त्रां त्रां त्रे त्रां त्रां त्रां त्रां त्रां त्रां त्रां त्रां त्रां

श्री मुह्न स्वाद्य हिंद्र प्राय्य है स्वाद्य है स्वाद स्व

प अवदः न्धुनः भा

याक्षेत्र। श्रें इस्रया ग्रीयाक्ष्य वर्षे । क्वा पार्रा पार्य प्राप्त । विश्व प्राप्त वर्षे या वर्षे

क्षेत्र-त्व्रिक्ष-प्राचित्र-व्यक्ष-प्राचित्र-प्रचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्रचित्र-प्राचित्र-प्रचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्राचित्र-प्रचि

बुःशुःर्वे के त्र शुःशुःशुःशुःश्वा या या या विश्वा स्था या विश्वा क्षे या विश्व क्षे या

गर्भर हिंगा शुरायमेया द्या अश्वर प्रते क्षेत्रा मुद्र मी द्या भेगा

श्री विचाना ते श्री त्याप्य न्य न हीं न स्थान स्थान न स्थान स

নত্ত'নাধ্যম'শা শ্বুনা'নতমা

यःर्नेवःशुःषःशुःश्चेशःवश्वा देःषःगशुःशःगशुःग्दः देःषःशुःशेःगशुःशःगशुःगा देःवेःशुःगःसदःद्दःशुःशुःगा देःवेःशुःगःसदः

ग नर्रेशःग्रीःनेत्

सुया दुं निते मालु दाय संभे भे भो मार्ने स्था सुवा निते स्था है साम्या है साम्य है साम्या है साम्य है साम्य

दर्न त्या निर्मान स्थान स्थान

ग्वित प्यता श्रुः श्रीं सर्वेत काय श्रास्त्र स्था निव्य प्यता श्रीं मान स्था निव्य प्यता स्था निव्य प्यत्ते स्था निव्य प्रत्ये स्था निव्य स्था न

प अन्दर्भुर्भा

बेर्योत्रस्मित्रस्य द्वा भूगा नडमः शुः वे सः पदे सः सर्वे दि । पर वह्रमानी देव प्येव प्रमा मान मान स्वाप्त इसमा ग्री सबम सदे प्याप वहुमा र्वेन:रुट:नर्यात्रा क्षे:वेय:क्षेट्रान:र्टा व:राय:ग्रास्यात्रीय:ग्री:सवर:र्ट्याः र्वेन प्रते द्वर मेथा हे मुर र्श्वेर च द्या द अ महिराया पर प्रह्मा शे वर्षेन प्रश्नु स्र श्रुव दे दिर हे श्रुव राज्य वे विश्व दि विश्व द वह्यासाईनाळ्यादी सुवसाग्चीवसार्सेग्रास्त्री दर्शेसाया धार्यो न त्तुव र्रे रा सार्वे रा प्रवास के रहुं प्रयापसूर्य पा प्रवास से प्रवास स्ट्र से द ग्रथर:न-१८:२:अ:ग्रुथ:बूट:र्टें। विव:क्षेश व्या:नठशःग्री:ब्रेंने:पःर्देवः ग्री:शु:धेनानी'धु:धेशन्यशञ्चन'सर्माश्चर्याश्चर्याश्ची शुक्षःह्रम्याशःग्री:द्रियः नश्रूव-५-अ-गुर-नदे-अदे-अद-अद-वह्मा-अश-श्रुव-धर-अ-मश्रुद्रअ-धदे-धुर-वः विवासितः प्राचाया स्वया व वर्गेना हे द छी के ना नी हैं या या या हुया ये।

न इःनविःन। वर्गेनःसून।

हेशतह्याधीयो न इसे ला

इगम्भुरक्षेत्रभूर्धिता

ग न्रेंशःग्रीःन्त्र

र्गेट्र श्रूष्य हे श्रायह्यायी थियो न इं र्ये श्रूष्य था हे श्रायह्या यी श्रुष्य श्रूष्य श्रू

दे । प्राप्त त्रीत्र पार्वे साथ प्रमायविष्य विषय विषय हो । के स्वयं स्य

सूर्या स्वाधार में स्वाधार स्व इस्त्र स्वाधार स्वधार स्वधा

हेश्यान्त्रः तुः तुः द्वीः विश्वः स्वान्त्रः व्यान्त्रः विश्वः व

प अन्यत्र गुर्भा

श्ची स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वाप

र्नेत्राक्षः स्वर्ता के स्वरं स्नूनः में न्या के स्वरं स्नूनः स्वरं स्व

वर्डे थृ व व व द्वार सिर्या

हेशतह्याधायोग्वइःर्वेषी। नविःनःन्युःनायःयःवङ्ग्। श्रुमःनःवज्ञुम्।सम्यःयःयेदःने॥ नयमःन्मःश्रुनःययमःनेःनविदःर्वे॥

ग नर्रेशःग्रीःनेत्

इस्रायह्वायो प्ये प्ये प्रवृत्त स्थित स्थायह या यहिया प्रवित्त प्रे प्रायह या यह स्थायह स्था स्थायह स्यायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्था स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह स्थायह

में बिश्वास्था स्वास्था स्वास्था स्वास्था व्यास्था स्वास्था स्वास्य स्वास्था स्वास्

न्यवाःचश्रसः स्वेदःवश्यः व्यव्यक्षः व्यव्याः । न्यवाःचश्रसः स्वेदःवश्यः व्यव्यक्षः व्यव्याः

हेशन्ता व्यापित्रश्रुता वराष्ट्रत्यशाववशा वेशप्राक्षत्यः अर्ट्धेनर्देश

न्यान्य निर्मा निर्मा

सर्हें दावदाधीत हैं विश्वास है हुश द्वार नहें।

सूर्या वेश्वास्त्र न्या वेश्वास स्वास्त्र न्या स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्य स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्वास्त्र स्व

न्। न्। न्।

म्रो नियम्बर्धः व्यास्य स्थान्त्र । स्रोत्या क्षेत्रः स्थान्य स्थान्त्रः व्यास्य स्थान्य ।

यश्रास्त्र प्रमान्य प्रमान्य क्ष्य विष्य प्राप्त क्ष्य क्ष्

य्यामाश्चात्येत् कुं प्येत्त्यात् देश्यामाय्येत् वित्त्यात् वित्यात् वित्त्यात् वित्त्यात् वित्यात् वित्त्यात् वित्त्यात् वित्यात् वित

प अन्यत्युर्य

इनिरेन्स्यान्त्रम्या ययाञ्चलरसून्यायात्ह्वान्वीया प्रश्नु र श्रुव र श्रु शे पर्दे द निवेद द दे दे हे श शु प्रत्र । अप्रश्नाय प्रश्ने द प्रा श्रे द अद रे क्र्रेवा गर्भरः र्नेगः रूटः ग्रीशः र्मेटः यशः द्वीवः प्रदेश्वरा बटः यशः श्वटः ग्रीः नम् वेशम्यस्यविश्वम्यम् निम्निम्यम् निम्निम्यम् निम्निम्यम् निम्निम्यम् विग्रायायायाययायरहेंगान्धेन्यावराद्वययाद्यायने वाप्तान्धन होत्रप्रें अपने अपने अपने स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वाप्त स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत स्वापत यमा वर्गाय: बेगा मे मा समा मुस्ति । सा वर्गाय वर्याय वर्याय वर्गाय वर्गाय वर्गाय वर्गाय वर्गाय वर्गाय वर्गाय वर्गाय वर्य भ्रे प्येद : के शास्त्रा वर्दे : विं वया केंद्र : सदे : द्रोत्र : वर्दे द : देवा : वर्दे या : द्रोत्र श्रे वा विभाद्रा रें देरानानर्दि वस्तानसूत्र वहें त्री सुसावने वार् प्यरायसा शुरुत्यर वहें वा व खुः धेद के राजेदा वहे वि ववा केंद्र यदे वर्ष शुरु शूर्केगामी र्ने नहें राखेंदान लेगा सामसामा खेर्न सहर मर लु। लेस

ই্রমান্ত্র

गुव नवर नर्गे दश कुव न् इन प्रे ने विष्ण यश में न है। के विष्णे धियो द्वेट प्रमा यश स्वामा प्रमास्त्रीयामा वर्षे वामा विमाद्युर नश्रादानेवे वा धीवा न्दर र्श्केवाश्राची नम् स्वेवा से न्या चुरु व्याप्त या वा वा वा मश्रम्द्रामात्यश्राश्चर्मनामानेश्वरादे द्वेराम् विशामश्चर्यायादि दे रेव वर ग्वल प्र अंद प्रदेगा शुर दुर्गे द्वी शर्शे । श्विर श्वेत श्वी प्रे पो क्रेट.च. इस्रमास्य दे वास्टायादे वस्टा द्वामास्य वास्य दे प्राप्त हे वासास्य यःश्रेवाश्वायश्रक्ष्याश्राद्या यञ्जेवाश्वरायःश्रेवाशः वेशवत्रुटः नः इयशक्षे मान्द्रभान्ना सं वितासि केन न् न् न् न् र सं मार्थ केन न नन्ग्रायराम्यायाया अत्यायरान्यत्याय्यास्य सहत्यिः हेरा दशने न्या से वर्षे या सम्या सम्या स्वा स्व प्रा स्व व स <u> इरजी न्वरजी अन्त्रः अपरने सूरजी अन्य वित्र के हिरले अन्य अर्थे।</u> खुः रुवि हैं दिर दर पुतर हैं र त्र र हैं त पवि पात्वे पी पो हैं त सर्दे पावे र यशःश्रुम्यारायश्यम् राष्ट्री वेरायशःश्रुश्मिराग्रीःमें दः नुःश्रु रायदिः वर् के 'वें र रे र र पे व के

न्याः भेयाः स्थ्राः स

क्षें वर्षा केवा वरेत है भूर वरीता ने या वात भूवे त्या शुष्य श्रीवाय पर यःश्रेष्यश्वेश्वाद्यदेश्यश्चाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः विश्वाद्यात्रः त्रूट्यात्र देया है। द्रोरात्र शुर्क्ष द्राची वार्या द्राची वार्या वार्य वेशप्रदेप्दर्वर्वर्थाः शुःद्दर्वे वरुषाः शुः क्षेत्राः श्रेत्यर्थे व्यवस्थितः प्रथाने स्थेद्रायरः श्चाळद्गत्रें वार्शे नरुशायानस्वत्रा वेशास्त्र मात्रा वेदा यदे भूत्रत् वायम्यायार्थे वियामा सूराषा सर्दे नयाया सार्वे द्रासरा यग्राश्चर्भाग्वेग्।सुर्याग्रह्मां केंद्रायह्मा गृत्येवे सेह नर्सुग्रयस्ययः ह्या अर्दे विश्वास श्रवाश द्वा य श्रवाश विश्व गादे स्मूद देंद द्वा विवा नश्राम् भेषार्शे । धिमाकः दम्म स्थार्श्यम् विषान्ते सान्ते सान्ते सान्ते स्वति । इत्राक्षेत्रायशान्त्रात्व्रात्वेदार्शेषात्रात्राः । त्यात्रात्रात्वे विष्ट्रेत्रात्वे विष्ट्रेत्या क्षेत्र । विष्ट्रेत्या विष्ट्रेत्य श्रियाष्ट्रस्यान्यम् श्रुम् । भ्रम्ययायाम् यार्थिन् ग्रम् स्वीत् स्वत् यदे द्धया गृहेश के शासर ग्रास्त्री निर्मात्वा निर्मा निर्मा हिंदा या से मारा स्था ख़्र रेग रु ह र बुदा वेश य द्वा हर्ने र सेंग्र सुग्र मेंग थेंद र सेंद यर्गेर-देर-श्रेंद्र। वेश-धयः भ्रद्र-श्रेश्यादः क्ष्र्य-वर्हेद्र-श्रद्धः केवा प्रासेदः राष्ट्रातुर्वे । देवे भ्रेरायार्थे ग्राया वेयायवे भ्रायया ग्री सूर् केंगा गी गर्थे केंद्रे देरः यरः श्रें ग्रायः श्रुः धेरः श्रुः श्रेरः श्रेतः श्रुः ग्रियः व्या । देः धेरः प्रदेः श्चनः हो न श्वरः रनः इससः श्वा न विनः न विरः स्टर्सः सदेः सबर वेश सँग्राय द्रा वेश द्रा वेश सँग्राय सँ। विश्व द्रा वेश सँग्राय

श्रुभः त्रिः त्रिः त्रिः त्रभ्रम् विभाव श्रुमः यह वा विभाव श्रुमः यह व

द्वाःकुषःचन्त्रःभव्यःभव्यः भ्राः भ्र

केते हो र ले त्वा र त्य हो र त्य हो र त्य हो है श्रे त्या श्रा र त्य हो र त्य र र

न्वीं अप्यावीं दानु निष्ठ निष्ठ स्थित स्था

श्रीयश्रात्ते स्ट्रीत्रात्रे त्रियात्र त्रियात्र विकास्त विकास वि

भूनश्रादित्यम् स्थित्त्वर्त्ते त्यस्य स्थित्त्वर्त्ते त्यस्य त्र स्थान्य स्था स्थित्त्र स्थान्य स्थान

देशक्ष्यभाविष्यभाक्ष्यभाविष्य

र्शेट वर्गानाट क्षेत्र नग्र न उद्दान्त्र या शुक्ष सहित्य क्षान तुर ही द्र ग्री:ह्रेश:शु:यश:शॅग्रावेश:यान्यु:यर:यत्री:यरे:क्रुव:रेश:ग्रीशः१अशः वयायार्थेवायासुरवश्चरा देवे भ्रिसभ्री द्राह्म स्वयावश्चर विषय नश्रुव ग्री ग्रिट र्दा याप्य पार्स सिंदे न इस्य राहें या इस्य राह्य या सुदद या र्सेग्रस्त्रियायायार्द्रियायाययार्सेग्रस्त्रियायात्रेयायात्र्ये साम्याया गवर्गावे रे पेवर्वे । रेशवायश्चा सूर्यायर वहुगा से वहुगा निवर मंदे अळ्यम सु द्वोव चेट सूँ व स इसम के या मया विस्त सह द मा दि। यायमाञ्चार्सिदी वयायाद्धरावराञ्चनायाधेवा वियापार्वमानुमानुरावया यशःश्रुश्चन्यमः वाह्रवः क्षेः वह्रवाः यमः वर्षेतः यः प्रायः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः व्यव्याः ष्रिया ग्रुषा ग्रुटार्दे व 'द्रिका या सारे वा 'सदे र्ट्सेन 'या वदे र वे 'सु द्राय था पा प्टा श्रे प्येत्र केश्या वहे विष्वार्केत्य वे क्ष्य में श्रेत्र केश्य वे वायर प्रमान र्धेन्यमः र्से युन्स्मयम् र्से यान्य स्मिन् रहेन

प्राच्यात्राचारे व भूत्रयाद्वे स्वयाये व स्वयाये स्वये स्वयाये स्वयाये स्वयाये स्वयाये स्वयं स्

ह्युः अर्केना कुष्यः अर्क्ष्वः प्रायः विद्याः विद्याः

हेश्रास्त्रम् वितास्त्रम् वित

देवाशान्द्राचार्थितात्रम्ह्रश्। स्टानित्रनिह्नास्त्रित्रम्हित्रा स्टानित्रनिह्नास्त्रम्थाः स्ट्रित्रनिह्नाः स्ट्रित्रनिह्नाः स्ट्रित्रनिह्नाः स्ट्रित्रनिह्नाः त्रेश्वर्यः सेवाश्वर्यः सेवाश्वर्यः व्याधितः वयाधितः वय

नडुः जुगाया इयः न् हो नकु न्यः वें न्या

यारःश्रेरःवर्हेर्प्यवेःद्रःर्थेःह्या ग्रेःश्चरःवःवेःवेद्रःयःधेव॥

ग नर्रेशःग्रेःनेत्

ग्रान्य्यायाराष्यरासुरानवे सेरान्त्या वे सार्चेन देशा ग्री सळत्

यहूर्यंत्रेह्मण्यवस्त्रं द्र्यं ची विद्युत्ते विद्युत्

प अवदः न्युनः या

तृःशुःर्वे के द्रद्र्या श्रेश श्रेत स्वाद्र्ये त्र स्वाद्र्ये त्र स्वाद्र्ये त्र स्वाद्र्य स्वत

ष्णयः १५८ मार्थेर हिंगाचीया गुर्म हेरायदे द्वेर महेंद्र मत्ना याया श्रुराक्षः बुरासे दायदे गान्या हे सारा दे गान्य राष्ट्रा या स्रुप्धे वस न्वाः यः न्दः वार्ने नः यः वयः न्वाः यदेः ने वः तुः शुः वः व्यदः हे नः यः ये नः वः व्यदः ने ः यार्चेर्पितेर्देव्ये क्षां क्ष्यान्य मृत्या हेश्या सुराह्य प्रित्र क्ष्या नुसामा वेसामदेगानायाधरासा तुरानन्ग्रासा खेँ दादे। दे द्यादे सा <u> नवायर बन् श्री</u> वाय हे न्से सन्वाय व्याय या नवा हे राय थें न स्थार नेदेः स्टानबिव र्हे । अ क्षेत्रागुः भे र्शेषागुः भे र्शेषा केत्रानर्गे द स्व रेके रामे रेके रामे रेके रेके रामे रेके नसूर्यात्रयागुन्वाचेरानाधेत्रात्ते केयाकेराविष्ययापदि । वर्षेनापदे गुःवे ।वरः नवे गाः नरः शे वे रः नवे छे नः सः बुरः न न न शाः नरा गाः न गाः न गाः न र्देव वे वे विषा साव सारासा निर्देश साव सारामा विष्टे विष्टी सामा वे प्राप्ति वे र्वेगासदे सेर त्यस्त्र प्रस्ते यदे द्या ग्रम्प ही साम्रेस स् वेग्रयःर्शे।

यालवरण्यत्। ग्रें लेश्वाराणेंद्र क्षंत्र चेंद्र प्रेंदे देव संभी वर्षेत्र केंद्र स्था वर्षेत्र प्रेंद्र स्था केंद्र स्था केंद

यदा विश्वास्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्ति क्रायस्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्त्रित्वे क्रायस्ति क्रायस्त्रित्वे क्रायस्ति क्रायस्तित्वे क्रायस्ति क्रायस्ति क्रायस्ति क्रायस्ति क्रायस्ति क्रायस्तित

न इंग्नित्व हे अप्यह्माया से व्हें अपये स्वित्र स्टान्न एक से के स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित् स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वित् स्वित्र स्वत्र स्वित्र स्वित्र स्वित्र स्वत्र स्वत्र स्वत्र स्वित्र स्वत्र स्वत्र

यार से समय दित्य मुद्दा संभी। निव न त्या के से सुर निव निव न त्या के से सुर स्वी। निव न त्या के से से से से स्वी मा स्वा की स्वी स्वी

ग नर्सेशःग्रीःनेत्

योद्दान्त्री विकास्त्री विकास्त्

न्द्रवः पंत्रे गाले गाठे गाः यः व्रवः प्रवः प्र

प अन्दर्भुर्भा

यदेव'या न्वे'न'यदेव'या कुर्यान्यन्त्रिव'यं स्वायात्रिक्त्यं कुर्यं न्वे स्वायात्रिक्त्यं कुर्यं न्वे स्वायात्रिक्त्यं कुर्यं क्ष्यं प्रति क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं विष्यं क्ष्यं क्षयं क्ष्यं क्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं क्ष्यं

प्यत्र भे हुन स्वास्त्र स

न्द्रवःपःष्वेशःपःषःष्वःषुःषेःकेवःश्चेशःशःश्वर्षःष्ट्र-तुःनश्च्रदः श्चेःपश्चेषःसह्त्वःष्पतः श्चेशःश्चेःश्वर्षःश्चेशःश्चेशःत्रःश्वर्षःश्चेशःतेः देशःनश्चरःषोःदेवःतुःनश्वरःषःष्ट्रःगश्चरःगश्चरःगश्चरः।

नर्डे नकु र न र जा

मुअअप्रायाने महिश्याम भूम। दे ने सूर्र्र्र्र्र्य के मूर्य्य महिश्याम स्थाप के मि

ग नर्रेशःग्रेःनेत्

श्री स्त्र स्त्र

देशनिव्यन्ते स्वर्हे न्या हूं है न्या द्वा स्वर्ण स्वर्ण

श्रुवाः श्लेषः स्रविषः स्रवे न वटः सं दित्। याः में व्यासके सः नवे न वटः सं स्रस् श्री विश्वान्ता सर्ने विस्वार्थ स्नार्ट्य की हैं वर्षे रास्त्रमा के नास्त्रमा न्यरावस्याञ्चरान्या वयास्याञ्चरान्या स्रीत्रवार्याञ्चरान्या वराञ्चर म् स्टाइयथार्थे। वियापाधातुः स्टाई। पविषाविषाविषाविषात्ययाह्याम्याद्या सरावनेत्रपात्रा (शे.शेत्रपर्यामुयामु सर्वे यासद्गापदे व्यापदे सक्रें र दें र र न न र किया है। इस इस विस्थें अहर कि के र सिर्म अर विस्थे अमा श्रेमायर्वेमाअमा न्यमाहाअमा शेष्ठ्याम्याअमा वेयावहेया व्यन्।

श्रेया मीश्रास्त्रें राज्य प्रत्रें किश्रास्त्र विश्वाया प्राप्त प्रत्रें व हैंग्यार्थ्या वियायाक्षात्राक्षेत्रा मुख्य व्यामान्य केंग्या केंद्राया प्रा

शुःरेटराः १ नरान्दायायायायायाया वियान्दा वियान्दा वियान्दा ८८.७कु.च.क.हे। वेशसक्ष.य.हे.र्श. र्याट्ट कु.सेचशकावहियास.रटा येग्रयान्यः र्सेन्यान्यः यान्यः प्रमा वेयः न्यः र्सेटः

ग्रीअन्दरस्य विकासक्ष्मित्रः स्रे स्वरायदे गद्या ग्राया

नक्ष्मनः गुः क्षेत्रः यः नडकाः यः वह्माः वै।

प अवदः न्धुनः भ

नान्सराम्यात्यात्रह्नामाने सुवाकिना भूतरायदेराषायाः नुरा

त्रःश्चाः उत्रः क्रम्यः भीतः विष्यः यत्रः विष्यः यत्रः विष्यः यत्रः विष्यः यत्रः विष्यः यत्रः विष्यः यत्रः विषयः विषयः

श्रुश्व कुं अळ्द्र-द्राक्टं भ्रूनश्ची यद्देन स्थान स्

न्द्रयः कुः इक्षः चः द्रशः सहिः प्रतेः द्रणाणः यव स्ट्रास्य विष्णः स्ट्रिसः प्रतेः क्षणः याद्रयः स्ट्रिसः प्रते द्रिसः याद्रिसः स्ट्रिसः याद्रिसः सः याद्रिसः सः याद्रिसः सः प्रते द्रिसः प्रते द्रिसः प्रते द्रिसः याद्रिसः सः याद्रिसः सः प्रते द्रिसः सः प्रते द्रिसः सः प्रते द्रिसः प्रते द्रिसः प्रते द्रिसः याद्रिसः सः प्रते द्रिसः प्रते द्रिसः सः प्रते द्रिसः प्रते द्रते द्रिसः प्रते द्रिस

श्चेंशःश्वा

नडुः नगुः न। ने श्री

न्यार्थिरन्वे न्यास्त्रव्यः द्या न्यार्थिरन्वे न्यास्त्रव्यः द्या स्त्रव्यः न्या स्त्रव्यः न्या स्त्रव्यः न्या स्त्रव्यः न्याः न्यः

ग नर्स्यःश्रेःन्त्

त्रा वर्षाकी वर्षाकि स्ट्रिंग स्ट्रिंग

देखेशः चुः चत्रेः क्षेत्राः में देष्ठ्याः चित्रः च्याः चित्रः च्याः च्य

विश्वास्त्र स्थानित्त स्यानित्त स्थानित्त स्य

इस्राय्यास्याप्वत्याहित्यावेश्यायाते। यहेत्यम् गुकुदेयम् सेर

न्र्स्याश्वास्त्रश्चित्राचे द्वी त्या हिना न्रिया हिना न्या न्या हिना न्या हिना न्या हिना न्या हिना न्या हिना न्या हिना न्या

स्वा न उर्भ त्यां यह वा रहं या वे वि ति । त्यां प्रत्ये । वि व्यां प्

विश्वास्त्रम्भन्ति । यदेवास्त्रम्भ वर्षे ।

ग्रम्यत्रिः द्वायायह्याया है। भ्रीः म्राव्यायायाया स्वराक्षा स्वराक्षा

यद्वानियायद्वान्यवे। श्रुप्तार्थे प्रवित्य वित्रे स्वर्णायदे स्वर

वन्यायान्य अर्थे वह्या द्ध्याया विष्या है अर्थे म

र्याकेरायादी यह्यायायाहेया।

विश्वास्त्रम् यद्श्वास्त्रम् देन्यास्त्रम् वेश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्यास्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वास्त्रम्

प्र अवदः र श्र र र ।

हुः अः त्वन्ते। छित् रुषाः श्वर्ते विश्वत्यायः त्रिः त्र त्रिं अः व्या अः अववः अतः वीः प्या अवतः श्वरः त्रिः त्रिः त्रिः त्रिः विश्वः त्यायः त्यायः विश्वः त्यायः त्यायः त्यायः विश्वः त्यायः विश्वः त्यायः विश्वः त्यायः विश्वः त्यायः विश्वः त्यायः त्यायः विश्वः त्यायः त्य

स्यान्य अर्देव नहें न्यो नश्रुव नहें शायन निवान के विष्य न्या के विषय न्या के विष्य न्या विष्य न्या के विष्य न्या विष्य न्या वि

यात्रिया विश्वाचेर् श्रे स्थान्य स्वाप्त स्वा

यद्भरम्भद्भर्भः वर्षः स्वाधित्रम्भः वर्षः स्वाधित्रम्भः स्वाधित्रमः स्वाधि

हे जुःना गरःश्वा

यार श्रेर यहें र प्रते प्र हें र है। प्र सें या के श्राप क्षेत्र। श्चे 'व'विन'मं हेर्'र्'त्युम्।

म्याः भ्राः श्रीः विश्वाः विश्वाः स्थितः विश्वाः स्थितः विश्वाः विश्वाः स्थितः विश्वाः विश्वाः स्थितः विश्वाः विश्वाः स्थितः स्याः स्थितः स्य

देव'र्से'के'लश्रदेव'यर'के'नदिग्वर'षेव। र्वेगश्र'रायदे'द्वा'ने' वर'वश्र'यावश्र'रावे'र्लेव'त्रदर'य्यद'रा'दे'न्यर'षेव। वेश'रा'य्यु'तु'दे'नवे' केना'ने'श्चे'श्च'ल'केना'ययर'श्चेर'न'र्दा'

सम्बेतःश्रुवः अद्वयः यन्नः भूरः सेरः नः ग्रा

ने के निम्मानी क्षेत्र निम्मान सम्मान

स्यश्रा है निवे देव देव हैं निवा निवे त्या है निवा विद्वा हिंद है निवा के स्था है निवा हैं न

यन्द्रित्। विश्वास्य अर्क्षत्र विश्वास्य अर्क्षत्र विश्वास्य विश्

याल्य प्यत्। के लिया के स्त्रे। के स्त्रेत्। के प्यत्। के स्त्रेत्र स्त्रेत्। के स

हे न्या ग्रामा नेया निष्या प्रस्था ने स्वाप्त के स्वाप

हेर'गडेग'म। नन्ग'श्रा

ग न्देशःग्रीः देवा

ग्राम्या सुन्यते से मार्गि साम्या से से से मार्गि समय साम्या सुन्या स श्चेरायां निम्नाह्माराहे श्चेरायदे ह्याराया स्वाराया शिलायो प्री श्चेर ग्रभर-तु-तु-त्रे-ह्रे-ह्रे-ह्रो-अ-दि-ह्ग्रथ-उद-द्यो-वन्ग-ङ्ग-ह्यु-र-वन् नन्गार्चे नारायान्नरानवयानारायाय्व संदेश्या क्षेत्रावि धिव सरा ने या र्देश्यद्याः श्रुष्यः सिष्यः सः इससः ग्रीः यहेदः सः श्रेष्य श्रुदः सः द्वा याः विवाः विदः वःलर्। वर्ने रः स्रावसः राः श्रॅः श्रेंदे खेवासः वन् निः भ्रेंदः से वस्या विः भ्रेदः ग्री पहुना सन्दरस्य मुक्त सम् ग्रुक संदे स्ट खुन्य करो। सन्दे सन्दे सार्थे स्रे वन्वाञ्चान्द्रेश्यो न्वरान् वन्वाञ्चान्द्रा वन्वाञ्चान्द्राञ्चावा सर्द्ध्रस्थासंदे देवाया शुः शुर्मा उदाद्या थ्वा सम्बन्ध्यया हे दे द्वा वी दमेर्न्स्रिंद्र्यामित्रेव्यामित्रे विरायामित्रे विष्याची विराय विराय विराय विराय विराय विराय विराय विराय विराय वह्यामिते द्रोर्च हिंद्गार नव्या द्रम्य क के नश वदे सूर्

यःश्रेमाः यदमाः श्चाःयः यह्माः यः दे। याः दः यः यः यः यः य। दः यः दः यः यः यः यः यः यः व। विश्वास्तिः र्वेता वर्ष्याः वर्ष्यः वर्ष्याः वर्ष्यः वर्षः वर्ष्यः वर्ष्यः वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः वर्यः वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः वर्यः वर्षः वर्षः व

र्यः भियाः यद्वाः श्वाः यद्वाः यद्वा

यः भ्रेया यहत्या द्राया द्रियाचा गाया वेश्वयः या श्रेया व्यायः या श्रेश्वा वेश्वयः अदः या द्रियाचा गाया वेश्वयः या श्रियः या व्यायः वे मदः या यहतः या द्राया द्रियः या गाया वेश्वयः श्रेष्ट्रं युद्धा

र्वे भिनानन्नाश्चायायह्नामाने श्वूरामें अहंदामें हुत्यमें न्रे में विश्वानमाने श्वी श्वूरामें अहंदामें हुत्यमें न्रे में विश्वानमाने श्वी श्वरामें श्विरामें विश्वानमाने श्वी श्वरामें श्विरामें विश्वानमाने श्विरामें विश्वानमाने श्वी श्वरामें श्विरामें श्विरामें विश्वानमाने श्वी श्वरामें श्विरामें श्वी श्वीरामें श्वीरामे

गणेरसा वृत्तु है सेट में क न्या सु सु र स इस र र्से।

यन्नाःश्चःन्दःश्चित्राः स्वतः विश्वः स्वतः स्वत

भ्रम्भवस्ति स्वासे स्ट्रिंगाची सुस्य व्योध पु वास्य वास्य वित्र व

प अवदः न्धुनः या

र्दे त्र विदेर निर्मा श्रूर अप्टर श्रें श्रें म्राया विमाय विमाय विद्या विद्या विद्या न्यावेयावरीता धेरारी यावयायवेरन्यरार्वे न्याकुः इस इर्यायहर रादे शुस्राह्माया ग्री प्रमोत्याचा स्री हिते विषा सुदाद्वा द्यामा त्यस स्वद्या स्रीते । विवानी भ्रुत् ह्वा वेशाया विश्वास्य वाश्वाया वास्त्र हे गासावा वु न्यरावसः वर्त्रोयाः द्ध्याः क्षूरान्त्याः द्धाः देवार्याः केषाः वाष्याः वराष्याः वराषाः विष्यान्याः गीर्यायहेत्रर्यते। सुर्यार्थे । देर्द्रिस्ट्रिस्ट्र्योयावेखा क्षुःस्रिहेर्द्रार्यं यिष्ठेशःगाम्। अष्ठतेःश्रेःन्दः यठशःमर्दे। विशःन्दः। श्रुःन्तुदशः ठवः सम्। गुःइं तुःहुःसुःश्वेःनःइस्रशःश्री विश्वायाःश्वरःसुःदीःसःश्वेःवार्वीःदर्वीश्वायशः देवे वर मी पान समाश्रस दर। देवे श्वास ता नस्व पवे में में से माश्रस क्षेप्ते द्वागायद्वा क्षर पर्देन दे। विकार्वे र तु प्रवेष के सु र कि क्षेत्र प न्ना विज्ञाह्यकालेकावर्षेयानामाधिकातमा वर्नेमामु लेकामामासे याही क्ष्ररात्राविषावेषा अदानदाम् विमायार्देवा वात्रात्रायात्रायात्रायात्रायात्राया सिम्बास्तरे विदःकेषा प्रदा सिम्बास्य प्रमानितः विद्यास्तरे र्नेत्रः क्षरः न्द्रः व्यः कुः सेत्रः से के शः विद्योयः कुषः विदे विदे ने निर्मे कुः ने प्रस्थः हीः पि:अन्-न्न-भेत्रः प्रस्तुतः स्थान्यः विदेशे हे अःशुः वर्त्यन्यः त्यायः नः प्येतः र्वे। । नश्रुव नर्वे अ ग्री क्षेट त्या की तृते विया सुट विया निया विया मान्य वित्यः इस्रयः भी दिरे हे या शुः विविद्यात्यः या प्राप्तः वित्यः स्थ्यः भी या स्थितः स्थ्यः स्थयः स्यः स्थयः स्थय

स्वारायने स्वरावर्गात्वर्णत्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्णत्वर्गात्वर्गात्वर्गात्वर्णत्वर्यत्वर्णत्वर्यत्वर्यत्वर्णत्वर्यत्वर्यत्वर्णत्वर्णत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्वर्यत्व

विन्ने भे हिन्ने भे हिन्ने स्वाह स्

देव:क्यूर्शि व्याप्तान्यक्ष्यात्त्रम् स्थान्यक्ष्यात्त्रम् स्थान्यक्ष्याः स्थान्यक्ष्यः स्थान्यक्षयः स्यान्यक्षयः स्थान्यक्षयः स्यान्यक्षयः स्थान्यक्षयः स्यान्यक्षयः स्थान्यक्षयः स्थान्यक्षयः स्यान्यक्षय

लर.रेरा री.जृथ्य.ध्याश्चीयश्ची.जु.जु.जु.जु.जु.तुर.श्चर.हुर.र्रा

विश्वान्यन्त्रः श्रेत्वाः श्रेत्वाः

श्ची मार्खे वा भारतीय न में मार्खे वा भारती भारतीय मार्थे मार्खे वा भारतीय मार्थे मार्थे वा भारतीय मार्थे मार्थे वा भारतीय मार्थे मार्

म्नु स्याने स्थान क्रियाम्य स्थान स्यान स्थान स्यान स्थान स

यरः क्षेत्रः स्थाः क्षेत्रः स्थाः क्षेत्रः स्थाः स्था

सर्-श्रुवाःसं-वर्गेन्-धिः क्रुवः यथः ग्रुटः। नवेः श्रुवः सं-वर्गेन्-धिः क्रुवः यथः ग्रुथा। नक्षेव्यथः नव्द-नह्यः नवेः व्यथः यथः नवेदः नु॥ वेव्यथः यद्ग्वयः यः स्-धिः नवाद्या। स्नुवः वर्षः वर्षः व्यथः स्-धिः नवाद्या। स्नुवः वर्षः व

याश्चे मेत्र में कि शन्ताता श्चाता श

न्व्रस्थ उत् ग्रुन प्रते हैं स्थ सहन प्रते शुर्य दुः निते श्रुन प्रते श्रुम प्रते । स्थ प्रते स्थ प्रते । स्य प्रते । स्थ प्रते । स्य प्रते । स्थ प्रते । स्य प्रते । स्थ प्रते । स्य प्रते । स्थ प्रते । स्य । स्थ प्रते । स

क्रायामहित्र क्कें राजायेवासा

हेरःगहेशःया न्यायाःश्चा

याद्राधाः यहित्रयदे प्यायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स्य

ग न्देशःशिःदेवा

स्थायाश्वराष्ट्री क्ष्यां स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थ क्षेत्र स्वार्य स्वार स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार्य स्वार

प अन्दर्भुर्भा

श्रमत्त्रीयात्वामा ने त्याक्ष्मे विद्याने क्ष्मे व्याप्त्रीयात्वे स्थाने विद्याने स्थाने विद्याने स्थाने विद्याने स्थाने स्थाने

स्रुवान्त्रित्वर्ग्यक्षे।

स्रित्वर्ग्यक्षेत्रव्यव्यक्षेत्रव्यक्षेत्वव्यक्षेत्वव्यक्षेत्वव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्यव्य

दे: द्या कुं । त्या यी प्रह्या ध्या विश्व प्राप्त विश्व श्रित । विश्व श्य । विश्व श्रित । विश्व श्य

इस्तर्था स्थित्यात्त्र्वित्त्रक्षात्त्र्वेत्त्र्यात्त्र्वेत्त्र्यात्त्र्वेत्त्र्यात्त्र्वेत्त्र्यात्त्र्वेत्त् स्वत्त्रात्त्र्वेत्त्र्यात्त्र्वेत्त्र्यात् विवास्त्र्यात्त्र्याः विवास्त्र्वेत्त्र्याः विवास्त्र्वेत्त्र्याः विवास्त्र्याः विवास्त्र्याः विवास्त्र्याः विवास्त्र्याः विवास्त्रयाः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्ययः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः विवास्त्रयः व

दे भूर त र्वेव शेवेवय सुर यश्या शुरा ख्रा शुरा व योव पा व र यो व र यो या व र यो या व र यो या व र यो या व र यो य

वर्दे मः शुक्षाः या

र्श्व-र्श्वितःस्वर्यःस्वरःस्वरःस्वरःस्वरः स्वर्यास्यः प्रस्तिः स्वरः प्रस्तः प्रस्तः स्वरः स्वर

यन्त्रः स्वान्तः श्रुद्धः स्वरः स्वान्यः स्वान्यः स्वान्यः स्वरः स्वान्यः स्वरः स्व

कुः केव मिन्ट वन नहः श्वेष्ट सेवा मिन्ट म

भ्रम्यात्री क्ष्यास्यायाः स्वायाः स्वायः स्वायाः स्वायाः स्वायाः स्वयाः स्वयः स्व

य्यायः विवा प्रायः अध्यः ह्या श्रायः या श्रायः विवा श्रायः या श्रायः विवा श्रायः वि

१ क्रिं त्री प्रमेषान क्रिंट स्रित क्रिंट

यः श्रुः प्रावः क्रेत्रः गुतः प्रावः क्रायः अळ्तः (श्रुः व्याः ११८ व्याः प्राव्यः क्रायः अ१८५५ ११८ व्यो वः क्रियाः अ। व्यायः क्रियाः व्यायः क्रियाः व्यायः व्यः व्यायः व्

यर्डसम्बर्दिन्यवे स्वास्त्र स्वास्त

र्षे कित् ग्रुट कुत है से दि ग्रु केत र्षे केत त्या स्वापय न ग्रट से सा (स्व ग्रुट ग्रु वा प्रये त्य में होता प्रयास न स्वाप्य न स्वाप्

श्रूरः बरः नः शं ः सु शः (रनः तुरः नत् वः प्रदे वरः र्ते व। तुशः रनशः

न दुःनवि न) सह दःसदे सुसःह्वा सःसळ्दः वर्गेया

लर्याश्वासार्यत्रेत्वासार्यत्रेत्वास्त्र स्वासार्यत्रेत्वास्त्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्य स्वासार्यत्र स्वासार्य स्वासार्यत्र स्वासार्य स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्य स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्यत्र स्वासार्य स्वास्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासार्य स्वासाय स्वासार्य स्वासार्य स्वासार स्वासार्य स्वासाय स्वासार्य स्वासार्य स्वासाय स्वास्य स्वासार्य

र्वी के स्वाय विश्वस्थाय विश्वस्थ के स्वाय के स्वाय के स्वाय विश्वस्थ के स्वाय के स्वाय के स्वाय के स्वाय के स

म्ब्राक्ष त्र्या स्वेत्र त्र्या स्वेत्। १००० १००० भी साम् द्राप्त स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्वाया स्व

द्वरःस्रायरः नः र्ह्वा सः क्ष्यः विष्यः विष्यः विष्यः । १५०६-४) सहरः प्रदेः शुसः

र्याय श्रम् या क्ष्या क्ष्य क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क्ष्या क

स्वास्य म्या स्वास्य स्वास्य

श्वनः खुदः वः र्ह्याः श्वदः हो दः धिदः श्वीः भिदः हा अवः विविश्वाः स्वायः विविश्वाः स्वायः विविश्वाः स्वायः विविश्वाः स्वायः विविश्वाः स्वायः विविश्वाः स्वायः स्वयः स्वयः

त्रः श्राचार्के अर्थे वा अर्थे अस्त्रः स्वि अस्त्र स्वा अर्थे वा अत्या अविश रादे थित्र वर्षे वा

यहिरःश्चेशःळॅवाशःवार्श्ववाशः त्र्र्वात्रः त्र्वात्रः त्र्र्वाशः त्र्र्वाशः त्र्र्वाशः त्र्र्वाशः व्यावाशः श्चेशः व्यावशः व

र्ष्व अदे निर्म्य कृत प्रया प्रहार के त्र है निर्म्य प्रश्नित के त्र के त्र है निर्म्य प्रश्नित के त्र के

१ मुरागीःपर्योयःनःयासरःसदेःभ्रीम्

द्या अप्तर्भ । (स्वा श्रुट वर्षे वर्षे अप्तरे क्षेत्र वर्षे वर्षे अप्तरे क्षेत्र वर्षे वर

मझःशे. हु. पाईपा त्याः कें स्राधिः श्वरः प्रश्ना (१४००-१४४८)। पदे : शुस्र ह्या स्राप्त विष्य केंद्र स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्राप्त स्

श्राणः में प्राप्त स्वाया प्राप्त में प

त्रोयः न त्रें स्व प्रायः भेट्रा व्यायः न त्रें स्व प्रायः भेट्रा

योग्राज्ञ्जित्ययादिन् वेरः श्रीयायहिन् प्रदेश्याह्यायायाः योग्राज्ञ्जन्त्रम्

नश्रम् । प्रत्यान्त्र दित् सुन ग्री श्रास्त्र । स्वी श्र

सर्हें ५ 'द्रो 'र्ज़ें 'तबर'द्रगें द'सर्कें पा'(१२४ ८१ - x) में अ'सर्द्र' पदे

ह्वारायह्वायवोयानान्वेर्यायार्ययार्थे सेंद्रा

ह्याश्चात्यः त्रांत्रः स्वात्यः श्रेत्। ह्याश्चात्यः व्यात्यः श्रेत्।

वत् वित् प्राः ण त्र भारत्व स्थाः प्राः प्रित् स्थाः प्राः प्रित् स्याः प्राः वित् प्राः वित् स्याः वित् प्राः वित् स्याः वित् प्राः वित् स्याः वित् प्राः वित् स्याः वित् प्राः वित् वित् प्राः वित्

न्यः प्रत्यं त्र्यः विश्वास्यः श्रिष्यः स्वासः द्वायः विश्वास्यः स्वायः द्वायः स्वायः द्वायः स्वायः द्वायः स्वायः द्वायः स्वायः द्वायः स्वायः स्वायः द्वायः स्वायः स्वयः स्

त्र्रः(१६६वॉर्य्य स्थार)। व्रुटः(१६६वॉर्य्य सम्बद्ध स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः स्थार्थः

न्द्रथः कुरे निर्वत में न्व्या उव व्या निर्वत में निर्वा अव निर्वत के में निर्वा के निर्व के निर्वा के निर्व के निर्वा के निर्व के निर्

वर्षेयानर्तेरानुवे कुत्रेर (श्रृषा) (२६ व्याप्ता) ही स्र १२५ व्याप्ता वर्षेया वर्येया वर्षेया वर्षेया वर्षेया वर्षेया वर्येया वर्येया

न्वायः निवे निः में से दः निर्धायः निर

गश्चरः मृत्याः स्वायाः विषयः विषयः स्वायः स्वयः स्ययः स्वयः स्य

येरायोदायावदार्रे से राजाया के प्राप्त के वास्त के वास के वास्त के वास्त के वास्त के वास के व

रण'न्नर'श्रुन'ग्रीश'सहन्'मदे'स्रुस'र्डु'नदे'द्र्योय'न'स्रु' नेग'सेर'न

येर नो द के या हे या यह दायदे प्रा क्षेत्र गुदा यव दाद में दया कुदा ही।

न्वीं रश्यायायाया हो न्युं व्यो

दः में प्रवस्थित विश्वस्था स्वाया प्रविश्वस्था स्वाया प्रविश्वस्था प्रविश्वस्य प्रविश्वस्य प्रविश्वस्य प्रविश्वस्था प्रविश्वस्य प्रविष्य प्रविश्वस्य प्रविष्य प्रविष्यस्य प्रविष्यस्य प्रव

ब्र-१व्याळ्टाची शासह्याचे श्रुसा हु प्रदेश स्त्रोत्याचा प्रति हो । भ्रेम

र्ये. श्वार्क्स प्रति क्षेत्र क्षेत्र प्रति क्षेत्र क

रगः र्वरायम् । वर्ष्यं क्षेत्रः स्वायः वर्ष्यं । वर्षेत्रः स्वायः स्वयः स्

नश्र्ना अर्थेन क्रिया क्रया क्रिया क्रया क्रिया क्

स्वारा त्योया न त्युवा हो। स्वारा त्यो या स्वारा वी या सी त्या त्या सिंदा सिंदा स्वारा त्या या स्वारा वी या सी त्या सिंदा सिंदा सिंदा स्वारा त्या सिंदा सिं

३ शुअःह्याशः ५८: त्रज्ञेषः न्रिः न्याः धियाः ५८: धेः योदेः न्यन् राः यायाशः उतः क्रीं न्य

र्थे दूं न के दें रें में में भूष के अन्त (१०५६-११०६) ग्री अ अहं प् पर्वे प्रवाधिया अर्दे र न सूर्या

तर्त्री सर्वी द र्के श्र कुया प्रस्वा श्रा पिते ह्या श्र श्रेष्ट्रा या व्या श्रा श्री र विश्वा स्त्री स्त्

वार्डर:ववा:घ:ब्रवाशःहे:श्रेट:वोशःशहंद:घवे:दवा:धवा:वर्द्रहेवे: इ:कुवा

स्वाः स्वां विवाद्या विवाद्या के स्वां स्

तुः क्रेंत्र शेर गो रेंद्र ग्रीश सह्द पिते प्राणिया श्रु रेंत्र क्रु सिते शेर र्या

नश्रम्भेदश्याम् गुत्रानश्रम् श्रीश्रास्त्र प्राप्ति प्राप्ति व्यास्त्र प्राप्ति व्यास्ति व्यास्त्र प्राप्ति व्यास्त्र प्राप्ति व्यास्त्र प्राप्ति व्यास्ति व्यास्ति व्यास्ति विष्ति व्यास्ति विष्ति विष्ति विषति विषति

सर्वेट कु र्येट रायश्रान क्षान्ये कु व नेव हुन नेव वें।

यह छेत्र गुस्रश्राम् भेरायस (१८००-१८२५) सहरायस प्राप्त स्वाप्त स्वाप्

तृःशुःर्थे र्हू पार्के शः श्रुँ पान्न पार्थे शास्त्र प्राये प्र

त्रः शुः र्वे प्रः त्रे त्रः के तः श्रुष्णि शः र्वे प्रः तः त्याः त्यतः से दः के दः त्याः विश्वः श्रीशः शह्तः प्रदे प्रदः याश्वरः ह्रे तः यो प्रिः यो सः वितः (१५३६ व्य सः प्रदेशश)

वृःशुःर्थे के तृः धनः श्रुशःशुः श्रूनः श्रः न्याः प्रदः श्रुः नः न्याः न्यः क्रिशःशुः कुः श्र के त्रः श्रुः नः न्याः प्रदः न्याः धियाः न्याः योः श्रूवः श्रः (१५३६वे नः न्याः विद्यश्रः विद्यः विद्यश्रः विद्यश्रः विद्यश्रः विद्यश्रः विद्यश्यः विद्यश्रः विद्यः विद्यश्रः विद्यः विद्यश्रः विद्यश्रः विद्यश्रः विद्यश्रः विद्यः विद्यश्रः विद्यश्यः विद्यश्यः विद्यश्यः विद्यश्यः विद्यः विद्य

त्रुष्टे निर्देश श्रें न प्रशें न प्रश

र्डे हे ज्ञाम्य प्राप्त १८ श्रुवा श्रीया सहित प्रदे । प्राप्त विवास स्वाप्त स

रु:श्चु: नद्या: केव: द्या: द्यद: गुव: द्याय: वर्शेद: द्याय: (१५ ८०) - X)

ग्रीशः सहित्यिः प्राणियाः स्रेयाः प्रयास्य स्थाः स्थाः (१६३६व्यू रः यञ्चरारा

यादश(१२८१र्से स्टेंस्य स्टेंस्य स्ट्राय स्ट्र

શુસ્રાયા ખે ત્વેશ ત્વાય તર્શે π (૧૫૦૯ - ૧૫ π દ્વા ખેતા ત્રાય ત્વેશ ત્વા પ્રત્યા ત્વેશ ત્વા ત્વેશ ત્વા ત્વેશ ત્વા ત્વેશ ત્વેશ ત્વા ત્વેશ ત્

सर्दे स्वायम् नः क्रें मेर प्रवरः क्रुवः (१६६२ -१२६३) क्रिश्य स्वरः स्वेः वस्या स्वः स्वायः स्वरः स्वायः स्वरः स

यश्नरः भ्रह्मराष्ट्रः व्याया अर्थात् । स्वायाः अर्थः स्वायाः । स्वयाः अर्थः स्वयाः । स्वयाः स्वयः स्वयः

न् क्रिया प्रत्ता विष्य स्वाधिष्य स

न्वयः स्टा में देश हैं निते हैं वा स्वा नित्र स्व नित्य

श्रेन्तो त्रुः अर्दे र तुः नश्रुद वहेंद श्री श्राः अहं र प्रिः अदे व्याः विद्याः अदि प्रदेश स्त्रे प्राः विद्याः विद्

विस्रसः तह से स्रा (१४०४-१८११) श्री सः सह ५ : प्रते सः सहतः से ५ क्किं ५ वर्षा संस्था (१४०४ - १८११) श्री सः सह ५ : प्रते सः सहतः

नश्चर्यः वहित्र क्रियः अळ्वर क्रीशः अह्ट रचिः द्याः धेवाः द्याः श्चितः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः वर्षेयः

द्यो नियः नियं भाषित नियः स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्व

र्वेद्रासेदे वियास्ट्रायमाह्यामा ग्री पहुचा मान १८ मा

२००। | न्यायाः स्वायाः स्वयाः स्वयाः स्वयाः स्वयः स्वयः

निव हिं हैं नाश नगदे गाव श शु अर्दे व प्यमाश पदी। हमाश ग्री पह मा भ ने मा गाव हिं से व के व मा हे सा। यदे व में श्रिय प्या मीश यो माश प्रयो य पा। श्रें श्रुव शेय पदे गाशें श शु द से प्र से मा।

द्योयायर पर्दे प्रायाविया है स्वर स्वर श्री अ में स्थाय प्रेय प्राया में अ स्वर प्रमः

दे त्य विवासर विद्यो नह क्षेत्र पदि वात्र सुसाहना स वाहे स छै। इस्राम्वमायने येग्रास्य हुराग्री स्थान्तर रहा है स्थर सम्बन्ध वेसाय है ज व्यव र र वि र देश है अ वह या यी व्याप्य स्याप हो प्र र के या खर र से या अ हेशयह्याश्वरायां द्वापाल्रायो प्रमुद्धार्थेया ल्यायाद्वा दे प्रविद र्अट्यावि इस्राय हे सायह्या श्रुट्य येग्रास्ट्र मुं से हिंद्र प्राय्य र्थेन पह्ना ने या ग्रा हो दार्थ ना या ग्रा हिदा पही दारा सुदे। सुदे । सुदे । सुदे । सुदे । सुदे । सुदे । नर्हेन्-नने-न्न-ह्रम्थाः अद्ध्रास्य न्नान् नी सः सेन्स्य बुद्वः ख्रेद्वाः हुः क्रे न्यः र्गित्रप्रस्थ बुद्या कें वा खर् दे हेर न श्रुर्प्य दे हेर स्व के रे वा शर्र स्व क्यान्त्रे नकुन्ते भेराये न्या होन् ठवा गहेशन्य स्वतः द्वा क्षा क्षा <u>शुःसःकन्दिःनेगाम्बर्यःग्रीम्ब्निःकेःकुन्यःक्षेस्रसेन्न् श्र्हेन्यम्यः</u> केर्देश

स्वाश्वरह्मानी मुद्दार्शेत्र अपित्र प्रित्त के स्वाश्वर के स्वाश्

त्र-वित्यान्त्र वित्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्य प्रत्यान्त्र प्रत्यान्त्र प्रत्य प्र

८८१ ले.मे.श्रेष्ट्रम्याश्चार्योऽर्यो

य'तेर'यळंद'येर'ठेय'गुर'ठ्या

ग नर्स्याग्रीन्त्र

न्वर्याधेयानिवेसें न्या य्याचेर्स्यया दुर्से धेवाया देया स्टिये थे यो प्रवयः विया भ्रे या श्रयः हो दः श्रुयः द्वः वें विष्वः त्या भे वा भ्रे वा भ्रे दा निष्वः वावर्याया है। ने प्यत्र है न न्दर्ये गावियाता वाहेराया र कहा हा वार्यया यान्यान्या निवानायायायाया व्यानार्याळाटाया जुनायावात्राया नत्ता यारायान्या सेरायानाषा इसमार्थी | दे सममासे क्रियान दी वार ववा में में स्वारी भीत प्राप्त स्वार स्व वैदःद्रा इदःवदःववःयःर्सेद्रा देख्यः ग्रदःइदःवदःववःयः विवःदःर्रे ५८। नेत्रित्वर्यार्थेयान्याक्षेत्र्यायात्र्ये ।देण्यरक्षेत्रस्याविःर्ये इस्रशः भी दर्भे गां उप्तानि स्वानि स् गशुस्रायामाहादायार्से दिया वर्षे यादाकृतासाम्स्यूयाः विवाहार्से सार्वे वरा ह्यों । ने न्यायी ख्र्या अर्ड सेदे अद न्यायी यह प्रविष्याद स्याया है या र्शेषाराम्भेष्ठ संदानाश्यादी देश नवित्र स्र नम्भेर पदे उत्य र्शेषारा मजाशुसन्दर्भुरनरन्तुः भ्री उसी कं सन्दर्भ इसेर्भे सम्मान्त्री

ने निवित्त नुः स्वांते निव्या स्वांत्र स्वांत्य

प अवदः न्धुन् भा

बेश्यानम् प्रिंत्र प्राप्त प्र प्राप्त प्राप्

र्हें सेट निरंदित स्वार्थ स्व

भ्रत्रभावित्रः त्रभूतः श्रीः श्रें क्वं श्राः वे निः व्याः वित्रः वित्य

बेनर्ने॥

स्रीत्या वर्षेया स्रीत्र स्रीत्य स्रीत्र स्री

श्रुयाश्राश्चरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श्रुरायाः श

हेश्याशुद्द्रस्यायदे द्वाने स्वर्णान्य स्वर

याई श्राश्वास द्वाया या स्थाय स्याय स्थाय स्याय स्थाय स्थाय

शे। दर्दरशे द्योगान विद्या ने दिन हो ने हिमा हो स्था है स्था ने स्था

यदे भ्रिन्द्री विशानन्त्र सम्बन्ध्य स्वाप्य स्वत्त्र स्वाप्य स नन्द्रभार्देशस्यान्याद्रभार्यक्ष्या स्वानिस्त्रम् यक्षत्रः येदः यः यदिदः यः धेतः यः विवा वा तः श्रेदः दे। श्रेशः तः वादः विवा कः श्रेः डयाययायर्दिनाम्ययामी देशस्त्रितायस्त्र यासे दायासे दायास्त्र प्राप्ति । यदे भ्रिम्भे । अ ग्रुवान पार्शे व मेवा यदे सुरा ग्री कवारा खुवा व वा निवार नीयानेश्वालाधीयाः सन्दिरसळ्दासेन्धीदासरस्टायीशानसूदानेदासशा र्शे.योन्वस्तरः संतर्भाः योष्ट्रियः संवर्षः संतर्भा योष्ट्रियः संदर्भाः संवर्षः योष्ट्रियः संवर्षः संवर्यः संवर्यः संवर्यः संवर्यः संवरः संवरः संवर्यः संवरः संवरः संवर्यः संवर्यः संवर्यः संवरः संवरः ग्री ग्रामायायाप्तराम् स्वाद्या वर्ष्युरामायादीरा यळवामहियायादीरा यळवा बेन्सनेन्नाशुक्रारीं ग्रान्स्निष्धेत्रत्यें ग्रान्याधेत्रस्याद्यनः ग्रान्य वे ग्नियः धेतः तः ने ग्राशुः अग्नानः सुनः धेतः स्थाः अञ्चारा स्थाः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्थानः स्था क्ष्राम्या नेवे भ्रेत्र होत् हें या अष्ट्रसार उत्तर की ता हुई र केर ब्राया गहिरान्ते क्षेत्र महिगायायन् स्ट्रा स्ट्री सक्त सेन सामित्र सेन ग्नियाधराधेवायवे म्बिस्य मुक्ताय स्मिन्द्रेवा हेवा के स्मिन्स्य स्मिन्स्य स्मिन्स्य स्मिन्स्य स्मिन्स्य स्मिन्स हेशप्तह्याः भ्रवशास्त्रराधाने दासळ्वा से दार्शी प्रदेश से दि ग्रह्मारा अळ्याम्रेट्रियामास्य अत्राह्माराम्य अत्राह्मा स्थाप्य स् ह्यायाओ दाउत दुर्भा वर्दे दावित दुर्गिया सुर्याय राष्ट्र रहें। श्रि राये देरायानश्चित्रायायार्क्ष्यात्रात्व्यायात्व्यायाः वित्रायात्व्यायात्व्यायात्व्यायात्व्यायात्व्यायात्व्यायात्व्य वयवायायाव्यायायात्व्यायायात्व्यायायात्व्यायाः श्चित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायाः वित्रायायाः

वेश्वरादे न्त्रीत्रास्त्र म्ह्रास्त्र मह्रास्त्र महर्म् महर्मे महर्मे

सःयः ज्ञाशुस्रार्थे म्याश्वास्त्री। स्रीत्राव्यव्यास्त्रीत्रस्य स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्त्रीत्र स्

विश्वास्त्रम् व्याप्त्रम् व्याप्त्रम् विश्वास्त्रम् विश्वस्त्रम् विश्वस्त्रम्यम् विश्वस्त्रम् विश्वस्तिष्यम् विश्वस्तिष्यम् विश्वस्तिष्यम् विष्यस्तिष्यस्तिष्यम् विश्वस्तिष्यम्यस्तिष्यस्तिष्यस्तिष्यस्तिष्यस्

र्स्तिरानर्शित्रस्थात्रस्थात्रहेत्। त्रित्तान्त्रस्यात्रहेत्। त्रित्तान्त्रस्यात्रस्यस्यात्रस्यात्रस्यस्या

यार वित्र होत्या वित्र प्रस्ति । स्वाक्ष प्रदेश प्रस्ति । स्वाक्ष प्रस्ति । स्वाक्ष प्रदेश क्षेत्र क्

गहिरामा र्वेन पहणामी ह्यारा थे पहणामा १ क्षेट माले प्रशक्त स्वामा की प्रमान कुट कुणा

र्श्राधाः भोतः व्याप्तः व्यापतः व्या

१ क्रॅंब पह्यायी ह्याया ग्री प्रशेष

र्श्वरद्वाधीयोःश्वर्तिःया। र्थर्द्द्रम्थितेर्द्धर्द्द्रम्थी भिवर्तुः स्ट्रान्द्रम्थी

यन्त्रस्याची र्श्वेत्रपह्याची र्धि यो रश्वेत्ते त्या क्षेत्रपानि द्वर श्वर्त्त्र स्था स्थि रहे स्था याद्र स्था प्रत्य स्था प्रत्य स्था याद्र स्था याद्र

३ र्श्विप्यह्मामी ह्याया ग्रीप्यह्मा रहेया ग श्रीट्रा क्षेत्र स्वाया स्वाया ग्रीप्यह्मा रहेया

ने'न्य'रे'रेक्ट'यंवे' ग्रेन्'ने॥ याट'व्य'वह्या'ग्रेन्'याट'यी थ'ग्रेन्॥ हे'क्ष्र्र'वह्या'ग्रेन्'हे' श्रेर'ग्रेन्॥

विग्नानि श्रुते ग्नान्त्र हो द्वा प्रमाने प्रति। विग्नानि श्रुम प्रमाने स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्र स्थानित

पि यारायायह्यायाद्रायारायीयायह्यायाञ्चत्रुत्राच्या

मारायायह्यायर होत्र हे त्या र्या दे त्या प्रद्या प्रद्या प्र र्या दे त्या प्रद्या प्रद्य प्

ने त्या नक्या । क्षेत्र कुषा वन्य वक्षा व

ने निवेत निर्मा यह वा य

(ययम् वळ्या वस्या वसम्या वळ्टा) हे म इ त्यावह्या में ।

र्श्व पहुनानी अदि निह्न निष्य निष्य

यावीरामाहिकायाद्याची अरामाविविधियामायायाद्या न्यम्। इरा क्रिंथमामारामाय(न्ये न्यम्। न्ये। न्यम्)क्षेत्रमायायाद्याये।

र्श्वाप्त्वाणी भीव हुर्यो स्थापिता की स्थापित स्थापित

श्चेत्रविदेश्वरःहित्यः त्रात्तः प्रात्ते व्याप्तः व्यापतः व्यापतः व्यापत्तः व्यापतः व्या

यद्। वर्देग्रायावस्यामी प्राप्ता वियासविष्टा विद्या विद्या

वदा नक्तरा नक्केता नक्षुवा ददा श्रें त्यानक्कता नक्केत्रया नक्षुवाया इययानमें दाययाचे रदाक्षेता त्यावेताक सार्वेदासंदे क्रययाचेत्री हे। द्याके त्वेत्वाया सुदा नक्षुवा ददा श्रें त्याव क्षेत्रया नक्षुवाया

श्रा र्रो रित्राधिनानी तस्यानाना नाम स्वस्याया पर्दे नास तस्या न्या स्वर्था स

र्थे भी मार्श्वे द त्र माना भी मार्थे र्थे धिया गा उ म उ म र म र्बे धियायाराहाकुर्या <mark>ན་རྡོ་ན་ར་ལ་དང་॥</mark> श्रान्यश्रान्युः द्वाः स्वितः तुः यह्वा। श्री भी या श्रें व त्रह्या तर भी या वि ॥ र्बे भिग्गाम् इप्याही। यद्भेटायकात्रमाळा नडुःसें निं नदे र्श्नेन नुः वहुग। र्श्वित्वह्याः अनेदः याः धेयाः दे॥ र्थे पीया उन्नर्ज या शुरु ५ ५ ५ १ । र्रे थि थे मे ७५५ वा व ज पार्ट प्राया है।। न दुःगडिना मिं न दे र स्नि न न न न र्श्वायह्यायावेटान्येयावे॥ र्वे प्री पी मा न्या र्बे धिनाना दाया से।। इगार्से मिं दिरे केंद्र र पहुंग।

र्श्वित्वह्या निव हु से सावे॥ यदिरायकः शकः दरा। र्बे भेगमा हर्दर्दि। निव हु र्से धिया मन्म हु। व्यवस्य व्यविष्य विष्य नहेनाश्रादसुत्यानाधिनानिंत्ररादेश। दे प्यट सेट माने ट के बा र अर्वे चुर के थृ या दर॥ शःसर्वे चुरदर्ररः गशुसारी विविद्ये स्वित पुरा वेश मर्दे॥ सळसरावदेराषागुः पॅरसावहें दाग्री सार्गे दाये हैं साळे वा हा यः सर्वे खंद यः वस्य यं भी वा स्टा विश्वानीं द्रायाया शेराहें वा विशेषा वराया शर्वी उदा शे दार द्रा हा यान्यातस्याक्षे पर्वे नामित्रे ने सामित्र विकानमें निकासामित्र परि यर्दिरमी प्रवत्र स्टिं स्ट्रिस्त्र वास्य प्रस्ति प्रमानिया विष्य प्रमानिया विष्य प्रमानिया विषय विषय विषय विषय यदे विच क अ वें व यदे कुस र विच पद्चा वें।

ग वर गुर से पह्मा प्रते रहे या न सूत पा

र्याने स्थाने द्वा स्थाने स्थ

लट.र्जूरा

र्से दे से प्रत्रे से त्या वहुना

हेश श्री मान्य निर्देश निर्दे

भ्रे तह्या स्य त्र वह वह या दे त्र वह या ये त्र तह या त्र या त्र या तह या त्र या त्र

क्ष्माः क्ष्टाः व्यक्तिः विवक्तिः विविवक्तिः विवक्तिः विविविविविविविविविविविविविविः

द श्रुम्पद्रम्भः हे प्रम्पः विद्याः या हे प्रम्पः प्रद्याः यमः विद्याः या हे प्रम्पः प्रद्याः यो या हो। या विद्याः प्रम्पः प्रद्याः यो या प्रम्पः या र्शेन्द्र त्वन प्रते ख्या श्री राजे।। क्षेत्र पुरसे के सम्बद्ध व्या श्री राजे।।

र्श्वात्त्वानी सं धिया न वे अट या विदे धि यो स्टानी प्रह्मा ध्रया नु स्वात्त्वा यो स्टानी सं ध्रया नि सं ध्रया स्वात्त्र स्वा

यन्तर्भित्रः स्थानित्रः स्थानित्यः स्थानित्रः स्यानित्रः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्यः स्थानित्रः स्थानित्रः स्थानित्यः स्थानित्यः स्थानित्यः स्थानित्यः स्थानित्यः स्थानित्

गशुस्राया धियोदेः श्वाप्ता स्थायात्वा या न्हेंस्राग्रीः हेंद्रा

श्रुयः द्वासी सह्याः त्वा स्वासी स्वास्त्र स्वासी स्वासी

क्र्यान्य के दार्ग निष्ठ न्या निष्ठ निष्ठ

वेश्वाश्वर्यात्राष्ट्रम्थाः विदेश्वर्याः विद्याः विद्

र्चनाः सर्वेदः भेना नादः यसः सुद्दः निर्मान सुर्मान सुर्मान सुर्मान सुर्मान सुर्मान सुर्मान स्थान स्थान स्थान स्थान सुर्मान स्थान स्थान

त्रे स्वाप्त्राच्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात् त्रे स्वे स्वे स्वाप्त्राच्यात्र्यात्यात्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्य

र्वेद्राण्ची प्राचित्र के स्वादेश के से ए स्वर्ग मा से द्राया है स्वर्ण के स्वर्ण के

ने भूर भी मोदे भ्रे माद्य स्थय देया पर मुख्य स्था मोदे पार्ट स्था मोदे स्था मोदे स्था मोदे पार्ट स्था मोदे स्था

लुयान्यक्षेत्रान्यन्यक्ष्ट्रान्यक्ष्ट्रात्वित्। क्ष्यान्यत्राम्यान्यत्वेत् चात्रक्ष्ट्रा र्हेन् हिंयाग्रुयाग्ट होन् यह अन् न्द्रा यो न्यायाय हेत्य हेत्य हे श्रूयाया ह्यारायम्यायायाया यद्भियायदेवादेवादेवाद्भयाम् राम्याया इसरायळट्रा हें द्रा हिंसाया सुराया यह या भूवराय हा व्याप्त स्मार्थ हिंदा है स्मार्थ से द्रा क्षेपार्देव पाश्याची चुन्न चेद द्यान हेंद चुने देव वा नयस्य या है हिंद चेद ग्री:श्वाद्या:घर:श्वादर्वी अ:ग्राटा। देट:अट:वे:अविशः श्वुव:घर:अ:घव्य:केर: ध्याः भूतः विं विदे ग्वितः न्वरः न्यः न्यः ने ग्वरं र नः इस्र स्थाः स्थाः व्यः वर्गामभा ने भूर गुभन के मार्भेन के रामभारेन या महिराय प्रमुद् देशन क्षुप्त वा केट हिंद भाषा श्राया याया के वें विशायें व कुप्त पत्त्र द्धिः श्रृंत त्र या पदी । क्षूर प्र पदा पदा दे । दा प्र पदा र या प्र पदा या प्र पदा या प्र पदा या प्र पदा या प नरद्रमें अर्धिः वाद्यश्रास्य इसाधर द्वार्धि।

देशवःश्वें रःश्वें वानीःश्ववश्यः स्वाद्यः हेवः दरः सर्वो वर्दे वाशःशेः धेः वो द्वस्रशः वर्शे से वे श्वे द्वाद्यः स्वाद्यः हेवः द्वाद्यः स्वाद्यः स्वत्यः स्वाद्यः स्वत्यः स्वाद्यः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वादः स्वादः स्वादः स्वतः स्वतः स्वादः स्वतः स्वादः स्वतः स्

ग्र-र्-र्ग्नारायाज्ञाराज्ज्ञायाया

में देशनविवर्ग्याव्याव्यान्यान्यान्या ने त्यान्य सर्वी खेर हे त्यन्य। यः सर्वे से ते नि प्यान में नि श्रासर्वे श्रिं भी निमः व्याप्त सुमा स्यायाम्ययाग्याम् ने निवा गवाने साधिव शुराव दे॥ धियो स्रयः विदः नई दः परः ग्रा द्येर्द्रम् म्यायाम्र द्या श्चायाञ्चाराहे प्रविदः रा दे व्यादस्यायानञ्चनामरः ग्रा ग्रायस्य र्वेष सम्मित्रक्र प्रमुख्य <u> ५४:वस्याकुः हे र्से ५:यायशा</u> य.त्रश्चाय.य.ह्या.त्रर.ह्या मकु'नईस्र रा'यश' विन्'राम्'श्रू॥ दशःदसुवान्त्रे नदेः सुना दशः नुनु हः।। वस्याविदानहेग्रम्भारावेःधानोःधद्या र्गे देयानविन न्यून या धेन ना वर्रे 'यद स्वय विद न सूना र है।।

यहायः स्रायतः सः है निवेदः देश वेशः गशुरुषः प्रति देशेहः दशः श्रेपाः न्याः सः प्रति । प्रसः होत्।

प अवदः न श्रन् ।

विश्वास्त्रम् र्शेष्ट्रम् विष्णायश्चेष्ठ्रश्चर्या विश्वास्त्रम् विष्ण्य । स्त्रीय । स्त्रीय

याववरालटा र्जूब्रिंग्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यानस्य विद्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यान्यस्य विद्यानस्य विद्यान

कुंवा-विव-प्र-वाश्वर्या।

भ्रमश्रादित्रः वाश्चेत्रः हिं वाश्चायः वात्रः व्याद्यः व्यादः व्याद्यः व्यादः व्याद

ग्वन्यान्द्रं द्वानिः श्वानि स्वर्धः विष्यान्त्रः विष्यान्तः विष्यान्त्रः विष्यान्तः विष्यान्तः विष्यान्तः विष्यान्तः विष्यान्तः विषयान्त्रः विष्यान्तः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विषयान्त्रः विष्यान्तः विषयान्त्रः विषयान्य

निवा क्रिंव वह्या कृति माना के विष्ट्री माना

र्थे के 'नम्या'नम् अवेम् अवेम्य

ग नर्रेशःग्रेःनेत्

र्श्वरह्नानिः र्यः ध्वान्तिः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विषयः व

राणियायन्यान् होन् र्यायायान् स्वाप्त स्वाप्त

गलु नर्रसः नेगा यः र्रेग्या यः र उत्यार्थे र पा यदि यः यद्धे दि ।

चेत्रसर्थे स्टान्ट्र्र्स्थ शुः सावचेत्रा चावेत् चावेत् शुः साव्ये स्वार्थ स्वार्य स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्वार्थ स्व

मिल्रेश्वर्सिन्द्रस्यमित्राधित्रस्य प्राचित्रस्य मिल्रिश्वर्स्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्स्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्मिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिक्र्यम्य मिल्रिश्वर्सिन्द्रम्य मिल्रिक्र्यम्य मिल्रिक्र्यम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्रिक्र्यम्य मिल्रिक्र्यम्य मिल्रिक्र्यम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्य्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्र्येष्ट्रम्य मिल्य्येष्ट्रम्य मिल्

र्श्वायह्याची से धिया यभे वा यस दुः यहिन सर्वा यहिन होना सर्वा यावर्षियानार्थे। वर्षेयाचेनाक्षानु चुन्नानु चुन्नान्ति सूरानवे चेनायार्थे । न्रेंशर्से न्रा वसारु विदेशसर हेर विदर्शे । सर्र सार्वेवानर हेरा वर्त्रेयावीं भू तु हो दार्थीं द्रायहेया विषे हो दायशाम्य या हो दा ही भू भू दे क्रमान्द्रमान्त्राधितानमान्त्रमान्त्रमान्त्रम् । व्यापान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रमान्त्रम शे.रर्नास्त्रम्बर्ग्यदे ग्रेर्क्ष्याः इस्र ग्राम्य केरावस्य वर्षाः उत्ते। गन्न या तिर्दे सार्थे। तिर्दे न छेना छेन न स्वीदा से दे होना छेना छेना छेना से स र्शेवार्या भीतः तुः सदः देश । भीवार्याय सूत्रायितः तुर्यादः सूत्रायः यहवाः या देः सायविराग्रीयाञ्चरा सर्रायायम्यायाविषामा सर्यायमेरसामये स्नामस वेशःश्रीम्थः नद्या द्वेष्यः विद्यान्ति । देवः श्रीम्यान्ति । विद्यान्ति । विद्यान्ति । विद्यान्ति । विद्याने । वर्गे नरव्युरक्ष्यु रुप्त हो द्राया विवासे द्राया स्थान स ब्रूट नवे नु न ने द त्युर अदिर अपि द अप्रेंद पा इस्र अपि में द प र्गे।

त्री स्वास्त्र व्यामा स्वित्त क्ष्य स्वास्त्र स्वास्त्र

प अवदः न श्रन्था

शे हिते विषासुर है। इनिये ग्वित नश्चित ही र विश्वास मावित हर

देश श्वी न विश्वास्त्र विश्वास्त्र न विश्वास्त्र न विश्वास्त्र विश्वास्त्य विश्वास्त्र विश्वास्त विश्वास्त्र विश्

दह्मासद्धः मुरुष्यः यात्राम् विष्यः विषयः विषय

क्रुन्दिन्यास्तिः क्रुन्दिन्यास्त्रात्ति क्रुन्ति स्थान्यास्त्री स्थान्यस्त्री स्थानस्त्री स्यानस्त्री स्थानस्त्री स्यानस्त्री स्थानस्त्री स्यानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री स्थानस्त्री

इस्राश्चित्रविष्ण्यति निर्माण्य स्वार्ष्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्ण्य स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्वर्ण स्

लट. इ.चतु. क्ष्या जा

र्शे वे निर्वाद्य संदूर शामित्र

वेशमाया

र्शे दे नियान सम्बद्धिया

विश्वान्त्रीं नर्देश नुश्वायायायार्देश हैं नवद कुया सक्त शेर मेश षात्रे सळ्दा से दारे या न देया में प्रमा र्वत्र्रम्भेजव्रादिरस्रेर्स्याव्याप्त्रम्याव्याव्याव्याव्याव्याव्याव्या इनदेन्भ्रन्याशुःश्चरःनस्देन्त्रं भ्र्यान्ययाग्रेन्। श्रेष्यम्याग्रेन्त्रः ग्री:पटा वरीट्रसूट्गी:न्या यर्द्रव्रामी:मुर्यायाःसवदःपयाःस्। वियः नन्द्राचा स्ट्रा न्या स्ट्रा स्ट्रा निवा स्ट्रा स्ट क्रिंस विश्वासित निर्मा निर्मा सुन्य स्त्र गल्राम्बन्द्रमार्थे त्रायदे मेत्र श्री अ र्थे द र्शे द राम्याय स्यय । यदि । वर्ति वर्षा के वा भारत्य व्याचन भारत्य भूरारें। दिते श्री साहवा भारत नर-८र्देश-शुः अ-र्वेद-ध-इस्रश-भुग्रश-सूद-८, नव्या-द-व्रोध-के-न-स गर्नेग्रायां वर्षेया वर्षेया वर्षेया देश्येया व्याप्याया इयया यया देशा विया उसामानिनामासी निन्सामन सम्मिन

म्यापे क्षा म्यापे क्षेत्र म्यापे क्षेत्र म्यापे क्षा म्यापे क्षा

त्रक्षाञ्चा।

यात्रह्याः सः स्वाभा निर्म्न स्वाभा निर्म्न स्वाभा स्वाभा

वर्षराहेवायोयावरावाययावाष्ट्रराधाः हिते हे साधाः आयावायाय वर्षर्भारा प्रताहेशक्षराद्या स्वाताया

र्से दे त्यन्य मान्य न्य स्त्र स्या। स्त्रीत्र मान्य मान्य स्त्र स्या। स्त्रीत्र मान्य मान्य स्त्र स्या।

विशः त्रुरः त्रः सहि । प्रदेश वर्षः वर्षः त्रुरः त्रः व्याक्षेरः हिंवा । व्याक्षः त्रे व्याक्षः व्याकषः व्याक्षः विष्यः व्याक्षः विष्यः व्याक्षः विष्यः विषयः विष्यः विषयः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः विष्यः

णटाकार्यान्त्रीत्राचार्यात्रीत्राची स्वीयाच्यात्री प्रत्याची स्वीयाची स्वी

यहिरामण दणी व्यवस्य के सम्मान्य स्थान स्यान स्थान स्य

स्रवत्त्रभ्यः त्रिम् त्रिम्

यश्चराया यन्याक्ष्यायोः क्ष्र्वायोः क्ष्र्यायो स्वर्णाया स्वर्णाय

नवि'न'य। यथिग'यन्शक्षंग'हां थे पर्मे नम्सान्न महत्वस्य निम्न स्थान्त । यहत्त्रस्य निम्न स्थान्त । यहत्त्रस्य स्थान्त । यहत्त्रस्य स्थान्त । यहत्त्रस्य स्थान्त स्थान्त । यहत्त्रस्य स्थान्त स्थान्त स्थान्त । यहत्त्रस्य स्थान्त स्थान्त स्थान्त । यहत्त्रस्य स्थान्त स्थान्त स्थान्त स्थान्त । यहत्त्रस्य स्थान्त स्थान स्थान्त स्थान स्

देश्वरम्भर्थव्यस्यार्श्वेद्वायेर्थ्यस्य क्षेत्वाय्यस्य क्षेत्वायः स्वरम् स्वरम्यम् स्वरम् स्वरम्यम् स्वरम् स्वरम्यस्यम्यस्यम् स्वरम् स्वरम् स

म्यान्य वर्ष्ट्र-दिन्यम्यायः स्यान्यः स्यान्यः

श्रमा नन्मामालवरन्त्रमाश्रुत्रम्भी मेरित्। या नर्देश्रमी मेरित्रा

ह्वारायह्वायी अन्य शुःह्वारा न्याय निवास विश्वास स्वारा विगार्थेर् हे ता भ्रम्थायरेर द्रें यायय र्यायुय प्रान् इ हेर्यय । गशुस्र-१ नन्नाम्नव्य-यसमाशुस-१८। वन्स-१-१३ सर्देरस-१,सः गशुस्र सँग्रस सुस्र रहेन स्वाप्त होत्र स से नित्र में स्वाप्त से स्वाप्त स वर्तेषान्त्री। विद्रायराद्दा ग्राह्मायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्यायाव्याया व्यास्त्रर्भेत्र व्याचेत्रम्प्त्रम्प्रस्यस्य स्रित्र्ये व्यामि विद्रस्य र्शेग्राश्चर्यात्रेनाधेर्पायशान्त्रीं के निर्देश्वर्य यशानादिना होता यःसॅं-५८-५६४-शुःदब्रेव्यन्वदे-५न८-५, न५८-५४-ब्रे-५-४-४-१४-४ देवे होत्यान्यावरमायावन्या हेया हा द्येराव विद्या देवे यगाय। यगाक्रः स्रे ने स्याया स्या | ने सामसूनायमः ग्रु नवे स्या ग्री नि सामसूनायमः ग्री विकास स्था स्था स्था स र्रे न्दरने न्दरवरोय नवे ग्रुन्य वर्षाय पाव्य वेषाय वेषे से दारी या नाई न् न्मेर्न्नः भेरः श्रॅरः न्दरः ने र् अः तुरः न उदः यः श्रें वाश्वः श्रें। । ने वित्र न् नुः नः न्दायमान्दानु कु वेमामान्यमान्वनान्दायो होन्यामा स्थाप <u>५८। व्याना वेदान विवास वे द्राया द्यान व्याना वेदाय स्वाप्त प्राया व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त व्याप्त</u> नुसासार्वेद्यासर्वे । निर्मन्त्रनाउन् जुदे निरार्श्वेदाने निराम्बेदे त्यना नीसा न बुद्द निवे सूर देश देद की वार्षेद किया होता द सूर वार्षेद ग्री वार्षेद्र होता द स्थान वग'नउर'र्क्स हिंद'ग्रेश'ग्रह'दे'सूर'र्केद'ठेग ठेश'रा'सू'तुदे'द्रेर नर्हेर्गीर्याविद्यारियार्यात्र्यात्राच्यात्रेयात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र मावव माहे अ शु प्र हो द प्रदे द्वाद द्वाद हु । हु अ व हो द प्र माई के प्रमा प्र द र वेन्यययान् स्रामे महिसानन्या वेन्या सिन्या स्राम्या याउन् विरो वर्षःनिरःनर्वेषःनउर्रःदेषःमःष्ट्रःनुषःसर्वेदःदे । नुषःमासुसःनरःश्वरःदः चुःकिंगाः उत्रादे सार्वेरसामा न्या चुन् किंगाः उत्रादे नाः स्वा चुर्साकिंगाः उत्रा वे प्यत्रामा सुषाळे वा प्राप्ता वा वा सुस्य सुरा प्राप्ता स्वर्ण धिव दें। विवादर विवादा विकादर विवादि से विकादि कु: ५८१ अन् ५८: नश्चन्या अस्टर्ग्न अस्टर्न अस्टर्ग्न अस्टर्न अस्टर्न अस्टर्न अस्टर्न अस्टर्न अस्टर्ग्न अस्टर्ग्न अस्टर्ग्न अस्टर्ग्न अस्टर्ग्न अस् र्श्वेर मुदे प्यश्र के वा प्रा देशवा श्राम्य प्रायेश व प्रवेश व से हिंवा है प न्वीन् पंदे वहं अ र्शेवाश्वा बुवाश से विशुन् नदे वश्व स सिवा हमा गी हिन धराद्याविदाविवाधाङ्गाग्यविष्ठेष्ट्रमायाद्रेयाधवेष्ट्रवाश्चीयायेयाद्वे ह्वारायह्वायायायायायावेराम्यायादेश्चायाद्वास्त्राद्वायाद्वास्यायाद्वास्त्रायायायायायायायायायायायायायायायायाया वर्रे तः श्रृं तः नृदः नृष्ट्र र श्रृं तः यदे यात्र या र से या श्रु या ह्या या वर्षे वा या

प अन्यत्युर्या

त्राम्यास्य वित्र वित्र

केशनर्गेन् महस्रश्ये केन्न केन केन्न केन्य केन्न केन्

नवाःश्रुवःक्षेवाःसःधेनःसरः होनःसःसँ निर्देशःश्रुःसेनःसः स्वाः वित्रः। नवःश्रुवःक्षेवाःसः वितः नवाःवःसेनः वित्रः सःस्वाः स्वाः स

यदे द्रान्त सा बद्धित्य स्व क्षेत्र स्व क

गर्यागुःवर्याग्रेर्यात्र्याश्रवा

हेश्यतिः भ्रम्याधित्र प्रश्चित्र विद्या विद

स्तर्भावश्वास्त्र विद्या स्तर्भात्र स्त्र स्त्

क्ष्माड्या ब्रिट्-त्य-द्रमाम्श्रम्भद्र-व्यक्ष्माम्यद्र-भ्रम्भ्याम्यद्रम्भः व्यक्षम्य विष्ण्य विष्णप्त विषणप्त विष्णप्त विष्णप्त

रम्यान्तरम्भुवार्थः श्री व्याप्तर्थः श्री व्याप्तर्थः श्री व्याप्तरं श्री व्यापतं व्यापतं श्री व्यापतं व्यापत

लट्ट्रन्थं स्वाका क्षेत्र स्वाका क्

र्याया शेर्ष्यानर्गेत्रायदेत्रेत्राय्यके नदेः क्रिंत्र श्रीययोषायश्री

नन्त्रमा न्याय्यस्य । त्याय्यस्य । त्यायस्य । त्याय्यस्य । त्यायस्य । त्

भूत्रशत्मे राजन्वानाव्यत्ता व्यक्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या क्षेत्राच्या व्यक्ष्या क्षेत्राच्या व्यवस्था क्षेत्राच्या कष्या क्षेत्राच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच्या क्षेत्रच

ने प्यत्त्वम् श्चित्त्वाक्षः श्चित्तः श्चितः श्चित्तः श्चितः श्चितः श्चित्तः श्चितः श्चि

श्रेन्।

चेन्-प्रम् (यान्यान्याम् १५,५) अ वेन् (वर्षे अ १५,५) र्षे अ १५५० (युन्-यादे अ १४ । चे या च १८० ४ (वर्षे म् १५५०) र्षे अ १८५० । विकास १५५० । विकास १५० । वि

भुःत्)वस्याये न्यवे॥

न्त्रेन्न्नेश्वे। (इन्द्विन्त्र) हो ज्ञानिक्ष्य स्त्रिन्त्र । व्यक्ष्य द्वी व्यक्ष्य द्वी व्यक्ष्य व्यक्ष्य विश्वेष विश्वेष

त र्श्वरद्वान्यः भेषाः र्श्वरायदे गुः ग्रेन्थः स्वाप्ताः स्वरः भेष्ठः व्याप्ताः स्वरः स्वर

य र्वेदायह्याः अविद्या विवा धिवावादायाः विवाधिका विवाधिक

- च र्क्षेत्र पहुना प्रश्ने विना इक्षेत्र प्रहेन प्रश्ने विना इक्षेत्र प्रहेन प्रश्ने क्षेत्र क
- स्वास्त्र क्षेत्र विष्या क्षेत्र क्
- ळ अर्गे उत्र श्री व्या क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्षेत्र क्षेत्र प्रत्य क्षेत्र क्
- स र्श्वरद्वार्यः भेगार्भेनः स्ट्रायः स्वार्यः स्वर्यः स्वर्यः
- त्र र्श्वित्वह्याः अविद्याः विद्याः प्रत्याः भित्रः विद्याः व
- म त्रायि हेश पहुना उत् श्री भी नो भी त्राति हिन त्यान हिन । स्राप्ति हिना
- न नः इना उवः श्रीः भो गो भो वा वा श्रिनः यन् श्राक्षे ना निरः श्रुवः की ना निरः सुरः भो वा स्वारं वा स्वारं वा स्वारं वा स्वरः भी वा स्वरं वा स्वर
- याव्यत्रः स्राप्ति । स्राप्ति ।

- य वा ब्राया अपने स्था क्षेत्र । स्था कष्ण । स्य कष्ण । स्था कष्ण । स्था
- य विश्वेदिया ब्रुवाश त्युम् श्री विया यदि स्री त्या विश्वेद या ब्रुवाश विया यदि स्री त्या विषय विश्वेद या विश्वेद
- त शरे प्यत् वहुवा उद प्येद द द स्थान प्रत्य के वा प्रतः स्थान व स्थे प्यत् वहुवा उद प्येद स्थान व स्थे प्यत् वहुवा उद प्येद स्थान व स्थे प्यत् वहुवा उद प्येद स्थान व स्थे प्यत् वहुवा उद प्याप्त स्थान व स्थान व स्थान वहुवा उद प्याप्त स्थान व स्था
- य यशक्षेत्राः भूति स्वितः यवि धितः त्रित् ग्रीः धिः यो से प्रतः तः यदिशः यशः भूताः से प्रतुतः तशः से वित्र
- इ अर्गे प्टर्निम् अन्य सेन प्रति सेन मिने प्रति स्था सेन प्रति सेन स्था से स्
- कं र्वेत्रवह्याः अनेदायित्र यादा स्ट्रा वित्र वित्र के वित्र वित्
- द् यशक्षेत्रभूत्रप्रेश्वरप्रवेश्वरप्रविधित्रभूत्रित्रणेष्येगे।यश्वरद्याः निवेश्वर्थन्वर्म्यश्वर्ष्याः
- - व र्वेत्रवह्याः वे प्येताः वितः स्टानितः स्वानित्रां स्वानित्रां स्वानित्रां स्वानित्रां स्वानित्रां स्वानित्र

धेव व हिंद छै व वह्म न धेम अ धेव प्रश्न हो ।

- व रुषःगश्चमः भूवः पवेःगव्यान्याः वर्षः । व्याः वर्षः । वर्षः
- त श्रेट्स मिट्यो प्राप्त के प्रा

- य नुश्रामश्रम्भूव मद्भान्य व्यास्त्र मही प्रश्रास्त्र मित्र क्षित्र स्त्र मित्र स्त्र स्त
- भ्याः भ्रम् । अर्थो । उत्तर्भ । अर्थो । अर्थो
- य श्रीटामानि न हे माश्रास्य प्यत्या स्वाप्त माना प्राप्त स्वाप्त स्वापत स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्
- त्र व्याप्तात्ते क्षाप्त व्याप्त व्यापत व
 - ष वर्षेद्रम्ब्यायायम्मः मीःययाक्षेत्राधेद्रम्भिः मीः प्रमास्य

गदेः भेरः गविः दशुरः नशः भेः विना

ने द्वारा के प्रकार के प्

वरायासुरवविदेश्चित्रस्यार्यते इत्यार्श्चे दाया

- (१) र्श्विप्दह्याः श्रः त्राप्तः स्प्राप्तः स्वाप्ति । श्रिमः संप्ताप्तः स्वाप्ति । स्व
- क्ष्मामहिश्वास्त्रम् । याः स्रेतिः सर्वो स्वतः स्वी त्यसः क्ष्याः प्रमान्या स्वाप्तः स्वी त्यसः स्
- (३) उःश्रेवे सर्वो उत्राची त्या क्षेत्र नित्र ची त्या क्षेत्र नित्र ची त्या क्षेत्र नित्र ची त्या क्षेत्र नित्र ची त्या क्षेत्र ची त्या चित्र ची त्या क्षेत्र ची त्या चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र ची त्या चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र चित्र चित
- (८) राष्ट्रेत्रायहिशायाख्याची । विश्व साम्यास्य विश्व साम्यास्य स्वाप्त स्वाप

- त्रश्क्ष्यां यहिश्वाय ह्या विष्टित्य । यह विष्टित्
- यश्चित्राचित्रभाषाः भ्राचि। वश्चित्राचित्रभाषाः भ्राचि।

यद्याद्यात्रभूत्याद्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र्यात्र

इस'द्या'च'सूद'यद्गर'सूद'ळयास'प्रभा

सवतःभ्रम्भयःनवरःन्याःषःभ्रमःसद्या

विश्वान्त्रः त्रीत्र विष्याः श्वान्त्र विश्वान्त्रः त्रीत् । । । विश्वान्त्रः त्रीत् विष्याः विश्वान्त्रः विश्वान्त्यः विश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्त्रः विश्वान्तः विश्वान्यः विश्वान्तः विश्व

न्त्राच हेसद्वाचीह्यस्थियः श्रीद्वाया १ हेसद्वाचीह्यस्थियः

हेशवह्याधीयो नड्से ला।

र्थे से संस्टरम्ब्युस्य दुः न्त्री। से त्यः श्रे अग्तुः स्त्रा त्रे द्वी । से त्यः से प्रस्टर त्रे त्रा त्रे स्वा त्रे स्व त्या के स्व प्रा त्रे स्व त्या के स्व प्रा त्रे स्व त्या के स्व प्रा त्र स्व त्या के स्व प्रा त्र स्व त्या के स्व त्या त्या के स्व त्या के स्व त्या के स्व त्य

ग न्देशःशिःदेवा

र्वेत् अदि न इस्य रिंग्य स्था के स्य स्था के स्य त्रा स्था से स्था स्था से स्

हेशतह्यायी थे यो या प्रत्याय से प्रत्य से प्रत्याय से प्रत्याय से प्रत्य से प

सबदःशदेः प्यदः वहुना उदः श्चः इना सदेः वहीदः श्चे शः तुः वहीदः दृदः हनाः नगनः क्षुः तुः गानि हे राशुः प्यानि हिषा से दः रान्दा व वद्य वे राष्ट्रः तुः प्यानः वह्रमासेन्यरस्य वन्नि रायहमा उत्सु न्याय दे । बःसःक्षेत्राशुस्राद्या र्ह्याधीयाःयाशुस्रायाःयाद्या दस्रसाक्षातुःसदेःषदः वह्रमा उत्र श्वा वित्र मंदे द्रमा मार्से उसा द्रमा मारा श्वसा सामद सुरा द्रारासदे सवरः धरः वहुगा सेरः सः दरः वः सववः उतः तेः श्वः वितः तः वतः सः श्वेः वतः सवेः श्रेर्याविवे से भेगा गो सम्र दि भारत् म्या भेर्यो र से द मा है स गा दर। वहवाक्षुत्रुः श्रीरामि विदेशें स्थिमा मी सम्राध्या वहुमा से दारा मिं ता है। गिहेशके क्षुन्य सम्बद्धित । स्वर्ष्य सम्बद्धित । स्वर्षे वर्ष्ट्र स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर्षे स्वर ग्रविदे से भिग्ना मे सबर प्यट प्रह्मा पेंद्र स क्षु नर स त्य द्रा विद ग्रहेश गदिःकः न्राध्याम् अर्वः पादिशास्त्र विद्या स्राप्ति। स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्राप्ति स्र ग्रिते संतिरंगी सम्राध्य प्रम्या विष्य में प्रमानिक स्त्री स् इमा विद मार र्दर से प्रमुर न सक्द से द से द से मा शुसर् र दे हो नर वर्देन दी विश्वास है शे हिये नवेन स शुक्र श्रेम श्रेष्ठ स विश्व

ग्रेन्दी इनम्

इयाःवयःयर्भःयाश्रेशःर्ःयह्या। इयाःवयःयरःशःयाश्रुशःर्ःयह्या।

तर्ने न्द्राप्त न्द्र न्द्राप्त न्द्राप्त न्द्राप्त न्द्र न्द्राप्त न्द्र न्द्राप्त न

प अवदः न्धुनः भा

मूर्य । जुन्नान्य त्रित्र स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्र स्थानित्र स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य स्थानित्य

वी-क्रं लिया-लिव-स्वर्धित्य-अन्त्र स्वी-स्वर्धित्य-स्वर्यः-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर्य-स्वर

१ हे अप्टह्मामी हमाअप्यीपट्टमार्ख्या

ने प्यास्त्री क्षत्र क्षेत्र त्रेत्र त्रेत्र क्षेत्र क्षेत्र

यद्भाषायह्यायीयातुरः

बेशन्भेगश्चीश्वास्त्रम्य स्वास्त्रम्य स्वास

प सबदः र श्र र र ।

यश्चरः ह्या त्र्या व्यापात्र व्यापा

नवनामित्रम्भात्त्वा प्राप्त स्थान्त्र । विश्व स्थान्त्र न्या स्थान्त्र । विश्व स्थान्त्र न्या स्थान्त्र । विश्व स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र । विश्व स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्र स्यान्य स्थान्य स्थान्त्र स्थान्त्र स्थान्त्य स्थान्य स्थान्त्य स्य

यदा देश'बेश'या म्बद्दी श्रुप्त प्रति । व्यक्ष्य । व्यक्य । व्यक्ष्य । व्यक्ष्य । व्यक्ष्य । व्यक्ष्य । व्यक्ष्य । व्यक्य

नेशःविदःसःर्रेषःध्वेदःषःस्वःन्हेंदःहे॥

८८। यर्हेर.हीय.मि.अकू.जश

यायम्यक्षान्द्रमान्द्रम्या

न इन हे सूर वह्ना रायश सुवे वह्ना छ्या

इ.क्षेत्रः क्ष्यः स्याच्ये अ.लुच्या। इ.क्षेत्रः क्ष्यः स्याच्ये अ.लुच्या।

र्यं न्यू अयर्थे न्या है या अया है दान्यू अया इना विव नर सामा शुसार दिना। इना राम्युया हे दान स्वतः प्रमा गयाहे विदायादा इता दे यदर दर में क न्या ग्रेया ने प्यट इमा विव मिहिरा सु दिशी अविद्याशुअर् प्याद्या हिंग्राश्या इन्। दरः स्रदः दः इन्। सरः दशुरा। वितः प्रः श्रदः वितः यसः दश्चिम्। गहेशगाद्याद्र श्रुर शुर द्या ने वे निष्ठेशमा उव नु निष्ठुमा यिष्ठेशागान्यान्दासा न्दर्भारते से त्यूरर्भे। ने अवादशुराद्या अळवा गांवे अपदा यक्षवासेन्द्रमान्द्रमाशुसान्द्रमा देवेश्वाधायह्याः द्वार्या

ग नर्रेशःग्रीःनेत्

श्रेयः नवे श्रूनः नुर्वे । विश्वः यवे व्युः गहेरः र्कु वः नित्रः पर्वे रः श्रेवः नह्याः । विश्वः यवे व्युः गहेरः

ने निवित्र नुः अविदः माशुअ नुः महिंग्य अ सवे हे अ वह्या मी धि मो तः रायाम्बर्धाने सूर्याम्बर्धान्दर्यो यह नर्यो द्यावि दर्दे सायह्या नर ब्रद्रमाहेशगायायक्षद्रमें याययात्रा येदामावे में धिमाद्रमाय प्रदास्त ५:५मःमेः अ८:५६मः अ५:६:४४:अ८:५४५,५८:४४५८:३४५ धरादशुरावाद्यावेषा अदाविः अपिषा विवासाद्या अदावाचीः लट्यह्यासेट्रपंदेके वहवास्य स्वास्य विष्य स्वर्थन्य स्वर्थन्य स्वर्थन्य सेट्र ग्वि'स'वेर'वर'स'र्राधर्'व'र्'र्ग्यो'मे 'धर'वर्ष्ण थेर्'या बर्र् इमासरावश्चरावादरामाशुक्षावे वश्चरावाक्षावे रात्राह्म केरामावे केंग्सिमा व्यासान्द्रायाः व्यास्य ळ अहअ ५ १ १ वर्षु र न हे अळव गहिशा अंद ५ ५ १ । अंद गवि अदि गी थे । यो इस्राय हे या पहुंचा सारी रावा राया गुरु या वा या वी राय रायहुंचा बेर्केर्जाविर्गहिरागार्राया अर्था अर्थेर्जाविर्गर्र्या वशुरानासम्बन्दराळरासवायाः तुरनरासा हेदात्राम्य सारा हे सळवासेदा यादीरार्टे। क्रि.सळ्यारेष्ठामेयाग्रीयायादीरायायग्रीरायासळ्याप्रेया यक्षवासेन्यासुसान् वर्षेन् नर्वे सामाने वे सुदे वह्या स्वापित के । वर्षे वीत्र्याकुःइसःइऽभाग्यद्राधिःशेःतिःवयःख्राःद्रा ५५वान्यःकृतेः दर्वतःसः द्वाद्रभाष्ठतः युवाद्रवेः हे भाग्यद्रपः प्रदेः हवान्यः यहवाः द्वाद्रवादः विवाद्यादः विवादः विवादः

प अवदः न्युनः या

यर्डे अःस्याअः वह्याः हु। ह्यां याअरः वयावः वियाः वः अळवः यहि अः अः गिरुशागिते क न्दराध्वासरावश्चराय। सर्वदासे दास दिरा वी स्नानशाविता देवायायायवुराश्चेदाग्रहार्हेदायाथ्यवाधेवायाधेवायमः हेवावाल्वायाळे। कुर र्श्रेग्र रा गुरे र्श्वे त्र रा द्या पर रा हिंद के र्श्वा यस रा हिंदा के र्श्वा यस रा हिंदा वित वार-र्वर-भे-व्युर-व-भर्देव-शुभ-ग्रीय-ग्रय-भ्रः ह्वें-व्युव-व्यर-भ्रे-द्वें यः र्शे विश्वान्यर्भरमायर्भायान्ते वात्रहेत्वश्वास्त्रात्ते वात्रे साम्यान्य विश्वान्य वि ठुःनःवर्दे भेरिन्दे। सळव सेरास वेराया भरावह्या भेरिना उव वियान १८ यन्तरसळ्त्रसेत्सादेत्यो स्रिकाळे का इया विदायहिका गान्तरसा स्तरस वेशन्त्वन्याम्हेश्यायायायायायार्येन्यश्वन्त्याकुःइसःइन्स्यानेदेः श्चेत्र नहें त त्र स्टा खुना वा न विना या दे । यह द । खुन हों च दे । यह ।

याक्षर्यस्थित्वी श्रेन्यस्वित्वा श्रेन्यस्वित्वा श्रेन्यस्वित्वा स्थान्यस्थित्वा स्थान्यस्थित्वा स्थान्यस्थित्व स्थान्यस्थित्व स्थान्यस्थित्व स्थान्यस्थित्व स्थान्यस्थित्व स्थान्यस्थित्व स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्यानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्

मालक्ष्याः भूत्रभावदेशः इत्याः माल्याः इत्याः माण्याः विश्वाः व्याः माल्याः भूत्रभावः विश्वाः व्याः माल्याः विश्वाः विश्वाः व्याः माल्याः विश्वाः विश्वाः व्याः माल्याः विश्वाः विश्व

नेयावर्देर्पात्रस्थयाग्रीयादेप्तामी मात्राव्यानसूर्वे।

र्नेन ग्री पहुना कुल अर्ने र नमून पा

द्वे ते द्वया प्राया है श्राण्ये ते है। श्रुष्टा या प्राया है श्राण्ये प्राया प्राया है श्राण्ये प्राया प्राया है श्राण्ये हैं श्राणे हैं

र्म्वास्त्राम्यान्त्रवार्ष्यायाः स्थान्यान्त्रियायय। अटायव्यायाः स्थान्याः विवास्त्राः स्थान्त्राः स्थान्त्यः स्थान्त्राः स्थान्त्रः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्यः स्थान्त्रः स्थान्त्यः

 स्रुसःस्। |देवे:स्रुरः अव्यान्वरामहित्रामवरः वशुरः वित्रावर्तुः स्रव्यः सर्वः

र्श्यः रूप्तर्वा स्वाय्य स्वाया । स्वायः स्वायः स्वायः स्वाया । स्वायः स्व

ग नर्सेशःग्रीःनेत्।

र्श्वरह्णानिविद्यः श्री रान्यते निवासा निश्चरान्य स्वराद्य स्वराद

प अवयः न्धुनः या

भूतरायदीर सुरिना सेट सहेरा यथा भूय केना में पहुना रहेया

श्रे-पुश्यम् ना ने न्या निष्ण निष्ण

न्व्रस्थ उत् ग्रुन परे में हे दे न्याय यात्र या अया नदे से वें माय या र्वे धिग्'न्'क्ष्'न'न्र्'संदर्भ'सं'य'यह्ग्'सर्न्नभून्'सदे अवर् देव ग्राम हो न से जावव न ने से अन्ता

वर्रेषानवे वर्षायावि र्श्वेत वह्ना

बेद्रस्रदेशःविद्याद्रहुद्या

यदा र्याम्येष:र्हेन्यदेव्यावस्याः उत्तीःवयःक्षेताःवादन्यः सरः वह्यान्य के नेव हुन्यर है। विवे धी यो या हैया सुर सर्वे कर या वार्के द प्रश विधिया चक्किताचदुःविषयया यःचदुःविधिया चारःचयःविच्या यःस्रयः रादे विषय भी विष्ट रें किरे राष्ट्र विषय भी सम् मूर्य विषय विषय। ल्य-स्र-तिव्यामा यहेव.सद्यःपविमा श्रैव.पवियामा रिया.यनवायदः विश्व भ्रान्त्रभ्रभारादे विद्यार्भे वार्थ द्रा हे निवेद र वार्थ वार्थ भ्रद वयायाया वर्गेर्न्यते वर्गेर्या शेर्थेर्य्य स्थान वर्षेत्र वर्गेयाया मुलावस्था सुरवेशस्य देवासावसेस्य में वासादर वर्सेवास्य ने निर्देश वर्त्तेरशःश्रेष्यश्चिशःवश्चिशःयरःवःविदःवरःव्येतःव्यः वर्षःयःवःवदेः য়ৄ৾য়৻ঀয়য়৸য়৸৻য়য়৻য়য়৻য়য়৸৻য়৻য়৻য়৻য়৻য়য়

ॻॱॻॖ॓ॸॱॿॱॸॸॱॸॾॱऄॱॸॸॱॻॖ॓ॴॱॼॖॸॱढ़ॻॖ॓ॸॱॸॺॕॴॱॿ॓ॸॱॺॱॴॸॱ।

हिचः छेटः श्रेशः शूर्री।

श्रिचः छटः श्रेशः शूर्री।

श्रिचः छटः श्रेशः श्रुचः हो।

यदे व्याः यद्याः प्राच्यः स्थाः श्रेषः हो।

यदे व्याः यद्याः प्राच्यः स्थाः श्रेषः हो।

यद्याः यद्याः प्राच्यः स्थाः श्रेषः हो।

यद्याः यद्याः प्राच्यः स्थाः स्था

त्रिते त्रित्र्यावि है। शे प्रश्ना त्र धेन हिश्या श्राम्य शे त्रह्ना परे वित्र प्रमा के स्व के स्व

श्वास्त्र विश्वास्त्र विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास्त्य विश्वास

अत्यः विदेश्यः ह्यायः विदेशः विद्याः विदेशः विद्याः विदेशः विद्याः वि

निवर्यानियाः भेताः भुत्रः स्थया भेतः सुत्रः धितः प्रयाप्तियः प्रवित्रः विश्वः ८८। ८गूर्यत्रस्यक्षेत्रा अष्टियरः सरावधिता हुयरः सरावधितः भूः हुते वर्षेय प्रमान्त्रीय स्थान नहगान्यरः श्रुःनः वर्दे 'पॅर्'दे। अर्वे 'उद्गुः भूष' क्वें गायः श्रूँद वहुगा शे वर्षेत्रामः भुग्रामः के त्राप्परः भ्रुत्यः के नाः पेत्रः कर्ष्ट्रायः भूत्रः वह नाः नाहतः भेः वर्षेत्रसमायायाधेवाहे। न्येरावासूनायान्येयानेया विन्युम्यायायानेया वींवा यायर्वी अर्था भी वी वा शान्य प्राप्त विवा अवा वार्डे में हेवा श्राहेवा था सहिया डेमा विस्र सामा प्रमासा की मारी या स्थान सामित्र निया यात्रः वर्दस्यः निया यादस्यः हयाः याद्वेदस्यः निया क्षदः स्रयः दर्धयायः निम शुर्र्र्र्र्र्ड्रियः निम बर्यः द्युम्यः निम दें समिर्व्यः निम हेर्याः यान्वीत्रमान्त्रेन रायान्यार्थराष्ट्रेन व्यरायान्त्रीराष्ट्रेन व्यायान्यार्थरा डेग डेशःश्रॅग्रस्ट्रिंव दह्या र्वेन प्रदेश्चर क्षेत्र क्ष्या उत्। विस्तर्भन न्दर सम् सन्नदः धरान्यः संस्तिन्दे ।

नियाश्चरत्वायायोषायय। श्रुष्याधीयययरश्चिरश्चित्राध्याः ठेवा विवा निवा विश्वायश्चित्र विश्वाय स्त्रित्य स्त्राय श्चिता त्य श्चित्र । स्त्रित्य स्त्र स्त्रित्य स्त्र स्त्रित्य स्त्र विवा-भिवा-श्वांश्वांश्वः श्रीट्रा स्वयः यहेत् स्कुं यः द्वाट्यः वीशः र्षेतः वदः श्वः यहः विवाः वी क्षेत्रः श्वे तः व्यवः यहः विवाः वाः यः यो व्यवः य

मुरुष्य प्रम्य विष्य । या प्रम्य । या प्र

ग नर्रेशःग्रीःनेत्

द्वीः संविधः सं

दे निवित्तः हे स्वत्ह्याः स्वायाः भित्रः ने स्वायः स्वतः भ्रायः भियाः द्वाः निवितः दे हे स्वतः स्वतः

ने निवानि हवाश्रास्त्र स्वाश्रास्त्र स्वाश्र स्वाश्रास्त्र स्वाश्रास्त्र स्वाश्रास्त्र स्वाश्रास्त्र स्वाश्र स्वाश्य स्वाश्र स्वाश्य स्वाश्य

या वार्श्वयान्त्रः व्याद्वा हे अप्यह्वा क्रिं धिवा वी अर्थे धिवा द्वर्या हे अप्यह्वा क्रिं धिवा वी अर्थे धिवा द्वर्या क्रिं या वि अर्थे वा वि अर्थे वि अर्ये वा वि अर्थे वा वि अर्थे वा वि अ

प्र अवदः र्यु र य

भ्रवश्वर्ते र खुः हेवा खेट सहे श्रा क्ष्रित् गाः प्रा क्ष्रित । क्ष्रित । क्ष्रित । क्ष्रित । क्ष्रित । विश्वर ।

यदा हेशतह्यासदिद्यासर्थित्येशस्य स्वास्त्र स्

विश्वास्त्राह्म । स्वर्थान्त्राह्म । स्वर्थान्त्राह्म । स्वर्धान्त्राह्म । स्वर्थान्त्राह्म । स्वर्धान्त्राह्म । स्वर्यान्त्राह्म । स्वर्धान्त्राह्म । स्वर्धान्त्राह्म । स्वर्यान्त्राह्म । स्वर्यान्त्राह्म । स्वर्यान्त्राह्म । स्वर्यान्त्रा

यक्ष्यं स्वार्थित्य स्वार्य स्वार्थित्य स्वार्य स्वार्य स्वार्थित्य स्वार्य स

याः स्ट्रा विद्या क्रिंद्र स्थान स्

अया अदे ह्या अप्त ह्या प्रशेष विश्व है अप्त ह्या अदि स्यो अदि स्या अवद अप्त स्या अदि स्या अवद अप्त स्या अदि स्या अवद अप्त स्या अदि स्य स्या अदि स्य अदि स्य

गैर्यास्य भीता इत्यासदे भीता स्थान

यरनेम श्रुरावसकेत्रमा यसकेत्रमें वेसन्हेंन्नवेत्रन्यस रेशकित्रश्री र्रेव त्ययाके वर्शे विश्व पर्ये द्राप्त के स्वर्ण वर्षे द्राप्त देश के स्वर्ण वर्षे द व लेग्र निरा भेर व र्चे र भूर र र ल जिर हैं व र गरे सु अ र र न र ग र्देग्रथःश्री विशानन्तरायश्वी नशेषाध्वास्तरस्य विद्यामी स्नार्दा बश्चूद^ॱसेदॱवर्देग्रथॱग्रेःॡव्यःवःह्रग्रथःसद्धद्रशःद्दःवर्देदेःविदेवे।हिदःधरः इसरागुः विदे हे सूरासायदेशायर यहे दात्र राये हें वर्षाया वर्षाये हे हेन्स्वायरसूरसे। वेन्सून्छ।विन्तुःकेन्द्रक्रा केन्द्रक्रा के में न्दरकुर में के दर्भे न्दरकुर हु। के लेंशन्दर कुर लेंश के शके में केश कुर में केत सन्दर कुत या के या कुर माशुया केर में न्दर केत सें। कर कुर। करे कुर रे अँग्राय वर्षिय सेर केंग्राय हेग्रा सु प्यर प्रमुर वीकाक्षेत्यरावार्षेत्रयावदे त्वादे वेत् भ्रूत्यराव्याधेत् हें वाक्षेत्रया स्त्रा क्रॅं अ.र्. शे.दु.च दुःच देः द्या स्ट्रम्। वित्र शः म्दः इतः र् . व्रॅं वः यः विया या त्यः धेवः वैं। अर्देराव के प्रा के वं। के वं। के वर्षे। के वर्षे खर वे वें प्रा के प्रा के वर्षे खर वे वें प्रा वर्षे व क्षेत्रावाचाताः श्रुत्रावाद्याः वित्राव्याः स्वरावाद्याः स्वरावाद्याः स्वरावाद्याः स्वरावाद्याः स्वरावाद्याः स न्दावर्येयान्वन्त्रेन्यवे द्धयाक्ष्रान्त्रेन्यामहेषाक्षेयावा म्हान्द्रिन् नदे दरमार नहेंद्र नदे साधे दाये हित्य र से पद्य मार द्या में पार हित्य हैंद यन्त्रान्यान्याः विवाद्याः प्रति । यो विवाद्याः या यो विवाद्याः या विवाद्याः यो विव

हुर से द गुर के वा वी वर दश भ्रद वादरश ग्रीश प्यर वार्डे द दर सर गर्डेन्'से'वड्य देग्'ह्व्यःस्त्रुव्यःस्ट्रिन्'स्थ्यःस्विन्'स्त्रुत्र्यःस्त्रुव्यः श्रुट्याग्री खें तात्र त्वा श्वेता बेटा श्रुष्टें तात्र या यात्र प्रायत प्रायत हिता या गहिरासे वर्ता न इसरा दे विवासर के रात्वी रायदे गावत न्या पायदे विवास द्येर्द्राचे विवाप्य भेराळवा शास्त्री रेश द्रशान हें द्रायते छे। व्रुश हिता सर्वे मित्रयाध्रमा हित्र सर्वे कि लेश हेराना यस स्मारी का हिता स्मार विवासमें किवारी सुराविवासमें किवारी से नारा से विवास नारा है दे सूर न्रहें न्रहें नेंद्रशर्टें न्रहें न्रहें कर ने कर ने निष्य कर ने निष्य के न वर्षेयान्वन्ग्री र्द्ध्यानु वर्षे ने निष्ठे न निष्ठा है न कि निष्ठा में मिराया है न न्यवःविनःवेवाःहेवाः हिनः सेन् होन् यये वाष्यः केवः ये उवः वाः स्वेनः विसः केंद्र'सें 'बेर्य प्रयोग प्रमुन ग्री क्षें 'द्रय भेर प्रमुग्य प्रमुन है 'हैं र प्रमित्र है ' शःक्षेत्रावहें पाची क्षेत्रयायया देया के नवया यया देया के त्या विश्वास है। वेंद्रशर्स्टिंद्रस्के न उसामी क्षेष्ठ स्वाप्त माना सामित्र स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व कुःके नवे बद्दाद्या नहें द्वा दे द्वा के स्वा नहें कु नुवा मवे के द्वा सक्त नन्ग्रायाधीतर्ते। दिःसाधीतायमायसामेसाकेर्मान्दा यसामेसाकेता र्रे विश्वासुरान् सेट मी नर्ने सुन्द न्यय न्यादमेयान न्द ग्री सुयाद प्रेंद मन्ते में न्यम् या ग्रम्य विषाणित त्या सम् नु द्वारिया में मिन्नु नर्गेन्य म्यः के क्रुटः रे रे दे शेटः यः वितः वर्षेयः गुरुः के या शः के विटः या वृटः रे दः श्रीतः या रे वितः यो वितः वर्षेयः यो श्रीतः यो वर्षे वर्षेयः यो श्रीतः यो वर्षे वर्षेयः यो वर्येयः यो वर्येयः यो वर्षेयः यो वर्येयः यो वर्षेयः यो वर्षेयः यो वर

देवे: श्रेत्रः अप्यान्त्रः हित् ग्री अप्याह्तः प्रवे स्वावश्यादे । विश्वः स्वावश्यः स्वावः स्वः स्वावः स्वावः

नार्शन मिश्राण्या व्यान्त्र अविश्व के स्त्रा क्षेत्र के स्त्र के

१ इसर्ह्ये श्रेंग्रायायहेत्र कृषा नित्र मा श्रें रायहेत्र कृषा

क्रें राज्यस्य ने 'न्या'हेन्' ग्री अ'हे।। ने 'हेन् 'न्या'हे स्य श्रुव 'यदे।। क्रें अ'न्ये अ'युअ'न्य होन् 'य'न्या। श्चेत्रप्रस्ति । व्यविष्ण विष्ण विष

र्वेट्-र्-तन्द-अः वर्षाः प्रदे सेट-रे-र्षाः वी अः सेट-सवदः स्ट-र्टः ह्यायायद्धर्याययायार्हेर्यन्देष्टेर्यन्त्रीयाञ्चायत्रुत्र्यते ह्यान्ते प्रमा र्रे के अन्देश हे अन्दर्भ नहें न्यन्ता महिरायाय स्या मुख्या वर्द्यम् । व्यायायवेषाय। यत्र्यायात्रयावे। यक्ष्मायां व इस्रयः इटः चरः ग्रुः बेटा देः चबेदः दुः ग्ववदः के गः स्रदः ग्रेः स्वायः स्राः गर्देग्यः यः श्चरः नशुः नृदाः व्यवाः वर्षा वर्षे नः सुन्। नह्वः या वन्वाः श्चा नवाः श्चा क्र्या मिया क्रे.सेयशका स्याधारा स्था सामिता स्था सामिता स्था स्था सामिता स्था सामिता ग्रीभार्शे सिंदायदेव संदे रहेवा सुर्से वा या प्रमुद्दा है। दे दवा वी वी देवा दर <u> नियेन्द्रा में निर्ध्य शुक्ष दुः निवेष्ट्र निर्देश में निवेद्र में निवेद्र में निवेद्र में निवेद्र में निवेद</u> इवासराम्या । यदीराञ्चासम्बन्धाने वासे दिवाने म्हण्यास सक्ष्रिया प्रमानिता में नदे गहिरागायार्गे दर्गेया अन्तिमा श्रेरासहेरासहेरा प्राचिता यथ। श्रुनःमः न्दा वेशः वेषाय्यायः स्वापः स्

वरःयोशेशःग्रीःवह्याःर्ख्याःयशः इसः नृत्रीःयारः वह्याः नश्नरः ध

दे 'द्या'द्या'श्रेश्या प्रदेश प्रद्या श्री स्वतः श्रु र 'द्या'श्रदे श्री र 'द्या'श्रित स्वतः श्री र 'द्या'श्री र 'प्रदेश से प्रदेश से प

ने त्या क्रम्य निवास क्ष्या क

सहरक्षित्राचान्यरक्षित्रचित्रम् विश्वास्त्रच्याच्याः स्ट्रियाः स्ट्रियः स्ट्रियाः स्ट्रियः स्ट्रियाः स्ट्रियः स्ट्

इत्यी वट यो शेश याट वह्या यन्तर या

ग्वितः परा श्रेरः स्रम्रशः स्वाः भ्रुतः ग्रीः दरः ग्रोश्राः स्राः मेः न्याः ग्रारः न्दान्द्रित्याने सया के नाने ना केटाने दे समय मुरक्षिया के ना नि द्याः अत्यः चत्रुशः द्रशः ह्या शः यः स्वः द्वः च द्रशः द्वेशः द्वेशः द्वेशः द्वेशः द्वेशः वे भ्रे के ना या अ के अ प्रमान हें ना यहें ना के अ की अ व गुना प्रयह पें ना प्रमा नश्रव है। नमेर वा वरे वे जररें। वरे वे खेंदी । क्षे च नरा के वा श्र है वे नश्रव देव पर न उव से या से निव हु द्वाया या सा पर निव हु द्वाया श्रव नडर्भामदे विभासे इसर्भानित कुर्ना विराहित विराहित स्तर किया स्तर दर्भा श्चरायश्वित हुन्याय वेशायायश्चर्याया थुन्य ने प्रवित नुक्षिया ने प्रवित नुक्षिया ने प्रवित नुक्षिया ने प्रवित न र्वेट देवा वी नश्रूव देव प्रदाय प्रशासी साम स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्वाप्त स्व षर दर्शे अ शुर्व पाव अ शु भ हे र हैं अ वि अ स से मु त्रे पपर मी हु अ पाव अ गुदे दर्गे अ शुर्र न न सूर्य परिष् । श्रिट किंग मी क्रा ग्राट्य मार्ग मार्थ मा नर्गेर्प्याया नथूनर्यान्भूर्ग्री केंगा धेर् सेर्पेर्प्या स्थान्य ग्रैश्वार्येत्र श्री त्रिश्वार्ये । विश्वार्ये । विश्वार्येत्र श्री । विश्वार्ये । विश्वर्ये । विश्वयं । विश्वर्ये । विश्वयं । विश्वर्ये । वि

देन्विद्रः शुर्या द्वान्य स्वर्या स्वयं स

न इः पडिमाम। हे अः यह मास्य अः निर्मे अः यः उतिः श्रे रः यह माः या

केते में र पहुण पर हो र के का। धे मोते में र क्या से र पहुर हो। क्षेत्राची शर्ति द्वा स्था स्थित स्था। क्षेत्राची शर्ति द्वा स्था स्थित स्था स्था

ग नर्रेशःग्रेःनेत्

हेशत्र्वाची थे ने दे ह्र स्थाप्त के स्थाप के स्

प अवदः न्धुन् भा

भूनर्यादिन्रः सुरिवा सेट सहे यायय। वृत्ययार्वे न भून सुर स्वा

त्यह्रप्य द्वरक्षे येवाय वेयाय विष्य विष्य दे दे विष्य स्था वेद स्ट वी अन् ग्रीन्नरन् गुरुष्ता वार्षेत्र वार्षा क्षेत्र भी अन्तर् धुवासी मह नवित्रस्य भूता बुर् क्या गी भूता १ विदे भूत ते नवि या स्ट दे विश र्थे व त्रेंत्रःस्राप्तरःपत्रेःपाशुरःश्चेंत्राययायतुरःरें। ।देःवःतेंदःश्चदःश्चेःद्वरःर्ः चुर्यासदे खेनार्या शुरु स्त्री भूत है। धेना भूत त्र म्य शुरु पदे पट स्तर् क्रिंद्रायादवेषायात्रव्याच्चे स्त्रेद्राव्याचेद्राञ्चवयाचे स्त्रद्रायाः ઌ૾ૢૼૼૼૼૼૼૼૼૼઌૢૹ૽૽ૹ૽૽ૺૡઌૹૢ૽૱ૡ૱ૺૹઌ૽૽૱૽૽ૼૼૢઌૢૹઌૹ૱૱૽૽ૢ૽૽૽ૹ૽૽૱૱૱૱ૢ૱ र्बेट्-५:श्रें न्-प्रते भून ने पुष्प के न्या निवासी मून्नि । भूने प्राप्त भूने । उन्ने त्या उन्ने क्रूंट में त्या वार्वेट में त्रु वाया वार्वा स्वा वाया वाया श्वेत्याश्वेत श्वयाया उता क्षाताते । ब्रम्यानी अताता श्वापार्य विताया ठना नी अ देन अ दे र वेंद्र प्रमान्य प्रके विद्र भ्रद्र ग्रुट वेंद्र भ्रद्र प्रेय प्रमा क्रेंबर, वाराम्य क्रिया के वार्ष क्रिया के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स्वार्थ के स नक्ष्यार्थितार्वे । द्रियेरात् अद्भार्यम् अस्य विषया वर्षे यात्रात्र व्याप्त वर्ष व्ययः पृ: शुरुरः सदेः स्ट दिवा शा शीः धुवा शुवा या या र से द से व व द में व सर्केनामशुरमा नेन् भून नेश्व न्त्रीं व सर्केनामशुरमा विशन्नेन् ने नवे। मान्ये पान्ने पान्ये पान्य प्रत्ये पान्य प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प्रत्ये प मःशुःववदःदेःवद्वदेःभ्रदःदेग्रयःविदेःद्देशःश्रयःदेदःश्रवःशुःद्येःवः इरःॲंदःयःधेदःर्दे॥

यदिन स्वेग्रा श्रुम प्रति श्रुम स्वेग्रा श्रुम स्वेग्रा स्वेग्र स्वेग्रा स्वेग्रा स्वेग्रा स्वेग्रा स्वेग्रा स्वेग्रा स्वेग्रा स

विश्वाश्वाद्दश्यात्र्यः स्वाद्द्र्यः स्वितः स्वितः स्वितः स्वाद्द्र्यः स्वाद्द्रः स्

याह्यस्य निक्षात्य स्वाद्य स्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य स्वाद्य

र्केन्यान्यावस्थायान्याः वेन्यायान्याः विष्यान्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विष्याः विषयाः विषयः ग्रे सु ५८ सु वर्षा उँ या यथा यह वा या सुट दें। । भू नह्रुव ५८ ८ या नर्से या नशायस्यार्दिर वेरान शेष्वर दे। भुगम्ब्रम वेशाम भुग्लंन धोनाया दे वर्गेन्कुः सेन्यम् नमावस्य देन्ति मार्थे व्यन्ते वार्थे वार्थे विन यशन्त्रश्यायेग्रायः इतः इति । रैग्राराञ्चे पान्यपद्यवाये दाराये दुराये। क्वे वियायाया क्वे र्वे स्वाया स्वाया मावर या यह मा मारे ही मारे । विष्या मारे । विष्या सके । के या यह न ॻॖ॓॓**ढ़ॱॸॖॱॸॾॣ॓ॸॱॻऻढ़ॆॺॱॸॕढ़ॱॿॱॸॸॱॵढ़ॱय़ॺॱॵॱ**ॻ॓ॱॴॸॱॻऻॾॻऻॱॸॖॱॸॾ॓ॱॻऻॱ यान्वर्परम्भेगायर्गेर्थानो नासुयायदाळर्नन्ययायदे छे देव छेवः शूर्य-१९७७ वे या पार त्यर पर से से स्था भी से क्र हें वाय सक्ष्यय <u> ५८.६.२५४.योपेष.२.१६४.मी.सबर.१४१.५८.मूच.१४१.पेपे.</u> कः अः र्वेत् रविः क्षेताः स्रे। स्रे रक्ष्यः हिता या अक्षय या धेतः क्ष्यः विदः ताः विया वि यार्चेन कें क्ष्राह्में ग्रायदे समय दाह्में ग्रायदे ग्

क्रमान्ति। विश्व स्थानित्व स्थानित्य स्थानित्

न इःगहेशःम। धेःगेदेःदह्नाःमः श्रेदेः दर्गेशःम।

र्शेषि की को ने से दान का निस्त के का निस

ग नर्स्यःग्रेःन्त्र

पि समयः र शर्भा

वा श्रुवान्वा वो गो गो श्रॅ ग्राया विद्या विश्व विद्या वि

 मिन्न्या वेयावर्षा।

भिन्न्या वेयावर्षा।

भिन्न्या वेयावर्षा।

भिन्न्या वेयावर्षा।

भिन्न्या वेयावर्षा।

भिन्न्या वेयावर्षा।

द्वारम्भः क्रवामान्यतः हें हे ते स्वामान्य विद्यान्यान्य विद्यान्य विद्यान विद्यान्य विद्यान्य

दे निविद्या निविद्या

र्वेर्स्सर्केत्वा अन्तर्भन्यः विरस्धित्रः स्ट्रेन्हेन् स्त्रेन्स् र्ने प्राययान इस्र राष्ट्री साम्दार्थ साथ प्रिया विष्य विषय है। वरःस्टार्ने ख्राद्रा अवार्भेवाशाद्वरासेवे विस्रशः ह्वाद्या वा बुवाशः र्श्रेयाराध्यामी विषय स्थानी स विस्रश्नार्वे निकुत्तर्। सेवावी क्षेष्ट्रे सकेत्वर्थित् ग्री क्षेष्ट्रे सकेत्वर द्वा ८८। ग्राच्यायाची भ्रेष्ट्रे सकेट दया केंया ची भ्रेष्ट्रे सकेट प्रमान्त्रे भ्रेष्ट्रे सकेट नदुःगहिराग्रीरासर्वेदायदेःगर्राः नेपायरानसूदायदेः नेदासूदानुगः न्ता स्रमाग्री स्कूर्यान्त्रान्त्राक्षेत्राक्ष्याक्ष्यान्ता क्ष्रास्यान्ता यश्च मुद्र परे हैं मेग नर्द्र द्रा अर्दे पा में र देंग यश न्तर परे श्रेश्रश्चिराष्ट्राच्युःश्चित्रायादाद्वदायादाधित्रायात्रीः लेश्वायाद्वदा। व्यवः अवदे: द्वर मे अ: विवा पदे मिले खा अद्यु अ: तुदे: क्वा मिला मी: द्वे : वः বর্যানের মার্থের মার্মার শ্রান্তর প্রবার্ প্রার্থির প্রবার্থির পর্বার্থির পর্বার পর্বার্থির পর্বার্থির পর্বার্থির পর্বার পর্বার পর্বার্থ পর্বার্থির পর্বার পর্বার পর্বার্থ পর্বার্থ পর্বার পর্বার পর্বার্থ পর্বার

त्रियाययः यात्राची स्थाने स्थितः स्थितः स्थितः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान्यः

मून् ह्री स्म्राह्म अळव ने न्या मे ही राव ह्री या न्या हिता से स्म्राह्म स्मर्थ हिता स्मर्थ स्मर्य स्मर्थ स्मर्थ स्मर्थ स्मर्थ स्मर्थ स्मर्थ स्मर्थ स्मर्थ स्मर्थ

नुःक्षेरःविःकेतःक्षेःनवरःनसूत्रःयःन्नक्ष्यःग्रेःबुग्यःयःननयःयरः ग्राम्या स्ति हैं देर नदे सुय ह्या य त्वो य न सुव त्ये हैं सुव य य हुते दर्रोय न सु हे गार्रेट सहे या ग्री भ्रम्म या सक्यया सृ श्री वसया उट है। कुषान्तराष्ट्राचदे विषार्श्वेच इसान्नेदाचदे शुस्राह्मासादमेषाचाषा केदा याहेर-रक्षेयाश-स्वायी-र्याया-सःसहर-सःस्याद-विवा-स्वायःसरः यवसान्वीरसान्वायार्धसान्या नेःविष्ठसाने खुवावसूनावान्वीःगानः शुः वःकुःळःकुःवरः धरः भेवःवयः भ्रुयः यः श्रेंग्यायः वर्गा छेरः। विः र्वे यादे ररः ग्वन् ग्री स्वाराया प्राप्ता मुन् ग्रुरा ग्रुरा स्वारा स्व गल्रामी प्रमेरिका प्रदेश क्रुन क्रुन्य प्रदासी स्पर क्रिका स्टा खुना का ग्री मार्च का र्वेर-द्याधियाः वः अर्हेयाः वीः व्यव्यादियावाः सुःद्यूर-रे विंदः धेदः वें। वेशन्तन्त्राचे क्रेंग् वुर्वेर्गम् वर्षाये गात्र स्रे न्या व्या स्रे न्या व्या स्रे नुदे हे अ शु वज्र सूर्य पदे गुर ह्वें र प्य सूर्य नु य के अ व पर सूर्य मे अ यक्टरमरःस्याधेःश्चेत्रयादिःश्चःशेःद्वेत्रार्थे॥

दे 'य'हे 'भूत'र्ड्। श्चे 'येश्व' त्रें स्व 'स्व 'भूय' स्व अं या विंव 'वु 'र्कें ना। श्चर 'यव 'व्य 'स्व 'स्व 'स्व 'येश 'युव' श्चें र 'यो या। श्चे 'येह्य' प्रह् स्व 'यूव' स्व 'येश 'युव' श्चें या। श्चे 'यह 'युव' स्व 'युव' स्

र्देव मुंब सावश मंदे हु से द लेग्न र न न द ला। गर्भरायानश्चेग्रयाचडन्यहर्म्यते द्रोदि । विद्या यविश्वास्त्र नम्यान् स्त्रान्य व्यायाः स्वायाः स्वायाः ने अन्यदेर पर रहा है या खेंचा या केंद्र ग्रेया। वनायाः श्रेनाः भूनः वर्धेनः चुरुः वियानानः भूनः पानः।। र्देन पाने र स्व राये हैं हैं राष्ट्र राये रेरा हे ब्रुदे दें ५ ग्री अ के अ ५ ग्राम के विश्व म मा बेश गुःनदे केंग्रास्य सुः नडन पायने 'नग'मे स'ने सासे न पदे 'ग्रान' र्सेट्सेन्सेर्र्ज्यकेंद्रस्य स्था वर्ते मः श्रुकाः ग गाः बेटः न् ग्रुट्याधियाः श्रान्विदे ग्रुट्याः स्वाग्रीया। पि.यपु.र्जूट्यायदेषु.व.र्थंट.श्रट्यं क्याया गा-नियार्चे रासेटा कु स्र कें स्र कें त्र स्र स्रो ८.र्रे.पर्येया.श्रेषु.२ घटशाला.पर्येय.पर्ट. शक्र्या उर्डे तर्वद् यह अर्वे द्राये प्रकेश म्राव्य क्र-१४: धेर्म अ: ह्री या या दे कि या त्री ता तरी।

ह् वि. य पेट. यश्र अ. विश्व श्र योश् रेट. क्षेत्रा

क्रिसं दिव्या या दिवें या प्राप्त के विकास व हु:रेवे:इस्राय्युवा:युव:न्दार्गेद:हैं:दुर्गा वःसवःशुर्भःगुरःवज्ञ्वनःतुःसे नतुनःम।। र्यार्वेर्वेद्रः भेरते श्राम्याशः स्वीतः द्रियादेशा वृ ना र द्रेश थेया न इगश न हत य स्व।। यः अरु अः क्षेत्रः प्रात्रः स्त्रुतः प्रांदेः प्रस्ते : के।। य अवत अे ५ 'रादे '५ ही ८ अ 'शु 'रा श्रु ५ 'रा त्या नःशुःयदःविदःगर्थेःथुवःनश्र्वाशःपवेःन्जुदश्य अ'धुर'अर्वेत्'त्रुअ'र्द्धेन्य भ'र्गे 'नह्त्'रा'वर्द्धेन्। र्ड हिर ग्राम्य थ्रव क्रिव गावय श्रुव व्याप ध्रिम। क्र-स्वरूप्त्रिद्र्यःशुःद्युर्द्राचेत्रः व्याचिषाः व।। इं प्यते नसूत त्य (व्यास प्रते क्त्र से प्यटा। सःश्रां अर्केट होट इवा ग्री शारी जाट नेवा वःल्यान्ध्रमःविषाविषाविषान्ते स्राम्यान्ध्रम्यःविम्।। बन्तिहर्स्यमी निर्मास्य स्वाराधना वःडमार्झे तदे रेगाम्ब्र सुरिगार्थे ।।। धासळ्यावर् निया श्रेयाया शुः शे स्र शा ररेदेरेर्भेत्राच्याय्याच्याच्याच्याच्या

यायित्रविद्धित्रायाः कुषायाः न्याताः सूत्राद्या न्त्रं न्येत्यः सूर्यः सूर्यः न्येतः न्याः ग्रह्या यायेरहेंगयासूराधेवाग्रीमानवार्यसेवा। ५७८८ कु अ अव में अदि द्या के या यी आ ष्यः केत्रः धी मोदी सकें मा शुर्मा मान्त्र प्रमेन सामान्त्र। शुयाह्यायायमार्थेन् हेन् हेन् हेन् हेन् हेन् यो या। र्हेर्याम्ये सुन् केन्द्रम्यान्या वर्षेन्या डेश'ग्राटश'ठव'र्नेर्'ग्री'गर्हार्श्वेर'पदे'ग्रस्व'गर्डेश'सुस'दु'गर्द ह्याश्वरह्यायी इस्रायावया कु केरान १८ रा विदासे देखा सुर विश्वरा न वर्ने है। के निवाबन्य दुर वहेग्य सेन सेग्य से हें हैं से स्यस्थेर ग्वितःरगः र्वरः र्वरुषः भ्वः रेगः यदे वर्रे रः वर्षे वेशः वर्वे रः यशः रेशः शुःसः नडदः प्रदेः क्वें नार्ययः देवः नाहेरः दरः ध्वः यः इस्र सः यः नार्यः उवः क्वें तवे नहार्रेन ने ना पायने या अपन्य में अपने अपर्टेन उस विना से अपने उद्या र् सुयान है। रमकुयानम् नुराम्बुयाम् सुयाम् देवामुन से सामा स्राम्य स्राम्य वी खेंदि(१६२६) ८ ह्यू र ही र्स शु हैं या पदे यर्वे पहुंचाय द्या ये दे प्वारे क्रॅंबरग्री:सह्या:ळ:य:येग्रस्य-प्रस्थराग्रुव:पदे:द्यो:वर्शःदेया:पदे: गल्राख्यायाची इत्यर्चूराया सुसा दुः या द्राया या स्वाया विदे हिन् छै। वर्षेत्रःवराद्रमःविदःक्रुराधरःकुरःहेगा॥